पुनर्जन्म मीमांसा

लेखक—

प्रो० नन्दलाल खन्ना एम० ए०

प्रोफेसर पाश्चात्य-दर्शनशास्त्र, गुरुकुल विश्वविद्यालय

काङ्गड़ी (सहारनपुर)

प्रकाशक—

शारदा मन्दिर लिमिटेड,

नई सड़क, देहली।
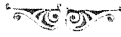
पहली बार] [मूल्य दो रुपया

माता के चरणों में—

LIST OF BOOKS CONSULTED BY THE AUTHOR.

1. Principles of Psychology. 2 vols. by W. Jamse,
2. Human Personality 2 vols. by Myers.
3. Mystery of Death 3 vols. by C. Flammarion.
4. Reincarnation by E. D. Walker.
5. Reincarnation by W. W. Atkinson.
6. Reincarnation by Pascal.
7. Reincarnation by Papus.
8. Human Immortality by Mcttaggart.
9. Pre-existence & Reincarnation by W. Lutoslawske.
10. Metempsychosis by G. F. Moore.
11. Recurring Earth Lives, How and Why, by F. M. Willis.
12. Reincarnation by Annie Besant.
13. Reincarnation by I. S Cooper.
14. Reincarnation by G. H. Whyte.
15. Reincarnation by J. A Anderson.
16. Three Essays on Haeckel and Karma. by R. Sterner.
17. The Idea of Immortality by Pringle Pattison.
18. Human Immortality by W. James.
19. The World of Souls by W Latoslawske.

विषयानुक्रम

चौथा अध्याय

पुनर्जन्म के प्रमाण (२)

पांचवां अध्याय

पुनर्जन्म पर आक्षेप और उनका समाधान (१)

छठा अध्याय

पुनर्जन्म पर आक्षेप और उनका समाधान (२)

सातवां अध्याय

पुनर्जन्म पर आक्षेप और उनका समाधान (३)

ग्यारहवां अध्याय

पुनर्जन्म और आधुनिक पाश्चात्य संसार

बारहवां अध्याय

आत्माका पशु पक्षियोंके शरीमें जाना (आवागमन) (१)

तेरहवां अध्याय

आत्माका पशु पक्षियोंके शरीरमें जाना

(आवागमन) (२)

उपसंहार

प्राक्कथन

पुनर्जन्म एक बहुत मनोरञ्जक विषय है। इसके सम्बन्धमें बहुतसे लोगोंको परिचय प्राप्त करनेकी इच्छा होती है। अंग्रेजीमें तो आजकल इस विषय पर अनेक पुस्तक उपलब्ध हो सकती हैं। परन्तु हिन्दी और उर्दूमें मुश्किलसे ही शायद कोई पुस्तक मिल सके। इसी कमीको दृष्टिमें रखते हुए यह प्रयत्न किया गया है। पुनर्जन्म पर इस पुस्तकमें दार्शनिक रीतिसे बवेचना की गई है, लेकिन साथ साथ इस बातपर विशेषरूपसे ध्यान दिया गया है कि जो कुछभी लिखा जाए उसे जनसाधारण भलीभाँति समझ सकें। इसलिये यह पुस्तक न केवल दार्शनिकों के अभिप्रायको सिद्ध करती है, परन्तु वे लोगभी इसे बड़ी सरलतासे पढ़ और समझ सकते हैं जिन्हें दर्शनशास्त्र का बिशेष ज्ञान नहीं। मुझे पूर्ण आशा है कि संस्कृत और अंग्रेज़ी जानने वाले सज्जनोंके लिये भी यह छोटीसी पुस्तक न केवल मनोरञ्जनका विषयही होगी, बल्कि उन्हें इसमें कुछ नई बातें भी अवश्य मिलेंगी। इस पुस्तकमें पुनर्जन्म पर धार्मिक दृष्टिकोणसे नहीं, प्रत्युत दार्शनिक दृष्टिकोणसे लिखनेकी कोशिश की गई है। धर्मसम्बन्धी वादविवाद इस पुस्तकका उद्देश्य नहीं, और मुझे दुःख होगा यदि यह अनजानेमें भी किसीके धार्मिक विचारोंको ठेस पहुँचाए।

पुनर्जन्मसे सम्बद्ध कुछ समस्यायें हैं, जिनका मैंने इस पुस्तक में उल्लेख नहीं किया। उदाहरणके लिये यह, कि एक जन्म और दूसरे जन्मके बीचमें अन्तर होता है या नहीं ? और अगर होता है तो कितना ? इनके बारेमें मौन रहने का कारण यह है कि मुझे मालूम होता है कि प्रामाणिक घटनाओं और युक्तियोंके आधार पर इनके सम्बन्धमें कुछ नहीं कहा जा सकता। योगी और आध्यात्मिक उन्नतिके शिखरपर चढ़े हुए व्यक्ति अपने आन्तरिक अनुभव या योगदृष्टिके आधार पर ही इन समस्याओंके विषयमें प्रामाणिकता के साथ कुछ कह सकते हैं। लेकिन इस पुस्तकमें प्रामाणिक घटनाओं और युक्तियोंकी सहायतासे ही विचार करनेका प्रयत्न किया गया है, इसलिये इस प्रकारकी समस्यायें इस पुस्तककी सीमासे बाहर हैं। श्रीमती ऐनीबेसैण्ट का विचार है कि कई आत्माएं पन्द्रह सौ वर्ष बाद जन्म लेती हैं, इसका प्रमाण वह यह देती हैं कि आजकलके अंग्रेज़ लोग वैसे ही हैं जैसे पुराने रोमन लोग। इसलिये पुराने रोमन लोगोंकी आत्माओंने आजकल इंग्लैंड में जन्म लिया है। इस समयको पन्द्रह सौ साल गुज़र चुके हैं, इसलिये दो जन्मोंके बीचका अन्तर पन्द्रहसौ साल हुए। यह युक्ति ठीक नहीं प्रतीत होती क्योंकि अन्य कई थियासोफिस्टभी सब प्रकारके लोगोंके लिये दो जन्मोंका अन्तर पन्द्रहसौ वर्ष नहीं मानते बल्कि बहुत हालतोंमें इससे बहुत कम या अधिक मानते हैं, जैसे कई लोगोंके लिये हज़ारों वर्ष और कइयोंके लिये कुछही वर्ष। ऐसा माननेमें क्या प्रमाण है ? दूसरा आक्षेप यह है कि एक दो उदाह-

रणोंसे एक व्यापक नियम बनालेना ठीक नहीं मालूम होता। तीसरा आक्षेप यह है कि इस बातमें क्या प्रमाण है कि इन पन्द्रह सौ वर्षों के दौरान में इन आत्माओंने जन्म नहीं लिया ? अगर इस पन्द्रहसौ वर्षके अन्तरमें इतिहास के किसी कालकी रोमन कालसे समानता नहीं तो सम्भव है कि उन आत्माओंने वैयक्तिक रूपसे पहले कभी जन्म लिया हो और सामूहिक रूपसे इस समय जन्म लिया हो।

मृत्युके पश्चात् मनुष्यका कौनसा अंश शेष रहता है,जो विविध जन्मोंमें घूमता है, इस प्रश्नपर बहुतसा मतभेद है। उदाहरणके लिए भारतवर्षके दर्शनोंको ही लीजिये। सांख्य दर्शनके अनुसार आत्माके साथ सूक्ष्म शरीरभी शेष रहता है और संस्कार आदिका सम्बन्ध आत्माके साथ न होकर सूक्ष्मशरीरके साथ होता है। तथा सूक्ष्म शरीरके साथ आत्मा विविध जन्मोंमें जाती है। न्याय दर्शनके अनुसार मन और आत्मा विविध जन्मोंमें जाते हैं, और संस्कार मनपर ही होते हैं। योगदर्शन के अनुसार केवल आत्मा ही विविध जन्मोंमें जाती है और संस्कार आत्मा पर ही होते हैं। आधुनिक कालकी थियोसोफी मृत्युके अनन्तर आत्माके साथ एक विशेष प्रकारके शरीर (Astral Body etc.) की सत्ता स्वीकार करती है, और आज-कलके कई पाश्चात्य लेखक यह मानते हैं कि अकेली आत्माही विविध जन्मोंमें घूमती है, किसी जन्मके कार्योंके संस्कारभी आत्मा पर ही होते हैं। इस प्रकारके मतभेदके होते हुए भी पुनर्जन्मके

माननेवाले इस बात पर एकमत प्रतीत होते हैं कि मनुष्य वास्तव में आत्मा है, आत्माकी सत्ता मृत्युके बादभी रहती है, आत्मा अनेक जन्म ग्रहण करती है और उसके साथ संस्कार जाते हैं। मतभेद इस विषयमें है कि आत्माके साथ कोई विशेष चीज़ जाती है या नहीं, अगर जाती है तो क्या जाती है और संस्कार किसमें रहते हैं। मैंने इस पुस्तकमें केवल वही बात लिखी है जिसपर सब एकमत मालूम होते हैं, अर्थात आत्मा विविध जन्मोंमें जाती है और संस्कार उसके साथ जाते हैं क्योंकि अपने आपमें यह प्रश्न चाहे कितना भी आवश्यक क्यों न हो, परन्तु पुनर्जन्मके सिद्धान्त के लिये इस प्रश्नका कुछभी महत्त्व नहीं प्रतीत होता कि आत्माके साथ क्या जाता है और संस्कार किसमें होते हैं। इस प्रश्नके विषयमें प्रत्येक मनुष्य अपने सिद्धान्तको मान सकता है और पुनर्जन्मके सम्बन्धमें जितनीभी बातें इस पुस्तकमें कही गई हैं, उनमेंसे कोई भी उसके सिद्धान्तके प्रतिकूल नहीं होगी। उदाहरण के लिये जहां कहा गया है कि आत्मा किसी जन्मके संस्कार लेकर नये जन्ममें जाती है वहां न्यायदर्शनका माननेवाला यह समझ सकता है कि आत्माके साथ मनभी होता है और मनके साथ संस्कारों का सम्बन्ध होता है। वह यह अनुभव करेगा कि इस पुस्तक की विवेचना उसके सिद्धान्तके प्रतिकूल नहीं है, अपितु स्वाभाविकरूपसे उसके सिद्धान्तके साथ जुड़ सकती है।

इस पुस्तकमें पुनर्जन्मके पक्षमें कई प्रकारकी घटनाएं और युक्तियाँ पेशकी गई हैं, सम्भव है उनमेंसे एक-एकमें बहुत बल न

हो, लेकिन सबको मिलानेसे एक पर्याप्त प्रबल प्रमाण अवश्य बन जायगा। सूतका एक तार कमज़ोर हो सकता है परन्तु बहुतसे तारोंसे मिलकर एक मज़बूत रस्सा बन जाता है। जैसे रस्सेका बल धागोंके मिलनेसे उत्पन्न होता है, और किसी एक धागेके टूटनेसे रस्सा नहीं टूटता, इसी तरह पुनर्जन्मका सिद्धान्त सामूहिक रूपसे सब प्रमाणों और युक्तियों पर आश्रित है, किसी एक प्रमाण या युक्तिके खण्डित होनेसे यह खण्डित नहीं हो सकता।

गुरुकुल काङ्गड़ी,
५ दिसम्बर १९३६

——नन्दलाल खन्ना

———
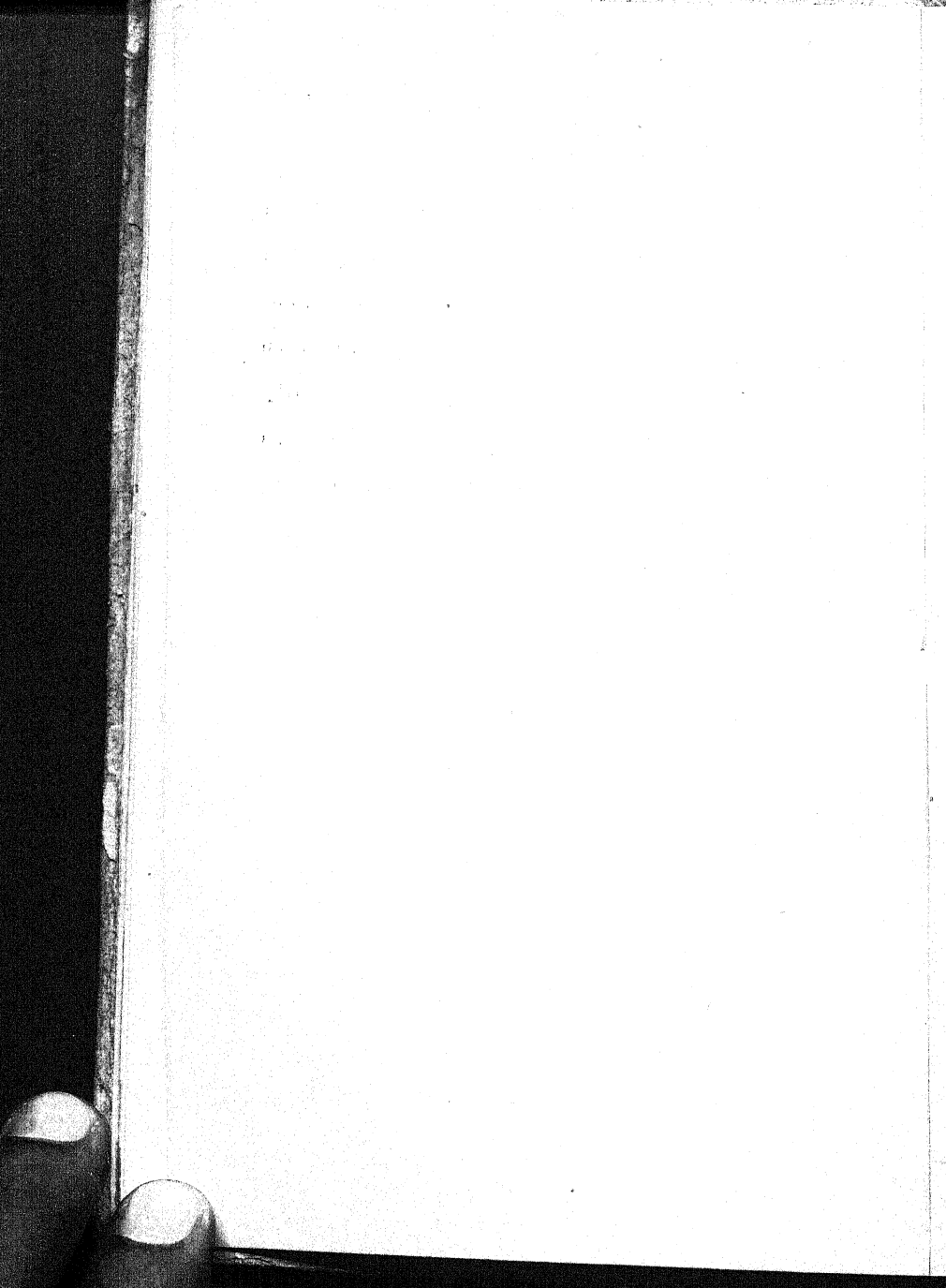
पहिला अध्याय

पुनर्जन्म क्या है ?

मनुष्य क्या है ? कहांसे आया है ? और किधर जायगा ? क्या इस जीवनके साथ ही उसका आरम्भ हुआ है ? अथवा इससे पूर्व भी उसका अस्तित्व था ? तो कहां और किस रूपमें ? क्या मृत्यु ही मनुष्य जीवनका अन्तिम परिणाम है ? यदि नहीं तो मृत्युके बाद उसकी क्या अवस्था होगी ? ये प्रश्न हैं जिन पर मनुष्य हमेशासे सोचता आया है, जो प्रत्येक साधारण बुद्धि वाले आदमीके दिलमें भी पैदा होते हैं। इन प्रश्नोंका समाधान करनेकी मनुष्यमें एक विश्वव्यापक और दृढ़ आकांक्षा है-जिसके पूरा होनेके बिना उसके दिलमें एक विशेष प्रकारकी बेचैनी और कई अवस्थाओंमें दुःख और गहरी वेदना होती है। पुनर्जन्म का सिद्धान्त इन सब प्रश्नों का एक ऐसा हल है जो पुराने ज़मानेमें सम्पूर्ण सभ्य जगत् को पसन्द था और अब भी दुनियांके दो तिहाई आदमी इसे स्वीकार करते हैं।

पुनर्जन्मके अनुसार मनुष्य वास्तवमें आत्मा है, शरीर केवल आवरणमात्र है। इस जीवनके साथ आत्माकी सत्ता का आरम्भ नहीं हुआ, न ही मृत्युके साथ इसकी समाप्ति होगी। इस जीवनसे पहले

आत्मा असंख्य जन्मोंमेंसे गुज़र चुका है और मृत्युके बाद भी बार-बार जन्म लेता रहेगा, जब तक कि वह पूर्ण उन्नति करके मोक्ष प्राप्त न कर ले। जन्मोंकी इस शृङ्खलामें आवश्यक नहीं कि आत्मा सदा उन्नति ही करता जाए, परन्तु यह भी सम्भव है कि वह पतन की ओर प्रवृत्त हो जाय और फिर कभी उन्नतिके मार्गका अवलम्बन करे। उन्नति या अवनति आत्माके कर्मोंपर आश्रित है। सत्कर्म और ज्ञानसे उन्नति, तथा पाप-कर्म और अज्ञानसे इसकी अवनति होती है।

प्रत्येक नये जन्मके आरम्भमें आत्माको अपना पिछला जन्म भूल जाता है, यद्यपि कुछ लोगोंको पिछले जन्मकी घटनाएं याद भी रह जाती हैं। भूल जानेका यह अभिप्राय नहीं कि पूर्व-जन्मका अनुभव और ज्ञान व्यर्थ हो जाता है परन्तु वास्तवमें ज्ञान और अनुभव वर्तमान जीवन के संस्कारों (Sub-conscious tendencies) में परिणत हो जाते हैं। इन संस्कारोंको लेकर आत्माका नए जीवनमें प्रवेश होता है। इसलिये किसी जीवनकी जन्मकी रुचियां, प्रवृत्तियां और योग्यताएँ पिछले जन्मके संस्कारोंका परिणाम हैं। कहनेका मतलब यह है कि आत्मा नया जन्म लेते समय एक साफ़ काग़ज़की तरह नहीं होता किन्तु एक ऐसे काग़ज़की तरह जिसपर अक्षरोंके निशान हों। जन्मसे आई हुई प्रवृत्तियों और विशेषताओंका आगामी जन्मके कार्योंपर असर होता है, परन्तु कोशिश करनेसे इसे बदला भी जा सकता है।

आत्माके कर्मोंका फल उसे उसी जन्ममें या अगले जन्मोंमें मिलता है। कर्म-फल इस रूपमें होता है कि आत्मापर अच्छे या बुरे संस्कार

पड़ जाते हैं। अच्छे संस्कारोंके कारण उसकी अच्छी कामनाएँ होती हैं, जिनका परिणाम सुख होता है। बुरे संस्कारोंके कारण बुरी कामनाएँ पैदा होती हैं जिनका परिणाम दुःख होता है। कर्म-फलका दूसरा रूप यह होता है कि जीवनकी परिस्थितियां अर्थात् माँ-बाप, अमीरी-ग़रीबी, तन्दुरुस्ती-बीमारी, सौभाग्य-दौर्भाग्य, आयु, जलवायु आदि--आदि सब कर्मोंके अनुसार होते हैं। कई लोग जन्मसे ही भाग्यवान् हैं तो कई अभागे भी हैं। इस विषमतामें किसी प्रकारका अन्याय नहीं है, बल्कि प्रत्येककी हालत उसके पिछले जन्मके कर्मोंका स्वाभाविक परिणाम है। प्राकृतिक नियमोंसे आकृष्ट होकर प्रत्येक आत्मा ऐसे माँ बाप के यहां और ऐसी हालतोंमें जन्म लेती है जो ठीक उसके अनुसार हों, जहां उसे पिछले जन्मके कर्मोंका उचित फल मिल सके। पिछले कर्मोंका फल भोगनेमें आत्मा स्वतन्त्र नहीं। अर्थात् यह उसके अधिकारमें नहीं कि कर्म फलका भोग करे या न करे। परन्तु इस पराधीनताके होते हुए भी कर्म करनेमें आत्मा स्वतन्त्र है और कर्म-फलको बदल कर घटा बढ़ा भी सकती है। उदाहरणार्थ पिछले जन्मके कर्मोंके कारण निर्धन मनुष्य इस जन्ममें प्रयत्न करके धनवान् बन सकता है। इसलिये किसी जन्ममें मनुष्यकी हालत उसके पूर्व-जन्मके कर्मों और वर्तमान जीवनके प्रयत्नोंका सामूहिक परिणाम है।

संसारमें कहीं भी अनुचित पक्षपात नहीं, प्रत्युत पूरा न्याय हो रहा है। प्रत्येक मनुष्यको समान अवसर प्राप्त है। इस जन्ममें जो अपने दुष्कर्म और आलस्यके होते हुए भी अमीरीके मज़े ले रहा है, वह अगले जन्ममें ग़रीबी और मुसीबतका बीज बो रहा है। इस जन्ममें

जो सत्कर्म करते हुए भी दुःख उठा रहा है वह अगले जन्ममें आनन्द और ऐश्वर्यके भवनकी आधारशिला रख रहा है। वॉकर (E. D. Walker) के शब्दोंमें इस जन्ममें उत्साह और साहसके साथ सहन किया हुआ दुःख किसी आगामी जन्ममें सन्तोष और धैर्य-का ख़ज़ाना पैदा कर सकता है, झेली हुई सख्तियां मज़बूत बनाएंगी, संयम संकल्प-शक्तिको बढ़ायेगा, इस जन्ममें बनाई हुई प्रवृत्तियां और प्राप्त की हुई शक्तियां अगले जन्मोंमें अपना असर दिखाएंगी। इस जीवनकी विशेषताएं पूर्व-जन्मोंके कर्मोंका परिणाम हैं। इस जीवनकी अचानक गहरी मित्रता पूर्व-जन्मकी मित्रता और प्रेमका परिणाम है और इसी तरह इस जीवनमें परस्पर प्रेम करने वाले व्यक्ति आशा कर सकते हैं कि किसी अगले जन्ममें प्रकृतिके किसी नियमसे आकृष्ट होकर वे आपसमें मिलेंगे और पारस्परिक प्रेमको बनाए रखेंगे और बढ़ा सकेंगे।

यदि आत्माके कर्म किसी जन्ममें बहुत बुरे हों या वह कई जन्मोंमें लगातार बुरे कर्म करता जाए तो वह बहुत गिरता जाता है, यहां तक कि फल भोगनेके लिये पशुओंके और बुरे कर्मोंकी परा-काष्ठा होनेपर वनस्पतियोंके शरीरोंमें जन्म लेना आरम्भ करता है, और इस प्रकारके जन्म लेता रहता है जब तक कि काफ़ी सज़ा न भुगत ले। सज़ा भुगत चुकनेपर अपने बचे हुए कर्मोंके अनुसार फिर मनुष्यके शरीरमें जन्म लेता है। यहां फिर अपने कर्मोंके अनुसार उन्नति और अवनतिके दरवाज़े उसके लिये समान-रूपसे खुले हुए हैं। परन्तु पशु क्योंकि कर्म करनेमें भी बहुत परतन्त्र है, इसलिए पशु-

शरीरमें किये हुए किसी दुष्कर्मके लिये आत्माको कोई नया दण्ड नहीं मिलता। पशुके शरीरमें आत्मा मनुष्य-शरीरमें किये हुए कर्मोंका फल भोगनेके लिये ही जाता है। अच्छा या बुरा फल केवल मनुष्य-शरीरमें किये हुए कर्मोंके आधारपर ही मिलता है। आज कलके कुछ पाश्चात्य लेखक आत्माका पशु शरीरमें जन्म लेना नहीं मानते, परन्तु प्राचीन और वर्त्तमान युगमें पुनर्जन्मके मानने वाले लोग प्रायः मानते रहे हैं कि आत्मा पशुओंके शरीरमें भी जन्म लेता है।

पुनर्जन्मका सिद्धान्त हज़ारों वर्ष पुराना है। विविध युगों और देशोंमें नाना धर्म और भिन्न-भिन्न प्रकारके दिमाग़के लोग इसे मानते आये हैं। ऐसी हालतमें स्वभावतः इस सिद्धान्तके कई आकार प्रकार हैं, जिनमें आपसमें इस तरहके भेद हैं जो इस सिद्धान्तकी दृष्टिसे अनावश्यक हैं। इसलिये हमने वे ही बातें लिखी हैं जो इस सिद्धान्त का आवश्यक अङ्ग प्रतीत होती हैं और जिन पर इस सिद्धान्त को मानने वाले एक मत मालूम होते हैं।

दूसरा अध्याय

प्राचीन कालमें पुनर्जन्मका सिद्धान्त

१—भारतवर्ष

पुनर्जन्म एक बहुत पुराना सिद्धान्त है, प्राचीन कालमें प्रायः सर्वत्र माना जाता था। संसारकी सबसे पुरानी पुस्तकें वेद इसकी शिक्षा देते हैं। मनु आदि स्मृतियोंमें इसका स्थान स्थान-पर उल्लेख है। छहों आस्तिक दर्शन शास्त्र इसे मानते हैं। इनमें-से कई तो इसे यहां तक सर्वसम्मत समझते हैं कि इसे प्रमाणित करना या इसपर विवाद करना उन्हें अनावश्यक प्रतीत होता है। बौद्ध और जैन दर्शन भी जिन्हें नास्तिक कहा जाता है, इस सिद्धान्त-को यथार्थ स्वीकार करते हैं। भारतवर्षमें प्रारम्भसे लेकर अब तक सब श्रेणियों और सब विचारोंके हिन्दू लोग इसे बे रोक-टोक मानते रहे हैं। हिन्दुओंमें यह न केवल एक दार्शनिक सिद्धान्त है, परन्तु प्रायः प्रत्येक व्यक्तिके जीवनका अङ्ग बना हुआ है। "आत्मा मरता नहीं जिस्मको चाहे मारो, काटती अस्ल हक़ीक़तको यह तलवार नहीं।" इसपर न सिर्फ़ हक़ीक़त राय बल्कि प्रत्येक हिन्दू विश्वास रखता है और इसके अनुकूल आचरण करता है।

प्रसिद्ध दार्शनिक पौरफिरी (Porphyry) जो ईस्वी सन्के प्रारम्भ-में हुआ था और जिसका सम्बन्ध सिकन्दरिया (Alexandria) के

दार्शनिक सम्प्रदायसे था, अपने समयके भारतवर्षके ब्राह्मणों और दिगम्बर साधुओंके बारेमें लिखता है कि, "ये लोग वस्त्र, सम्पत्ति तथा स्त्रियोंसे अलग रहते हैं, लोग इनका बड़ा मान करते हैं, यहां तक कि राजा भी इनसे प्रायः परामर्श करने जाता है, मृत्युके विषयमें इनके ऐसे विचार हैं कि वे जीवनको प्रकृतिकी अनिवार्य दासता समझते हैं और शीघ्र ही आत्माको शरीरके बन्धनसे स्वतन्त्र करना चाहते हैं। इनका स्वास्थ्य भले ही अच्छा हो और इन्हें किसी प्रकारका कष्ट भी न हो, लेकिन ये अपने हाथों ही शरीरको नष्ट कर डालते हैं, और अपना इस प्रकारका इरादा ये पहिलेसे उद्घोषित कर देते हैं, फिर भी इन्हें कोई नहीं रोकता, प्रत्युत सब इन्हें भाग्यवान् समझते हैं। आत्माके आगामी जीवनमें इन्हें इतना दृढ़ विश्वास है कि ये आगमें कूद पड़ते हैं, जिससे कि आत्मा शुद्ध रूपमें शरीरसे अलग हो जाए, और मन्त्र गाते हुए शान्त हो जाते हैं।" जब सिकन्दर भारतवर्षमें आया, तो उसने इन लोगोंको आगमें कूदते देखा। सतीकी प्रथा चाहे कितनी ही ग़लत और ख़राब थी परन्तु इसकी तहमें यह विश्वास काम करता था कि मृत्यु, जीवनका अन्त नहीं, बल्कि एक शरीरको छोड़ कर आत्माका दूसरे शरीरमें प्रवेश करना है।

२—मिस्र

पुराने मिस्रके लोग भी पुनर्जन्मको मानते थे यूनानका पुराना ऐतिहासिक हैरोडोटस (Herodotus) उनके सम्बन्धमें लिखता है, "सबसे पहले मिस्रके लोगोंने इस सिद्धान्तका प्रचार

किया कि मनुष्यकी आत्मा अमर है, जब किसीका शरीर नष्ट होता है तो आत्मा किसी और शरीरमें चली जाती है सब प्राणियोंके शरीरोंमेंसे गुज़र कर यह मनुष्यके शरीरमें आ जाती है। यह चक्कर तीन हज़ार वर्षमें पूरा होता है। मिस्रके लोग यह भी मानते थे कि जब तक मनुष्यका शरीर नष्ट न हो जाए तब तक मृत्युके बाद भी आत्माका इससे सम्बन्ध बना रहता है, इसलिए आत्माको किसी पशुके शरीरमें जानेसे रोकनेके लिये वे मृत-शरीरको एक विशेष प्रकारका मसाला लगाकर रख छोड़ते थे जिससे वह हज़ारों वर्षके बाद भी ख़राब न हो।" हैरोडोटसका यह खयाल ग़लत मालूम होता है कि पुनर्जन्मके सिद्धान्तका प्रचार पहिले पहल मिस्रके लोगोंने किया, क्योंकि वेद भी इसकी शिक्षा देते हैं, और यह सब मानते हैं कि वेद सबसे पुरानी किताबें हैं। हां, इसमें कोई सन्देह नहीं कि मिस्रके लोग भी इस सिद्धान्तको मानते थे।

३—फ़ारस और कैल्डिया

पुराने ज़मानेके पारसी और कैल्डियन पुरोहित जो गुप्त रहस्य-मय विद्याओंके पुराने ज्ञाता समझे जाते थे और मैजाई (Magi) नामसे विख्यात थे, यह मानते थे कि आत्माके कई अवयव होते हैं। मृत्युके पश्चात् कुछ अवयव नष्ट हो जाते हैं और कुछ शेष रहकर कई जीवनोंमेंसे गुज़रते हैं। उन्नतिकी अन्तिम अवस्थामें आत्मा ऐसा शुद्ध और पवित्र हो जाता है कि इसे किसी जन्ममें जानेकी आवश्यकता नहीं रहती और यह हमेशा अवर्णनीय आनन्दकी हालतमें रहता है। इस हालतमें आनेसे पहले यह अपने जन्मोंको देख सकता है; उनसे

ज्ञान और अनुभव प्राप्त कर सकता है, और इस ख़ज़ाने-मेंसे समकालीन तथा आगामी युगके लोगोंको लाभ पहुँचा सकता है ।

४—चीन

पुराने चीनमें भी पुनर्जन्म माना जाता था, यद्यपि यह रहस्य हरएकको नहीं बताया जाता था । केवल उन लोगों तक ही परिमित था जिन्होंने एक विशेष सीमा तक आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त करली हो । लाउट्ज़े पुनर्जन्मकी शिक्षा देता था और च्वाङ्ट्ज़े कहा करता था कि मृत्युका अभिप्राय एक नये जीवनको आरम्भ करना है । शुरूमें टॉइज़्म (Taoism) के अनुयायी भी मानते थे कि इस जन्मके अच्छे और बुरे कर्मोंका अगले जन्ममें फल मिलता है । कई चीनी दार्शनिक मानते थे कि आत्माके तीन अवयव होते हैं । पहला 'क्यूई' (Kuei) जो पेटमें रहता है और शरीरके साथ ही मर जाता है । दूसरा 'लिङ्ग' जिसका स्थान हृदय या छाती है जो मृत्युके बाद कुछ देर तक रहता है और फिर नष्ट हो जाता है । तीसरा 'ह्यून' जो मस्तिष्कमें रहता है और मृत्युके पश्चात् अगले जन्मोंमेंसे गुज़रता है ।

५—इंग्लैंण्ड, फ्रांस और आयर्लैंण्ड

पुराने ब्रिटेन में जिसे आजकल इंग्लैण्ड कहते हैं और पुराने गॉलमें जिसे आजकल फ्रांस कहते हैं, पुरोहितों या अध्यात्म विद्या जानने वालोंको 'ड्रूइड' (Druid) कहते थे । ये ड्रूइड लोग पुनर्जन्मको मानते थे । जूलियस सीज़र जो लगभग दो हज़ार बरस हुए पुराने रोमन राज्यका विजेता सेनापति और पहला सम्राट् था,

लिखता है कि, "गॉलके लोगोंका विश्वास है कि मृत्यु होनेपर आत्मा नहीं मरता परन्तु किसी और शरीरमें चला जाता है, इसीलिये ये लोग मृत्यु की परवाह नहीं करते और बहुत पराक्रमी होते हैं।"

पास्कल अपनी पुस्तक 'रीइन्कार्नेशन (Re-incarnation)' में लिखता है कि कुछ साल पहले तक फ्रांसमें ब्रिटनी (Brittany) के कतिपय प्रदेशोंमें जो वर्तमान सभ्यताके प्रभावसे शून्य थे पुनर्जन्म माना जाता था; इंग्लैण्ड तथा फ्रांस दोनोंमें ड्रूइड लोग विद्यमान थे यद्यपि उनकी बहुत हीन अवस्था थी। आगे चलकर यही लेखक लिखता है कि प्राचीन कालमें भारतवर्षके लोग धर्मप्रचारके लिये सब तरफ़ जाया करते थे। जो इंग्लैण्ड और फ्रांसमें बस गये उनका नाम ड्रूइड पड़ गया। ये अपने आपको सांप कहा करते थे, भारतवर्षमें भी सांप अध्यात्म विद्याका चिह्न माना जाता था। जूलियस सीज़र लिखता है कि ड्रूइड बननेके लिये तीस वर्ष तक अध्ययन करना आवश्यक समझा जाता था। विलियम वॉकर ऐट्किन्सनकी सम्मति है कि इन ड्रूइड लोगोंमें गाथाएँ प्रचलित थीं जिनसे इनका सम्बन्ध आर्यन धर्मके साथ प्रकट होता है।

कहा जाता है कि पाइथेगोरस जो यूनानके उपनिवेशोंमें एक प्रसिद्ध दार्शनिक और आत्मविद्याका पण्डित था, इन ड्रूइड लोगोंका गुरु था। पाइथेगोरसके बारेमें यह भी माना जाता है कि उसने भारतवर्षमें आकर अध्यात्म विद्या और दर्शनशास्त्रके अनेक सिद्धान्तोंका ज्ञान प्राप्त किया था। ये सब बातें ठीक हों या ग़लत, लेकिन इसमें कोई शक नहीं कि ये ड्रूइड लोग पुनर्जन्मके सिद्धान्तको स्वीकार करते थे।

यहां तक कि जिस अपराधीको प्राण-दण्ड दिया जाता था, उसे पांच सालकी मुहलत इसलिये मिलती थी कि वह ज्ञान ध्यानके द्वारा आगामी जीवनकी तय्यारी करले; यह न हो कि एक अपवित्र आत्मा नया जन्म धारण करले। इंग्लिस्तान और आयर्लैंण्डमें अब तक यह जनश्रुति है कि कुछ बच्चे ऐसे पैदा होते हैं जिन्हें अपना पूर्वजन्म याद होता है। यह समझा जाता है कि इस प्रकारकी जनश्रुति पुरातन कालसे चली आती है।

६—यूनान

पुराने यूनानमें भी पुनर्जन्म स्वीकार किया जाता था। यूनानियोंका एक धार्मिक गीत इस आशयका था कि जीवनयात्रा करते समय इसका अन्तिम परिणाम याद रखो, आत्माएँ पृथ्वीपर रह कर जब प्रकाशमें वापिस आते हैं तो इनपर पापके चिह्न विद्यमान होते हैं, इन्हें दूर करनेके लिये वे फिरसे पृथ्वीपर लौट जाते हैं, परन्तु शुद्ध और पवित्र आत्मा सीधी सूर्यकी ओर चले जाते हैं। प्रसिद्ध यूनानी दार्शनिक पाइथेगोरस और उसके अनुयायी पुनर्जन्मको मानते थे। पाइथेगोरस अपने अनुयायियोंको तपस्याकी शिक्षा देता था जो भारतवर्षके तपस्वियोंके ढंगकी थी। कहते हैं कि उसे अपने कई पहले जन्म याद थे और वह बता सकता था कि मैं पहले जन्ममें अमुक व्यक्ति था और उससे पहलेमें अमुक। यूनानके एक और सुविख्यात दार्शनिक ऐपिडोक्लीज़ (Empedocles) को अपने पहले कई जन्म याद थे जिनमेंसे एकमें वह स्त्री था। ऑर्फ़िक (Orphic) के नामसे प्रसिद्ध यूनानका एक पुराना धर्म भी पुनर्जन्मको मानता था।

अफ़लातून (Plato) पुनर्जन्म स्वीकार करता था। वह लिखता है कि मृतशरीरोंके आत्मा लौटकर फिर पृथ्वीपर आते हैं, जहां उन्हें अपने कर्मोंका फल मिलता है; इस तरह अपने अनुभवसे लाभ उठा कर आत्मा परमात्माके अधिकाधिक निकट पहुंचता जाता है। वर्तमान जीवनमें मनुष्यका बहुत सा ज्ञान इस जन्ममें उपलब्ध किया हुआ नहीं होता, परन्तु पहले जन्मोंसे क्रमागत होता है और वस्तुतः पूर्वजन्मोंके अनुभवसे प्राप्त किया हुआ होता है। साधारणतया पहले जन्म याद नहीं होते, किन्तु कभी कभी अचानक कुछ बातें याद भी आ सकती हैं। अफ़लातून आत्माके तीन अङ्ग मानता था। एक जिगरमें रहने वाला है, इसकी विशेषता विषयभोगकी तृष्णा है। दूसरा उरः प्रदेशमें होता है, इसकी विशेषता जोश (Passion) और उत्साह हैं। तीसरा मस्तिष्कमें रहता है, इसकी विशेषता बुद्धि (Reason) है। यही अन्तिम हिस्सा वास्तवमें आत्मा है और यही अमर है। अफ़लातूनके अनुगामी निओप्लेटोनिस्ट (Neo-platonist) लोग भी पुनर्जन्मको मानते थे। पुराने रोम में सिसरो (Cicero) और ओविड (Ovid) जैसे प्रतिभाशाली विद्वान् मौजूद थे, जो आत्मा को अमर मानते थे, परन्तु जनसाधारणको इस सिद्धान्तका परिज्ञान न था।

७—ईसाइयत

कई यहूदी दार्शनिक भी अफ़लातूनका बहुत कुछ अनुसरण करते थे, इनका ऐसिनीज (Essenes) नामक सम्प्रदाय पुनर्जन्मके सिद्धान्तको मानता था। शुरूमें ईसाईयतपर भी इन

लोगोंका बहुत असर पड़ा। पुराने यहूदी लोगोंके गुप्त सिद्धान्तोंमेंसे पुनर्जन्म भी एक था। कबाला (Cabala) के जानने वाले कहते हैं कि इसमें इस सिद्धान्तका उल्लेख है। आरम्भमें ईसाइयतके भी कुछ गुप्त सिद्धान्त थे जिनमें पुनर्जन्म भी सम्मिलित था। पॉल और ईसाई गुरुओं (Christian Fathers) के लेखोंमें इसकी ओर इशारा है। औरिजिनने स्पष्ट रूपसे इसका ज़िक्र किया है। जॉन दी बैप्टिस्ट (John the Baptist) के विषयमें यह समझा जाता था कि वह पूर्व जन्ममें इलियास (Elias) था। नॉस्टिसिज़्म, (Gnosticism) जो ईसाई मतका एक सम्प्रदाय था, खुल्लमखुल्ला इस सिद्धान्तको मानता था इसलिये कुछ अन्य ईसाई सम्प्रदाय इसे तङ्ग करते थे। सीनिसियस (Synesius) ने टॉलिमीस (Ptolemais) का विशप (लाटपादरी) बननेसे इन्कार कर दिया क्योंकि वह पुनर्जन्म आदि सिद्धान्तोंमें विश्वास रखता था। जस्टिन मार्टर लिखता है कि आत्मा एक दूसरेके बाद कई जन्मोंमें जाता है, लेकिन पूर्व-जन्म का स्मरण नहीं रहता। ईसाकी तृतीय शताब्दी के अन्त में लैक्टिनस (Lactinus) कहा करता था कि आत्माके अमर होनेसे यह परिणाम निकलता है कि इसकी सत्ता इस जन्मसे पहले भी होगी। सन् ४१५ में प्रसिद्ध ईसाई महात्मा सेण्ट औगस्टाइनने लिखा था कि अपनी मांके पेटमें आनेसे पहले मैं एक और शरीरमें रहता था। कहते हैं कि एक दिन ईसा मसीह और उसके शिष्य जा रहे थे। रास्तेमें उन्हें एक जन्मसे अन्धा व्यक्ति मिला। शिष्योंने पूछा—प्रभो! क्या इसने पाप किया है या इसके मां बापने, जिसके कारण यह

अन्धा है ? जन्मान्धताका कारण इस जीवनके पाप नहीं हो सकते; इसलिये कल्पनाकी जाती है कि शिष्य किसी और जीवनकी ओर संकेत कर रहे थे।

ईसाकी छठी शताब्दीमें ईसाई चर्चकी कौंसिलमें कतिपय सिद्धान्तोंको मानना पाप स्वीकार किया गया था, इन सिद्धान्तोंमें पुनर्जन्म भी एक था और सम्राट जस्टिनियनने इनका मानना राजाज्ञा द्वारा बन्द कर दिया। लेकिन विद्वान् लोग फिर भी पुनर्जन्मको मानते रहे। यूरोपीय इतिहासके उस युगमें जिसे शिवल्री (Chivalry) का युग कहा जाता है, इस सिद्धान्तके मानने वालोंने एक दूसरेको पहिचाननेके लिये पारिभाषिक शब्दोंका निर्माण किया था। गायक कवि जिन्हें ट्रॉबिडोर (Troubadour) कहते थे, इनके सन्देश हर होते थे। ये इन सिद्धान्तों को अपनी कवितामें छिपाकर इनका प्रचार करते थे। धर्म भ्रष्टोंको दण्ड देने वाले न्यायालयों (Inquisition Courts) ने इन कवियोंका अन्त कर दिया। योरपीय इतिहासके मध्ययुगका प्रसिद्ध दार्शनिक जॉन स्काउट्स इरिजिना (John Scotus Erigena) भी पुनर्जन्ममें विश्वास रखता था।

८—अरब और इस्लाम

कहते हैं पहले अरबी लोग भी इस सिद्धान्तके अनुयायी थे। वाकर (Walker E. D.) लिखता है कि अरबके दार्शनिक इस सिद्धान्तको बहुत पसन्द करते थे और कई मुसलमानोंकी लिखी हुई पुस्तकोंमें अब भी इसका उल्लेख मिलता है। प्रोफेसर कोलब्रुक
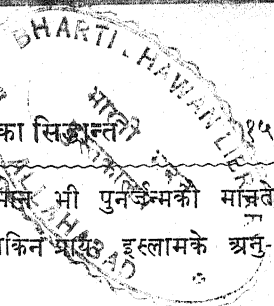
लिखता है कि हिन्दुस्तानके बौरे मुसलमान भी पुनर्जन्मको मानते हैं और इसीलिये मांस भी नहीं खाते। लेकिन प्रायः इस्लामके अनुयायी इस सिद्धान्तको नहीं मानते।

६—अफ्रीका, अमरीका आदि प्रदेशोंकी असभ्य जातियोंमें पुर्जन्मका स्थान

जिन जातियोंको असभ्य समझा जाता है उनमें भी पुनर्जन्ममें विश्वासके प्रमाण उपलब्ध होते हैं। मोल्डी नामक एक पुरातत्ववेत्ताने इन जातियोंमें लकड़ी और पत्थरपर बने हुए चित्रोंके आधारपर लिखा है कि इन लोगोंमें यह विश्वास सार्वजनिक था कि एक आत्मा होता है जो मृत्यु होनेपर शरीरसे पृथक हो जाता है। कई जातियां तो मानती थीं कि यह आत्मा फिर उसी शरीरमें वापिस आ जाता है, इसलिए इन लोगोंमें मसाला लगा कर देर तक शरीरको सुरक्षित रखनेकी प्रथा थी। लेकिन कई जातियोंका विचार था कि आत्मा मृत्युके पश्चात् नए नए शरीरोंमें जन्म लेता है।

योरोपके जिन यात्रियोंने पहिले अफ्रीकामें यात्रा की, उन्होंने लिखा है कि इस महाद्वीपमें कई स्थानोंके लोग पुनर्जन्म को मानते हैं। इसी तरह जो लोग शुरूमें अमरीका गए उन्हें मालूम हुआ कि वहांके मूलनिवासियों (Red Indians) का इस सिद्धान्त पर पूरा विश्वास है। यह विश्वास उनमें आज तक भी पाया जाता है। कई जातियोंमें प्रथा है कि बच्चे के मरनेपर उसके शवको चलती राहके किनारे रख देते हैं जिससे कि उधरसे कोई गर्भवती स्त्री गुज़रे तो उनके बच्चेकी आत्मा स्त्रीके पेटके बच्चेमें प्रविष्ट हो जाए।

मैडेगास्कर द्वीपमें जब कोई आदमी मरने लगता है, तो उसकी झोपड़ीकी छतमें छेद कर दिया जाता है ताकि उसकी आत्मा बाहर निकल कर किसी समीपस्थ जननीके उदरमें प्रवेश कर सके।

फिजीद्वीपके निवासी मनुष्यमें दो आत्माएं मानते हैं; एक कृष्ण और दूसरा श्वेत। कृष्ण आत्मा तो शरीरके साथ ही नष्ट हो जाता है, परन्तु श्वेत आत्मा अलग होकर फिरता रहता है और अन्तमें परिश्रान्त होकर किसी नये शरीरमें जन्म ले लेता है। ग्रीन-लैण्ड द्वीपके निवासी भी इसी तरह दो आत्माएं मानते हैं, जिनमेंसे एक मृत्युके बाद शेष रहता है और दूसरे शरीरमें जन्म लेता है।

प्राचीन कालके ऐतिहासिक मानते हैं कि पुरातन समयमें एट्ला-न्टिस (Atlantis) नामका एक महाद्वीप था जो समुद्रके बढ़नेसे पानीमें डूब गया, किन्तु उसके विषयमें कुछ कहानियां अब तक सुनी जाती हैं। इनसे मालूम होता है कि वहांके निवासी भी पुनर्जन्म को मानने वाले थे, इनमेंसे जो लोग डूबनेसे बचे रहे, वे प्राचीन मिस्र और प्राचीन पेरुके निवासियोंके पूर्वज थे और ये दोनों जातियां पुनर्जन्मको मानती थीं। इस बातसे भी इस विचारकी पुष्टि होती है कि ऐट्लान्टिसमें पुनर्जन्मका सिद्धान्त प्रचलित था। उपरिलिखित साक्षियों और प्रमाणोंसे सिद्ध होता है कि पुनर्जन्मका सिद्धान्त प्राचीन कालमें सर्वत्र माना जाता था। अन्य भी बहुतसे प्रमाण पेश किये जा सकते हैं, परन्तु विस्तार भयसे उनका यहां उल्लेख करना उचित नहीं।
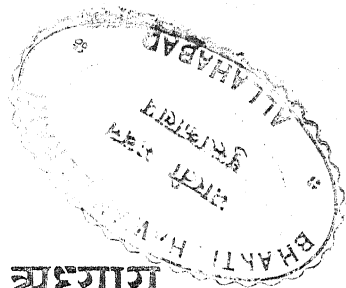
तीसरा अध्याय

पुनर्जन्मके प्रमाण

पुनर्जन्मका एक बड़ा प्रमाण यह है कि कई बच्चे ऐसे पैदा होते हैं जिन्हें अपना पूर्वजन्म याद होता है, वे इसकी घटनाएं बताते हैं जो अनुसन्धान करनेपर सत्य सिद्ध होती हैं। बहुतसे ऐसे दृष्टान्त देखने और सुननेमें आते रहते हैं और प्रायः उनके बारेमें खबरें समाचार पत्रोंमें प्रकाशित होती रहती हैं। नमूनेके तौरपर कुछ दृष्टान्त यहां दिये जाते हैं।

विलियम वाकर ऐट्किन्सन अपनी पुस्तक रीइन्कार्नेशन (Re incarnation) में एक घटनाका वर्णन करते हुए लिखता है कि एक निर्धन हिन्दू एक गांवमें रह कर श्रम किया करता था, कभी गांवसे बाहिर नहीं गया था। एक दिन वह अचानक चिल्ला उठा कि—मुझे याद आ गया है कि मैं पहले अमुक गांवमें रहता था। यह दूसरा गांव कई सौ मील दूर था। कुछ अमीर लोगोंको दिलचस्पी पैदा हुई, उन्होंने उसकी बातको लिख लिया और उसे उसके बताए हुए गांवमें ले गये। वहां पहुँचकर वह हैरान होकर चिल्ला उठा कि—सब कुछ बदल गया है। थोड़ी देर बाद वह कुछ-कुछ पहिचानने लगा,

उसने वहांके स्थानोंके पुराने नाम भी बताये। एक टूटे फूटे निर्जन घरके सामने जाकर रोते हुए कहने लगा कि—यह मेरा घर है। उसने अपने पहले जन्मका नाम भी बताया। गांवके बूढ़े आदमियोंसे पूछनेपर मालूम हुआ कि जब वे बच्चे थे, तो उसी घरमें उसी नामका एक मनुष्य रहता था। अन्य स्थानोंके पुराने नाम जो उसने बताये थे सब ठीक थे। उसने बताया कि अमुक स्थानपर मैंने एक मिट्टीके बर्तनमें डाल कर कुछ रुपये ज़मीनमें दबाए थे। खोदनेपर रुपये वहीं पाए गये।

लाहौरसे निकलनेवाले दैनिक उर्दू अखबार प्रतापके २ जून १६३५ के अङ्कमें १६वें पृष्ठपर निम्नलिखित समाचार प्रकाशित हुआ थाः—

"बुडापैस्ट (डाक द्वारा)—यहांके एक समाचार-पत्रमें यह ख़बर प्रकाशित हुई है कि एक १७ बरसकी लड़की ४० बरसकी हस्पानवी (Spanish) स्त्री बन गई। इस घटनाके सम्बन्धमें कहा जाता है कि यह पुनर्जन्मका एक प्रबल प्रमाण है। इस लड़कीका नाम ऐरिस फ़ैरल्डी है। यह एक भूतपूर्व आस्ट्रेलियन फ़ौजी अफ़सरकी पुत्री है। उसके बापने एक मुलाक़ातके दौरानमें कहा कि लड़की किसी बीमारीके कारण बेहोश हो गई थी। जब वह स्वस्थ हुई तो अपनी भाषा बिल्कुल भूल चुकी थी, अपने सम्बन्धियोंको भी नहीं पहिचानती थी। अपने व्यतीत किये हुए जीवनके सम्बन्धमें उसे कुछ भी ज्ञान न रहा। वह स्पेनकी भाषा बोलने लगी और कहने लगी कि मेरी आयु चालीस साल है और मैं मैड्रिडकी रहने वाली हूँ, मेरे दस बच्चे हैं। उसके बारेमें खोज करनेके लिये मां बापने बड़ी मुश्किलसे

उसे उसकी मातृभाषा जर्मनके कुछ शब्द सिखाये। यह भी कहा जाता है कि ऐरिस आजतक कभी स्पेन नहीं गई, न ही उसने वहांकी भाषा ही सीखी थी परन्तु मैड्रिडकी बातें उसे अच्छी तरह याद हैं। लड़की ने कुछ वाक्य स्पैनिश भाषामें लिखकर पढ़े और संकेतसे उनका अभिप्राय स्पष्ट किया। उसका पिता स्वयं आत्मविद्याका पण्डित है। उसीका बयान है कि लड़कीकी आत्माने नया रूप धारण कर लिया है। इस घटनाके सम्बन्धमें यहांके लोगोंमें चर्चा हो रही है। लड़कीको देखनेके लिये दूर दूरसे वैज्ञानिक आ रहे हैं।"

इस घटनाकी स्वाभाविक व्याख्या यही हो सकती है कि उस लड़कीको अपना पिछला जन्म याद आ गया और बीमारीके कारण इस जीवनकी बातें भूल गई, जैसा कि हम जानते हैं कि सख्त बीमारी या सदमेके कारण प्रायः भूल जाया करती हैं। इङ्गलैण्डका प्रसिद्ध अन्वेषक मायर्स (Myers) एक डोरी ऐल्क नामक स्त्रीके विषयमें जिसकी आयु ३४ वर्षकी थी, लिखता है कि २८ अगस्त सन् १८९१ को उसे किसीने आकर बताया कि तुम्हारा पति मर गया है और उसकी लाश लाई जा रही है। इस खबरसे वह बेहोश हो गई और उसे गत १४ जुलाईसे उस तिथि तककी सब बातें भूल गईं। ऐसे ही इस लड़की ऐरिसको असाधारण बीमारीकी वजहसे इस जन्मकी बातें भूल गईं और स्मृतिकी गहराईमें दबी हुई पिछले जन्मकी घटनाओंकी स्मृति जाग्रत हो गई। बीमारीकी हालतमें अतीत घट-नाओंकी स्मृति प्रगट हो सकती है, इस बातको आजकलका मनो-विज्ञान स्वीकार करता है और इस प्रकारके कई उदाहरण अन्वेषकोंने

पता लगाए हैं। इनमेंसे एक (कोलरिजकी नौकरानीका उदाहरण) हम छठे अध्यायमें देंगे।

आजकल (१६३५ में) गुरुकुल काङ्गड़ीमें एक विद्यार्थी पढ़ता है जिसे अपना पूर्वजन्म याद है। यह रावलपिण्डीके एक प्रसिद्ध आर्यसमाजी घरानेका है। इसे पांच ही सालकी आयुमें अर्थात् न्यूनतम निश्चित आयुसे एक वर्ष पहले ही प्रविष्ट करा दिया गया था। क्यों कि घर पर बहुत लोग इसे देखने और इससे प्रश्न करनेके लिये आते थे, जिससे इसके मां-बाप दिक़ आ गये थे।

पोलैण्डका लेखक डब्ल्यू ल्यूटोस्लॉस्की (W. Lutoslawski) अपनी पुस्तक (Pre-existence and Re-incarnation) में फील्डिंग हॉल (Fielding Hall) की किताब (The soul of a People) से लेकर ब्रह्मदेशके एक फुंगीके सम्बन्धमें एक घटनाका वर्णन करता है। इस घटनाको हम संक्षेपमें नीचे देते हैं:—

"ब्रह्मदेशके एक छोटेसे गांवमें एक बांसका बना हुआ मठ था जिसमें एक फुंगी रहता था और लड़कोंको पढ़ाया करता था। मठ बहुत छोटासा था और लड़कोंके लिये स्थान बहुत कम था। इससे फुंगी बहुत तंग था। एक बार वर्षा ऋतुमें उसने बहुतसे सागवानके वृक्ष बो दिये और सदा उन्हें बड़े परिश्रमसे पानी दिया करता और कहा करता था कि जब ये वृक्ष बड़े हो जाएंगे तो मैं अगले जन्ममें आऊंगा और इनकी लकड़ीसे एक बड़ा मठ बनाऊंगा। सागवानके वृक्ष सौ सालमें बड़े होते हैं। इस अन्तरमें फुंगी मर गया। दूसरे कई फुंगी आये और मर गये। लेकिन क्योंकि वह गांव

दूर जंगलमें था और अशान्तिके दिन थे, इसलिए वह उजड़ता गया और अन्तमें उसमें कोई फुंगी न रहा। कुछ काल बाद एक दिन शामको वहां एक फुंगी पहुँचा जो अपनी दीर्घयात्रासे श्रान्त प्रतीत होता था, पांवमें छाले पड़े हुए थे और भूखा था। गांव वालोंने यह समझकर उसका स्वागत किया कि यह कहीं आगे जा रहा है। लेकिन उसने रात बितानेके लिए उस मठको साफ़ किया। विचित्र बात यह थी कि उसने मठको पहिचान लिया और उसका मार्ग तथा गांवके सब रास्ते, पासकी पहाड़ी और नदियोंके नाम उसे पहिलेसे ही मालूम थे। ऐसा प्रतीत होता था मानो वह पहले कभी गांवमें रह चुका है, लेकिन यद्यपि वह नवयुवक था, तथापि गांवके ७० वर्षके बूढ़े भी कह न सकते थे कि वह वहां कब रहा होगा। अगले दिन गांव वाले उससे मिलने आये तो उसने कहा—मैं अब यहीं रहूँगा, आप लोगोंको याद होगा कि एक फुंगीने ये वृक्ष लगाए थे और कहा था कि जब ये बड़े हो जाएंगे तो मैं दूसरा जन्म लेकर एक बड़ा मठ बनाउँगा। वह फुंगी मैं ही हूँ। अब ये वृक्ष बड़े हो गये हैं और जैसा मैंने कहा था, मैं मठ बनानेके लिये लौट आया हूँ और अब हम मिल-कर मठ बनाएंगे। गाँव वालोंको सन्देह हुआ और बूढ़ोंने उससे पुराने रीति रिवाज और उन बातोंके विषयमें सवाल किए जो पुराने समयमें गांवमें परम्परासे चली आती थीं। उसने उन सबके ऐसे जवाब दिये, मानो वह उनसे अच्छी तरह परिचित हो। उसने बताया कि मैं सुदूर दक्षिणमें पैदा हुआ था और वहीं मैंने विद्याध्ययन किया और एक मठमें प्रविष्ट होकर फुंगी बन गया। अबतक मुझे मालूम न था

कि पहले जन्ममें मैं कौन था। एक दिन स्वप्नमें मुझे याद आया कि इस गांवमें मैंने वृक्ष लगाये थे और लौट कर आनेकी प्रतिज्ञा की थी। अगले ही दिन मैं वहांसे चल पड़ा और कई सप्ताहों तक रात दिन यात्रा करके कल यहां पहुँचा हूँ जैसा कि आप लोग देख रहे हैं। इस पर गांव वालोंको विश्वास हो गया और उन्होंने वृक्ष काटकर उनकी लकड़ीसे एक मठ बनाया, जो अबतक विद्यमान है।"

ल्यूटोस्लोस्कीने अपनी उपर्युक्त पुस्तकमें एक और घटना भी लिखी है, जो पैरिसकी कई किताबों और पत्रिकाओंमें भी छप चुकी है। "२०वीं सदीके आरम्भमें पैरिसमें एक देवी रहती थी जिसका नाम श्रीमती लोरी रेनाड (Madame Laure Raynaud) था। उसे बचपनसे ही याद था कि पहले भी मेरा जन्म एक ऐसे देशमें हो चुका है, जहां धूप खूब चमकती थी, और वहां छोटी आयुमें ही मेरी मृत्यु हो गई थी। वह उस घरका भी भली भांति वर्णन कर सकती थी जिसमें उसने अपना पूर्वजन्म व्यतीत किया था। सन् १९१३ में ४५ वर्षकी उम्रमें वह पहिली बार इटलीमें गई और वहां उसने जैनोआ (Genoa) के आस-पासके प्रदेशको पहिचानकर कहा कि यह मेरी पुरानी जन्म-भूमि है। उसने एक मित्रसे कहा कि मुझे याद है मेरा घर इस प्रकार-का था। मित्रने बताया कि इस प्रकारका घर अमुक स्थान पर विद्य-मान है। उस देवीको रास्ता स्वयं याद आ गया और उसने वहां जाकर वह घर ढूंड लिया। वहां उसे एक बात याद आई जिसकी खोज हो सकती थी। उसने बताया कि मुझे प्रथाके अनुसार श्मशान में नहीं गाडा गया था, परन्तु गिर्जेमें गाडा गया था। उस घरमें खोज करनेसे

मालूम हुआ कि एक शताब्दी पूर्व वहां एक नवयुवती रहती थी जिसका २१ अक्तूबर सन् १८०६ को देहान्त हो गया था और उसे उसी गिर्जेमें गाडा गया था जो पैरिसकी श्रीमती रेनॉडने बताया था।"

आजकल देहलीमें कुमारी शान्ति देवी नामकी एक लड़की है, जो अपने पूर्वजन्मकी बातें बताती है। उसकी आयु इस समय (१६३५ में) ६ वर्षकी है। इसके सम्बन्धमें लाला देशबन्धु गुप्ता मैनेजिङ्ग डाइरैक्टर दैनिक उर्दू अखबार तेज, पण्डित नेकीराम शर्मा और महाशय ताराचन्द ऐडवोकेटने खोज की है, और उनका बयान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहलीने एक अंग्रेज़ी पैम्फ़लेटके रूपमें प्रकाशित किया है। कुमारी शान्तिदेवीकी कहानी जो समाचार पत्रोंमें भी छप चुकी है, संक्षेपमें निम्नलिखित है:—

"कुमारी शान्तिदेवी १२ अक्तूबर १६२६ को मुहल्ला चीराखाना देहलीमें बाबू रङ्गबिहारी माथुरके घर पैदा हुई। अपने जीवनके चतुर्थ वर्षतक यह प्रायः मौन रहा करती थी। उसके बाद कुछ बोलने लगी। किन्तु इसकी बहुतसी बातें इसके पिछले जन्मके विषयमें होती थीं। जैसे, भोजनके समय वह कहा करती थी, मथुरामें मैं अपने घरमें इस इस प्रकारकी मिठाइयां खाया करती थी। जब उसे वस्त्र पहिनाये जाते तो वह बताती कि मथुरामें मैं इस इस तरहके कपड़े पहिना करती थी। वह प्रायः कहती थी कि मैं जातिकी चौबाइन थी और मेरा पति कपड़े बेचता था। वह अपने घरके सम्बन्धमें भी कई बातें बताती थी, जैसे यह कि मेरे घरका रंग पीला था और मेरे पड़ोस-की दूकानें इस प्रकारकी थीं।

"उसने मथुरा जानेकी कई बार इच्छा प्रगट की, परन्तु उसके मां-बाप उसकी बातोंपर ध्यान नहीं देते थे, क्योंकि उनका विश्वास था कि पिछले जन्मकी सच बातें बताने वाले बच्चे देरतक जीवित नहीं रहते। इसीलिये वे इस बारेमें छान-बीन भी नहीं करना चाहते थे और आशा रखते थे कि लड़की इन बातोंको भूल जायेगी। लेकिन वह इन्हें प्रायः दुहराती रहती थी। उसके मां-बाप उसके पतिका नाम पूछते थे। (हिन्दू स्त्रियां अपने पति का नाम नहीं लेतीं।) इस प्रश्नपर उसे शर्म आया करती थी। वह कहती थी कि मैं उसे पहिचान लूंगी। किन्तु नाम न बताती थी। कोई डेढ़ बरस हुआ, एक दिन लड़कीके दादाके भाई महाशय बिशनदासने जो रामजस स्कूल देहलीमें पढ़ाते हैं, लड़कीसे कहा—अगर तुम मुझे अपने पतिका नाम बता दोगी तो मैं तुम्हें मथुरा ले चलूंगा। लड़कीने इनके कानमें कहा कि मेरे पतिका नाम है 'पण्डित केदारनाथ चौबे'। महाशय बिशनदास बहुत देरतक लड़कीको टालते रहे। १६३५ के दशहरेकी छुट्टियोंमें उन्होंने एक कॉलिजके भूतपूर्व प्रिन्सिपल लाला कृष्णचन्द्र एम० ए० से इस बातका ज़िकर किया। वे लड़कीको देखने आये और उससे उसके पतिका पता और उसके घरके बारेमें बातें पूछीं। उन्होंने इस पतेपर मथुरा चिट्ठी लिखी। वहांसे पण्डित केदारनाथ चौबेका उत्तर प्राप्त हुआ कि लड़की जो बातें बताती है वे सच हैं, और मेरे चचेरे भाई पण्डित कांजीमलको, जो देहलीमें मैसर्ज़ भानामल गुलज़ारीमलकी फ़र्ममें काम करते हैं, लड़कीसे मिलाया जाय। लड़कीने पण्डित कांजीमलको देखते ही

पहिचान लिया और उनके ऐसे प्रश्नोंके ठीक उत्तर दिये जिनका एक घरका आदमी ही उत्तर दे सकता था। उदाहरणके लिये उसने बताया, मेरे दो बच्चे हुए थे—एक लड़का और एक लड़की, और मैंने एक सौ पचास रुपये घरमें अमुक स्थानपर दबाये थे। उसने पूछा कि—मेरे लड़केका क्या हाल है ?

"पण्डित कांजीमलने पण्डित केदारनाथ चौबेको देहली बुलाया जो १३ नवम्बर १९३५ को अपनी वर्त्तमान पत्नी और दस बरसके लड़केके साथ मथुरासे देहली आये। लड़कीको बताया गया कि तुम्हारे पतिका भाई तुम्हें मिलने आया है, लेकिन उसने दर्शकोंकी एक भीड़मेंसे अपने पति और अपने लड़केको पहिचान लिया। वह घण्टे भरतक रोती और सिसकियां लेती रही। पूछने पर उसने शर्मसे सिर झुकाकर बताया कि यह मेरा पति है। पण्डित केदारनाथने लड़की से ऐसे प्रश्न पूछे जिनका पत्नी ही ठीक उत्तर दे सकती थी। उनके ठीक उत्तर मिलनेपर उन्हें विश्वास होगया कि उसमें उनकी मृत पत्नीकी आत्मा है और उनके आंसू निकल पड़े। शान्तिदेवीने अपने दस वर्षके लड़केसे बड़ा प्यार किया और अन्दरसे उसे खिलौने लाकर दिये। जब पण्डित केदारनाथ और उनका लड़का जाने लगे तो शान्तिदेवी उनके साथ जाना चाहती थी, इसलिये वे दो दिनतक देहली रहे। उनके जानेके बाद यद्यपि लड़कीको बहलानेका प्रयत्न किया गया परन्तु मथुरा जानेकी उसकी इच्छा बढ़ती गई। वह कहती थी कि मथुरामें मैं अपने घरका मार्ग बता दूंगी। उसने विश्रान्तघाट, द्वारका-धीशके मन्दिर और अपने घरके रास्ते और बाज़ारोंका वर्णन किया।

"अन्तमें २४ नवम्बर १६३५ को लड़कीके मां बाप और अन्य आदमियोंका एक दल लड़कीको लेकर मथुराकी तरफ़ चला। गाड़ीमें लड़की बहुत प्रसन्न थी। जब गाड़ी मथुरा स्टेशनपर पहुंची तो लड़कीने स्टेशन और आसपासके स्थानोंको पहिचान लिया और चिल्लायी—मथुरा आगयी! मथुरा आगयी!! प्लैटफॉर्मपर लड़कीको लाला देशबन्धुने उठाया हुआ था जबकि लोगोंके झुण्ड-मेंसे एक मनुष्यकी ओर इशारा करके लड़कीसे पूछा गया कि क्या तुम इसे पहिचानती हो? लड़कीने झट लालाजीकी गोदसे उतरकर उस मनुष्यके पांव छुए और पूछनेपर लालाजीके कानमें बताया कि ये मेरे जेठ हैं, और वस्तुतः वे पण्डित बाबूराम चौबे–पण्डित केदारनाथ चौबेके बड़े भाई—थे। लड़कीको एक गाड़ीकी अगली सीटपर बिठाया गया। गाड़ीवानको कहा गया कि जिस रास्ते लड़की कहे ले चलो, और ऐसा प्रबन्ध किया गया कि उस गाड़ीसे आगे कोई नहीं था। लड़की रास्ता बताती हुई गाड़ीको होली दरवाज़े लेगई। रास्तेमें इमारतों और सड़कोंके विषयमें सवालोंके उसने सही जवाब दिये। जैसे यह कि सड़क पर पहिले तारकोल न था। फिर लड़की गाड़ी को एक गलीके दरवाज़ेपर लेगई, वहां नीचे उतरकर रास्ता दिखाने लगी और सब लोगोंको अपने घर लेगई जो आजकल किराये पर दिया हुआ है। रास्तेमें उसने ७५ वर्षके एक वृद्ध ब्राह्मणको अपने ससुर-के तौर पर पहिचान लिया और बड़े मानके साथ उसके पांव छुए। घर-में जाकर उसने बताया कि यह मेरा कमरा था। कुछ मथुराके लोगोंने घरके बारेमें ऐसे शब्दोंमें प्रश्न पूछे जो देहलीके हिन्दुओंमें प्रचलित

नहीं हैं, लेकिन उसने एकदम ठीक उत्तर दिये । उदाहरणके लिये पूछा गया कि जाए ज़रूर कहां है ? उसने झट सीढ़ीसे उतर कर टट्टी दिखादी । इसके पश्चात् शान्तिदेवीने अपने २५ वर्षके भाई और ससुरके भाईको पहिचान लिया । वह मथुरासे ख़ूब परिचित मालूम होती थी। लड़कीने कहा कि मुझे मेरे दूसरे घरमें लेचलो, वहां मैंने ज़मीनमें रुपये दबाए हुए हैं । फिर वह रास्ता दिखाती हुई सबको दूसरे घरमें लेगई जहाँ पण्डित केदारनाथ आज कल रहते हैं । लड़कीने कहा कि मेरी अधिक आयु इस घरमें बीती थी। वह इस घरसे ख़ूब परिचित थी। पूछा गया कि कुंआ कहां हैं जिसका तुम ज़िकर करती थीं ? वह भागकर आंगनमें गई जहां कोई कुंआ न था । इससे उसे आश्चर्य हुआ और उसने एक कोनेकी ओर इशारा करके कहा कि कुंआ यहां था । पण्डित केदारनाथने एक पत्थर उठाकर कुंआ दिखाया जो कुछ वर्ष पहले बन्द करदिया गया था । फिर वह एक कमरेमें गई जिसे कि वह अपना कमरा कहती थी। वहां एक कोनेमें पांव रखकर कहा कि यहां मेरा रुपया है, इसे खोदो । खोदनेपर एक गल्ला मिला परन्तु उसमें रुपया न था । इसपर उसने अपने आप मिट्टीमें ढूंडना शुरू किया। बादमें पण्डित केदारनाथने बताया कि पत्नीकी मृत्युके बाद रुपया उन्होंने निकाल लिया था। घरसे जानेको उसका जी न चाहता था । यमुना जाने लगे तो उसने कहा कि नीचे स्टोरमेंसे मेरे नहानेके कपड़े लेलो। देहलीमें उसे अपने पूर्वजन्म के मां बाप याद न थे, परन्तु मथुराके एक बाज़ारमेंसे गुज़रते हुए उसने उनके घरको और पचास आदमियोंकी भीड़मेंसे अपने मां बापको पहिचान

लिया और उनसे गले मिली। मां बाप फूट फूटकर रोते थे। फिर उसने द्वारकाधीशके मन्दिर और विश्रान्तघाटको जहां वह पूर्वजन्ममें नहाया करती थी, पहिचाना।

"लड़कीका पहिले जन्मका नाम लुगदी था जो १८ जनवरी १६०२ को पैदा हुई और ४ अक्तूबर १६३५ को आगरा अस्पतालमें मरी थी। २५ सितम्बर १६२५ को उसका लड़का नीतलाल पैदा हुआ था।"

पैरिस के अन्वेषक कर्नल डी रोचास (Colonel De Rochas) को ख़याल हुआ कि जिस तरह बचपनकी बातें भूली हुई मालूम होती हैं, लेकिन वैज्ञानिक (Psyco-Analysts) इन्हें याद करा लेते हैं, इसी तरह सम्भव है कि पिछले जन्मोंकी बातें, जिनका प्रगट-रूपसे स्मरण नहीं होता, याद कराई जा सकें। इस विचारको लेकर उसने कई परीक्षण किये। वह कुछ लोगोंको सम्मोहन (Hypnotism) की हालतमें लाकर पिछले जन्मको याद करनेका आदेश देता और उनके सम्बन्धमें प्रश्न करता था। सन् १६११ में उसने एक किताब छपवाई जिसमें ऐसे कई परीक्षणोंका उल्लेख था। उदाहरणार्थ एक स्त्रीको सम्मोहनकी हालतमें लाकर उसने उसकी स्मृतिको उसके पिछले चार जन्मोंतक जानेके लिये बाधित किया। परन्तु वह इससे आगे न जा सका, क्योंकि उस स्त्रीपर असह्य दबाव पड़ता था। कई पुनर्जन्मके माननेवाले भी इन सभी परीक्षणोंको बिलकुल ठीक नहीं समझते, क्योंकि सम्भव है, जिन लोगोंपर परीक्षण किये गये, उनपर सम्मोहन करनेवालेके मानसिक विचार (Unconscious Suggestion) का भी असर पड़ा

हो। हो सकता है कुछ परीक्षण ठीक और आक्षेपरहित हों। कमसे कम यह अन्वेषणका एक नया रास्ता ज़रूर है जिससे सम्भव है कभी भविष्यमें यथार्थ सत्य प्राप्त किया जा सके।

पायर कॉर्निलियर (Pierre Cornillier) ने १९२१ और १९२६ में फ्रांसीसी भाषामें दो पुस्तकें लिखीं जिनमें उसने यह दिखानेकी कोशिश की कि सम्मोहन (Hypnotism) के द्वारा पिछले जन्मोंको याद कराया जा सकता है।

कई घटनायें इस प्रकारकी भी पाई गई हैं जिनमें पूर्वजन्मकी स्मृतिके स्थानपर अगले जन्मके विषयमें भविष्यवाणी की गई थी। इस प्रकारकी एक घटना कई पुस्तकोंमें छप चुकी है। पैलर्मो (Palermo) के रहनेवाले डाक्टर सैमोना (Samona) की पांच सालकी लड़की ऐलिसैन्ड्रा (Alessandra) में सन् १९१० में मर गई। मां बापको बड़ा दुःख हुआ। एक रात स्वप्नमें लड़की मांको दिखाई दी और उसने मांको सान्त्वना दी कि मैं एक और बहिनके साथ वापिस आउंगी। यह स्वप्न कई बार आया। परन्तु इस भविष्य वाणीके पूरा होनेकी बहुत सम्भावना न थी, क्योंकि सन् १९०९ में मांने एक ऑपरेशन करवाया था, जिससे बच्चा होनेकी आशा बहुत कम होगई थी। तो भी २२ नवम्बर १९१० को दो लड़कियां इकट्ठी पैदा हुईं जिनमेंसे एककी शारीरिक आकृति और चेष्टायें मृत लड़कीसे हूबहू मिलती थीं। इस घटनापर समाचारपत्रों में एक बहस हुई जिसमें डाक्टर सैमोनाने इस बातपर बहुत ज़ोर दिया कि मृत लड़की और यह लड़की एक ही हैं।

ल्यूटोस्लॉस्की लिखता है कि कई लोगोंको अपने पिछले जन्म तो याद नहीं होते लेकिन उन्हें दृढ़ विश्वास होता है कि हमारे कई जन्म हो चुके हैं। कई बार इस प्रकारका विश्वास लगभग अशिक्षित व्यक्तियोंमें भी पाया जाता है, जिससे यह भी नहीं कहा जा सकता कि विद्वानोंकी सम्मति जाननेसे उनमें यह विचार पैदा हो गया है। स्वयं ल्यूटोस्लॉस्कीको इस प्रकारका दृढ़ विश्वास था और पुनर्जन्ममें उसके विश्वासका आधार दार्शनिक विचार न होकर यह वैयक्तिक अनुभव था।

पुनर्जन्मको मान लेनेसे कई बातें साफ़ समझमें आ जाती हैं जो सबकी सब किसी दूसरे एक सिद्धान्तके माननेसे पूरे तौरपर समझमें नहीं आतीं :—

*कई आदमियोके दिलमें किसी चीज़को पहली बार देखकर यह ख़याल पैदा होता है कि इसे पहिले भी देखा हुआ है। कई बार किसी नई पुस्तक या नई विद्याके विषयमें भी ऐसा ही ख़याल पैदा होता है। यहां तक कि कुछ लोग कोई नई कहानी या नई युक्ति थोड़ीसी सुनकर बाक़ी स्वयं जान लेते हैं। एक अमरीकन जो कभी भारतवर्ष नहीं आया था, एक भारतीय को मिलने गया जो अमरीका गया हुआ था और जिसने अपने कमरेमें एक पूजा स्थान बनाया हुआ था। अमरीकनको ख़याल हुआ कि मैंने ऐसा ही मन्दिर पहिले भी देखा हुआ है, फिर उसने उस मन्दिरका विस्तृत वर्णन किया जो एक प्राचीन कालके हिन्दू मन्दिरसे बिलकुल मिलता था। *पश्चिममें एक मशहूर

*Re-incarnation by W. W. Atkinson

वकील जब मैसॉनिक ऑर्डर (Masonic Order) में दीक्षा लेने लगा तो उसे मालूम हुआ कि मुझे याद है कि मैंने ऐसी दीक्षा पहिले भी ली थी और उसे इस संस्कार की सब विधियां बताने से पहले ही मालूम होती गईं । §हिन्दू दर्शनके एक विद्यार्थीको ऐसा प्रतीत होता था कि जो कुछ मैं पढ़ रहा हूँ, मानो वह मुझे एक पुरानी बात याद आ रही है । यहां तक कि जो बात उसके पढ़ानेवालेको मालूम न होती थी वह स्वयं उसके दिलमें आ जाती थी और वह कई बातें ऐसी कह देता था जो आगे चलकर सचमुच किताबमें लिखी हुई पाई जाती थीं । कई लोगोंको पहिली बार देखने पर भी कुछ चीज़ें ऐसी मालूम होती हैं मानो वे पहिले कभी स्वप्नमें देखी हुई हैं । प्रसिद्ध उपन्यासकार सर वॉल्टर स्कॉट (Sir Walter Scott) अपनी डायरीमें लिखता है कि कल भोजनके समय मुझे ऐसा प्रतीत होता था कि यह सब बातें पहले भी सुनी हुई हैं और जो कुछ हो रहा है वह सब पहले भी हो चुका है । *अंग्रेज लेखक विलियम होन जब एक वेटिंग रूममें पहली बार प्रविष्ट हुआ तो उसे मालूम हुआ कि यह सब पहले भी देखा हुआ है । उसे याद आया कि खिड़कीके बाहर एक विशेष प्रकारकी गांठ है । खिड़की खोलकर देखा तो वैसी ही गांठ वहां मौजूद थी । इस घटनासे वह प्रकृतिवादको छोड़ कर अध्यात्मवादकी ओर प्रवृत्त हो गया । इंगलैण्डका प्रसिद्ध उपन्यास-लेखक चार्ल्स डिकन्स (Charles Dickens) इटलीमें सैर कर रहा था । जब वह एक

§ Reincarnation by W. W. Atkinson.

* Reincarnation by E. D. Walker

पुलपर पहुँचा तो उसके दिलमें बड़े ज़ोरसे ख़याल पैदा हुआ कि मैंने इसे पहले देखा हुआ है । वह लिखता है कि यदि किसी पूर्वजन्ममें मुझे वहां क़त्ल भी किया होता तो भी मुझे इतने ज़ोरसे उसकी याद न रह सकती थी । ❋ब्रुक्लिन (अमरीका) की एक विदुषीदेवी जरमनीके एक पुस्तकालयमें गयी, पुरानी किताबोंके विभागकी ओर जाकर उसने कहा कि मेरे दिलमें ख़याल आता है कि अमुक नामकी एक दुष्प्राप्य पुस्तक-की एक प्रति उस अलमारीमें रखी है और उसके कोनेमें अमुक जर्मन प्रोफ़ैसरका नाम लिखा है । परन्तु यह पुस्तक एक अन्य स्थानपर रखी हुई मिल गई और उसके कोनेमें उसी प्रोफ़ैसरका नाम था । एक पुराने पुस्तकालयाध्यक्षने बताया कि कई वर्ष पहले यह पुस्तक उसी स्थानपर रखी थी जिसकी ओर उस व्यक्तिने निर्देश किया था ।

हाल ही में लाहौरके उर्दू अख़बार प्रकाशके ७ जुलाई १९३५ के अङ्कमें "मसलए आवागमनका एक मज़ेदार सच्चा वाक़िआ" के शीर्षकके नीचे निम्नलिखित समाचार प्रकाशित हुआ थाः—

"लण्डनके अख़बार सण्डे ऐक्सप्रैसमें लेडी कर्टिस सेण्ट ग्लुसैस्टर प्लेस पोर्टमैनने अपनी इटली यात्राकी आश्चर्यजनक घटनाएं प्रकाशित की हैं । यह देवी इससे पहले कभी इटली न गई थी । परन्तु प्रत्येक स्थानको खूब अच्छी तरह पहिचानती थी । इटली के रहनेवाले, जिन्हों-ने इसे पिछले जन्ममें देखा हुआ था, इसे पहिचानते थे । लेडी कर्टिस अपने अनुभव इस प्रकार देती है—एक बार जब कि मैं जवान थी तो मुझे पहले पहल इटलीमें यात्रा करनेका अवसर प्राप्त हुआ । जब

❋Reincarnation by E. D. Walker

गाड़ी रवाना हुई तो मैंने मानसिक विक्षोभ और अशान्ति अनुभव की। मैंने अपना अधिकतर समय गाड़ीमेंसे बाहरकी तरफ़ झांकने या अन्दर दाखिल होनेके रास्तेमें गुज़ारा। मेरी इस चेष्टासे मेरे सब सम्बन्धी मुझसे नाराज़ थे। अचानक मैं बेचैन होकर स्टूलके पास गई। मैंने यह अनुभव किया कि मुझे यह सब मालूम है कि हम कहां जा रहे हैं और क्या देखेंगे। गाड़ी धीमी चालसे जा रही थी। मुझे अनुभव हुआ आगे चलकर दाईं ओर पहाड़ीपर एक गिर्जा होगा जो कि अकेला ही नज़र आता है और सम्पूर्ण दृश्यमें अपनी निराली शान रखता है। इसके समीप कोई गांव नहीं है। जब हम आगे बढ़े तो बिलकुल यही दृश्य आंखोंके सामने था। फिर मुझे अनुभव हुआ कि बाईं ओर एक नदी होगी। ऊंचे और घने पेड़ होंगे और एक पहाड़ीपर रुपहले पत्तोंवाले वृक्षोंके झुण्ड होंगे। यह अनुभव होते ही मुझे आश्चर्य हुआ कि वृक्षों के पत्ते रुपहले क्यों होंगे। वृक्षोंके सम्बन्धमें मेरी परिचिति बहुत सीमित थी। मैंने ज़ैतूनके वृक्षोंके झुण्ड अपनी उमरमें पहले कभी न देखे थे। वास्तवमें जब ये वृक्ष हमारे सामने आये तो मुझे किसी दूसरे व्यक्तिने ही बताया कि ये ज़ैतूनके वृक्ष हैं। मुझे उस समय ऐसा मालूम हुआ कि जिस प्रदेशमें हम भ्रमण कर रहे हैं उसे मैंने पहिले देखा हुआ है। यद्यपि जहांतक मुझे स्मरण था, मुझे निश्चय था कि मैं अपने जीवनमें पहिले यहां कभी नहीं आई। इसके बाद मेरे दिलमें ऐसा अनुभव फिर कभी नहीं हुआ। इस यात्राके बाद जबकि हम अपने फ्रांसीसी मित्रोंके साथ पैरिसकी सैर कर रहे थे तो एक मकानपर दरवाज़ा खुलनेकी प्रतीक्षामें

कुछ देर ठहरना पड़ा। वहां एक आदमीने बड़ी प्रसन्नताके साथ हमारा स्वागत किया और एकने मेरे पास आकर इटैलियन भाषामें बातचीत आरम्भ करदी। मैंने फ्रांसीसी भाषामें उत्तर दिया कि—दुःख है मैं यह भाषा नहीं जानती। इसपर वह टूटी-फूटी फ्रेञ्च में बोला—तुम तो इटली की रहनेवाली हो, क्या मैं ग़लत कह रहा हूँ? तुम्हें अवश्य इटैलियन होना चाहिये और मैं निश्चयसे कह सकता हूँ कि तुम इटैलियन हो। मैं स्वयं इटलीका रहनेवाला हूँ। तब मैंने अपनी इटलीकी यात्रा और वहां कुछ स्थानोंको समयसे पहिले ही जान लेनेकी बातपर तथा इस व्यक्तिके अनुरोधपर कि तुम इटलीकी रहनेवाली हो विचार किया—क्या मैं एक किसान स्त्रीके रूपमें उस पहाड़ीपर बने हुए छोटे गिर्जेको जाया करती थी? या शायद मूर्तिपूजकके तौरपर सरू और ज़ैतूनके वृक्षोंमें फिरा करती थी? मैं बहुत चकित हूँ।

फ्रांसीसी लेखक पैपस (Papus) अपनी किताब (Reincarnation) में निम्नलिखित घटनाका वर्णन करता है:—

"मैं एक आदमीको जानता था जो फ्रांसके दक्षिण-पश्चिममें एक बड़े शहरकी म्युनिसिपल कमेटीका सदस्य था। यह आदमी नास्तिक और स्वतन्त्र विचारक था, परन्तु अपने शहरके पास के एक जंगलमेंसे कभी नहीं गुज़रता था। बग्घीपर चढ़कर भी नहीं। वह कहा करता था कि मुझे ऐसा अनुभव होता है कि उस जंगलमें मुझे क़त्ल किया गया था लोग उसे कहते थे कि तुम तो नास्तिक हो और मानते हो कि मृत्युके पश्चात् मनुष्यका अस्तित्व नहीं रहता, इसलिये तुम्हारा इस प्रकार अनुभव करना तुम्हारे विश्वासके अनुकूल नहीं। इसपर वह उत्तर

देता था कि—यह है तो व्यर्थ परन्तु मुझे ऐसा अनुभव होता है और यह अनुभव मेरी सब युक्तियोंसे अधिक प्रवल है।"

जी० एच० व्हाइट (G. H. Whyte) अपनी पुस्तक (Reincarnation) में एक अंग्रेज़ फ़ौजी अफ़सरका ज़िकर करता है जिसने उसे बताया था कि—मैं पहली बार योरपके एक शहरमें गया वहां मुझे मालूम होता था कि मैंने पहले भी इसे देखा हुआ है और इस शहरके सब मार्ग मुझे ज्ञात थे, यह सब देखकर मैं बहुत चकित हुआ।

इस प्रकारकी घटनाओंको अंग्रेज़ीमें 'दी औलरेडी सीन' (The Already Seen) का नाम दिया जाता है। अगर मान लिया जाय कि इनका कारण किसी पूर्वजन्मकी घटनाओंका अचानक याद आजाना है तो इनमें कोई आश्चर्यकी बात नहीं रहती। इस जन्ममें भी हम देखते हैं कि किसी पहले देखी हुई चीज़को फिर देखकर हम पहिचान लेते हैं अर्थात् पहली बार इसे देखनेकी स्मृति ताज़ी हो जाती है। इसी तरह यदि एक ही आत्मा विविध जन्मोंमें से गुज़रती है तो किसी पहले जन्ममें देखी हुई चीज़को दूसरे जन्ममें देखकर पहिचान लेना ऐसाही स्वाभाविक प्रतीत होता है, जैसा इसी जन्ममें देखी हुई चीज़को पहिचान लेना। इस प्रकार ये घटनाएं स्मृतिके एक माने हुए नियमके उदाहरण बन जाएंगी। लेकिन यदि पुनर्जन्मको न माना जाए तो ये अवश्य विचित्र मालूम होंगी।

आजकलके वैज्ञानिक इन घटनाओंका जो कारण बताते हैं, वह मानने योग्य नहीं। वे कहते हैं कि स्मृतिका आधार मस्तिष्क है।

मस्तिष्कमें दो गोलार्द्ध हैं। ये गोलार्द्ध प्रायः इकट्ठे काम करते हैं, परन्तु कभी कभी एक गोलार्द्ध दूसरेसे ज़रासी देर बाद काम करता है। एक गोलार्द्ध ज़रा पहले देख लेता है तो दूसरे गोलार्द्धको देखकर प्रतीत होता है कि पहले भी देखा हुआ है। यहां प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि दोनों गोलार्द्ध अलग-अलग किस तरह काम करने लग जाते हैं? अगर दोनों गोलार्द्धोंके इकट्ठा काम करनेका परिणाम देखना है तो एक गोलार्द्ध कैसे देख सकता है? अगर प्रत्येक अलग देख सकता है तो दोनोंके देखे हुएको एक समझने वाला दोनोंसे अतिरिक्त कोई अन्य ही होना चाहिये, अन्यथा हर हालतमें एकके स्थानपर दो चीज़ें दिखाई देनी चाहियें। यदि एकके देखे हुए की खबर दूसरेको भी अपने आप हो जाती है तो एकके देखनेसे जब दोनोंने इकट्ठा देख लिया, फिर गोलार्द्ध केन्द्रके पीछे देखनेका कोई अर्थ नहीं।

यह बात भी समझमें नहीं आती कि स्मृतिका आधार मस्तिष्क होता है। यदि मस्तिष्कपर चीज़ें इसी तरह अङ्कित हो जाती हैं जैसे फ़ोटोग्राफ़के कैमरेमें चित्र छप जाता है तो किसी मनुष्य या वस्तुकी उतनीही तरह की स्मृतियां होनी चाहियें जितनी तरहसे और जितनी दिशाओंसे उसे देखा गया है। यह तो स्पष्ट है कि आगे पीछे अथवा दांए बांएसे देखनेसे पदार्थ की आकृति भिन्न-भिन्न दिखाई देती हैं। वेश भूषा, आयु, सर्दी गर्मी तथा प्रसन्नता और उदासीसे भी आकृतिमें परिवर्तन हो जाता है, परन्तु हमारे अन्दर किसी वस्तु या मनुष्यकी एकही स्मृति होती है। इस विषय पर अधिक विवाद करनेसे हम पुस्तकके क्षेत्रसे बाहर चले जाएंगे। कहनेका अभिप्राय यही है कि विज्ञानकी

उपर्युक्त कल्पना ठीक नहीं प्रतीत होती। इसी तरह इन घटनाओंके सम्बन्धमें जो अन्य कल्पनाएँ वैज्ञानिकोंने प्रस्तुत की हैं वे भी केवल शब्दाडम्बरमात्र हैं। इन सबके विरुद्ध एक बड़ा आक्षेप यह है कि जिन अवस्थाओंमें एक वस्तुको देखकर दूसरी याद आ जाती है (जैसे वेटिंगरूमको देखकर खिड़कीके बाहर की गांठ और पुस्तकालयको देखकर एक विशेष पुस्तक, जिनका ऊपर ज़िकर किया गया है) ये कल्पनाएँ उनकी व्याख्या करनेका प्रयत्न भी नहीं करतीं। इनका दावा केवल उन हालतोंतक सीमित है जिनमें किसी चीज़को देखकर मालूम होता है कि इसे पहले भी देखा हुआ है, और इन हालतोंमें भी ये इस खयालको कि इसे देखा हुआ है, धोका समझती हैं। अगर यह खयाल धोका ही हो तो इसका क्या कारण है कि ऐसी चीजें भी याद आ जाती हैं जो उस समय दिखाई नहीं दे रहीं ? और यह याद सच्ची सिद्ध होती है, अर्थात् ढूंडनेपर वे चीज़ें सचमुच वहां मिल जाती हैं। पुनर्जन्मको माननेसे ये सब बातें सरलतासे समझमें आजाती हैं, क्योंकि तब ये स्मृतिके उसी सामान्य नियमके अनुकूल हो जाती हैं जिसे हम नित्यप्रति जीवनमें काम करता हुआ देखते हैं; अर्थात् दो वस्तुओंको यदि हम एक साथ देखें तो फिर एकके देखनेपर दूसरी भी याद आजाती है। दो आदमियोंको प्रायः इकट्ठा देखें तो फिर एकको अकेला देखकर दूसरा भी याद आता है। इस तरह किसी पहले जन्ममें किसी पुस्तकालयमें किसी पुस्तकको कई बार देखा है तो फिर दूसरे जन्ममें पुस्तकालयको देखकर उस पुस्तकका याद आ जाना बिलकुल स्वाभाविक प्रतीत होता है।

२

प्रत्येक बच्चा और प्रत्येक मनुष्य अपनी प्रकृति तथा स्वभावमें दूसरोंसे भिन्न होता है और ये भेद जन्मके आरम्भसे ही पाये जाते हैं। ऐसे बच्चे जिन्हें पैदा हुए अभी कुछ घण्टे ही हुए हैं, उनमें भी कई तेज़ होते हैं और कई धीमे। कइयोंकी चेष्टाओंसे आग्रह और कलह की प्रकृति प्रकट होती है, तो दूसरोंमें विनय और शील दिखाई देता है। ज्यों ज्यों बच्चा बढ़ता है, ये विशेषताएँ भी दृढ़ होती जाती हैं, यद्यपि आगामी जीवनके अनुभवसे इनमें परिवर्तन भी हो सकता है। बच्चों में रुचि और स्वभावके भी भेद होते हैं। कइयोंको एक चीज़ पसन्द आती है तो दूसरोंको कुछ और। कई दयालु होते हैं तो कई कठोरहृदय। कुछ नफ़ासतपसन्द होते हैं और कुछ भद्दे। स्कूल में जाकर कुछबच्चों को गणितका शौक़ होता है तो दूसरे इस विषयसे घृणा करते हैं। उन्हें भूगोल या इतिहास पसन्द होता है। कुछ सङ्गीतके शौक़ीन होते हैं तो दूसरे चित्रकलाके। यह भेद एकही घरानेके और एक ही मां-बापके बच्चोंमें भी होते हैं। जिस विषय का बच्चेको शौक़ होता है उसमें वह बहुत शीघ्र उन्नति करता है। ऐसा मालूम होता है मानो वह किसी थोड़ीसी देर की भूली हुई चीज़को फिर याद कर रहा है। जिस विषयका बच्चेको शौक़ न हो उसमें कठिन परिश्रम करके भी वह पर्याप्त सफल नहीं होता।

कई वैज्ञानिक बच्चोंके इन भेदों-का कारण यह बताते हैं कि मां-बापके गुण बच्चोंमें आ जाते हैं और जिन परिस्थतियोंमें बच्चोंका भरणपोषण होता है, उनका असर बच्चोंपर पड़ता है; इसलिये मां-बापके गुण

अथवा संस्कार (Heredity) और परिस्थितियों (Environment) के भिन्न-भिन्न होनेसे बच्चोंके गुण और स्वभाव भी भिन्न-भिन्न हो जाते हैं।

परन्तु ये कारण पर्याप्त नहीं प्रतीत होते क्योंकि एक ही घरमें पले हुये एक ही माँ-बापके बच्चोंमें भी ये भेद पाये जाते हैं और कईबार देखा जाता है कि मूर्ख मां-बापके बच्चे दारिद्रय और अज्ञानमें पलकर भी विद्याप्रेमी और विद्वान् होते हैं और विद्वान् मां-बापके बच्चे उत्तम परिस्थितिथोंमें पलकर भी निरे मूर्ख और मन्दबुद्धि होते हैं। इसके अतिरिक्त कई असाधारण बुद्धि और योग्यता रखने वाले बच्चे होते हैं जिन्हें अंग्रेज़ीमें 'जीनियस' (Genius) कहते हैं और बहुत सी हालतोंमें मां-बापके संस्कार और भरण-पोषण की परिस्थितियोंसे ज़रा भी समझ नहीं आ सकता कि ये ऐसे क्यों हैं :—

ओविडको बचपनमें ही कविताका शौक़ था, उसके मां-बाप बहुत अड़चनें डालते थे परन्तु उसकी तबीयत अपने शौक़से न टली, और वह बड़ा प्रसिद्ध कवि बन गया। पोपका भी यही हाल था। इंग्लैण्डका राजकवि लॉर्ड टैनिसन जब चार वर्षका था, बाग़में फिर रहा था। हवा तेज़ चल रही थी जिससे उसके लिये खड़ा रहना मुश्किल हो रहा था, उस समय उसके मुँहसे एक पद्य निकल गया—"I hear a voice that whispers in the wind."

पास्कलको बचपनमें ही उसके मां-बापने अङ्कगणित और रेखागणित पढ़ने से मना किया। उसने अपने पितासे प्रार्थना की कि—मुझे बतला तो दीजिये कि वह कौनसी विद्या है जिसके पढ़ने से आप मुझे

मना कर रहे हैं। पिताने उत्तर दिया कि यह वह विद्या है जिसके द्वारा शुद्ध आकृतियां बना सकते हैं और उनमें आपस में अनुपात ढूँढ सकते हैं। इस छोटेसे उत्तरपर पास्कल विचार करता रहा और लुक-छिपकर आकृतियां बनाकर उन्हें ध्यानसे देखता रहा। परिणाम यह हुआ कि बारह वर्षकी आयुतक उसने बिना किसी पुस्तक अथवा अध्यापककी सहायताके तीस साध्य (Propositions) बनाये जो उक्लैदस (Euclid) के पहले तीस साध्य ही थे।

मोज़र्ट (Mozart) ने तीन वर्ष की उम्र में अपनी बहनको एक बाजा (Clavecin) बजाते देखकर ही बजाना सीख लिया। चार बरस की उम्रमें वह कविता किया करता था। सात वर्षकी आयुमें पहली बार उसने एक वॉयलिन (Violin) देखी और देखते ही उसे बजाना आरम्भ कर दिया। बारह बरसकी उमरसे पहले ही वह उच्च कोटिकी कविता किया करता था।

कई साल हुये स्पेनमें पैपिटो ऐरोला (Pepito Ariola) नामक एक छोटेसे लड़केने तीन वर्षकी आयुमें पियानो बाजा बजाकर वहाँके सारे दरबारको चकित कर दिया।

❀ ऐडिनबराका रहने वाला बैंजामिन नामक एक लड़का जब छः बरसका था तो एक दिन अपने बापके साथ जा रहा था। अचानक उसने अपने बापसे पूछा कि मैं किस समय पैदा हुआ था। उत्तर मिला—प्रातः चार बजे। पूछा—अब क्या समय है? उत्तर मिला—सात बजकर पचास मिनिट। फिर एक सौ क़दम चलकर लड़का कहने

❀ (१) Human Personality by myers.

लगा--मुझे पैदा हुये इतने सैकण्ड हुए। बापने घर जाकर काग़ज़पर लिखकर हिसाब किया और कहा कि--तुम्हारे हिसाबमें १७२८०० सैकण्ड अधिक हैं। लड़केने जवाब दिया--आपने हिसाबमें १८२० और १८२४ के लीपके सालोंके दो दिन छोड़ दिये हैं। वस्तुतः बात भी यही थी।

❀ वाइटो मैञ्जियामील (Vito Mangiamele) सिसलीके एक गडरियेका लड़का था। उस-के मां बाप उसे किसी प्रकारकी शिक्षा न दे सके थे। उसने सन् १८३७ में १० साल और चार महीनेकी उमरमें पैरिसके विद्वानों की ऐकेडमी (Academy) नामक सभाको अपनी हिसाब की शक्ति से आश्चर्य-निमग्न कर दिया। उससे पूछा गया कि—३७६६४१६ का घनमूल (Cube root) क्या है ? आधे मिनिटमें उसने बताया १५६, जो बिलकुल ठीक है—फिर पूछा गया कि २८२४७५२४६ का १०वां मूल क्या है ? थोड़ी देरमें उसने जवाब दिया—सात। इसी तरह उसने अन्य प्रश्नोंके भी सही जबाब दिये। ● रैम्ब्रैण्ट (Rembrandt) जब पढ़ना भी न सीखा था चित्र बना सकता था।

इन्हीं दिनों २७ मई १६३५ को लाहौरके दैनिक उर्दू समाचार-पत्र प्रतापमें निम्न लिखित समाचार प्रकाशित हुआ है:---

"लाहौर छावनी १८ मई—मास्टर अमरनाथ कपूरके छोटेसे लड़के नरेन्द्रनाथने जिसकी उमर साढ़े चार साल बताई जाती है, आर्य-

❀ Human personality by majers

● Human Personality by myers

समाज के वार्षिकोत्सवमें दो रजतपदक प्राप्त किये हैं, ये पदक रागविद्याके सम्बन्धमें दिये गये हैं। लड़का सब राग अच्छी तरह गा सकता है।"

'इण्डियन रिव्यू' (Indian Review) के नवम्बर १९२६ के अङ्कमें गणित विजयमें अद्भुत प्रतिभासम्पन्न व्यक्ति श्री सुमेशचन्द्र दत्तके हालात प्रकाशित हुए थे। हम इनमेंसे कुछ अपने सम्बन्धकी बातें यहां संक्षेपसे लिखते हैं:—

"सुमेशचन्द्रदत्त बंगालके जिला ढाकाका रहने वाला है, जब उसकी आयु आठ सालकी थी तो स्कूलमें इन्स्पैक्टरने उसकी श्रेणीको गुणाका एक मौखिक प्रश्न दिया जिसे केवल उसीने हल किया। इससे पहले पहल उसे अपनी शक्तिका अनुभव हुआ। इस घटनाके दो ही महीने बाद सुमेशचन्द्रदत्त १४ अङ्कोंकी राशियोंको १४ अङ्कोंकी राशियोंसे मौखिक गुणा कर सकता था। फिर वह क्रमशः उन्नति करके २०, ३०, ४०, ७०, ८०, ९० अङ्कोंतक पहुँचा, और अन्तमें १०० अङ्कोंकी राशिको १०० अङ्कोंकी राशिसे मौखिक गुणा करने लगा। उसने पाश्चात्य देशोंमें भ्रमण करके अपनी शक्तिका प्रमाण वहांके विद्वानोंके सामने दिया। जब वह इङ्गलैण्डमें गया तो उस देशके विद्वान् और बड़े-बड़े लोग उसे देखनेके लिये इकट्ठे हुये। उसे एक सवाल दिया गया जिसमें ४० अङ्कोंकी एक राशिको ४० अङ्कोंकी एक और राशिके साथ गुणा करना था। उसने २५ मिनिटमें इस सवालको मौखिक हल कर दिया। फिर उससे बड़ी-बड़ी राशियोंके वर्गमूल (Square Root) घनमूल (Cube

Root) और १५वें मूलतक पूछे गये। प्रत्येक सवालका जवाब उसने एक सैकण्डमें दिया। फिर उससे अन्य प्रकारके सवाल पूछे गये। अंग्रेज़ी कैलेण्डरके अनुसार किसी अतीत या आगामी शताब्दीके किसी सालकी कोई तिथि बता दी जाती थी और पूछा जाता था कि इस तिथि-को सप्ताहका कौनसा दिन था। सुमेशचन्द्रदत्तने प्रत्येक सवालका एक सैकण्डमें सही जवाब दिया। अमरीकामें सुमेशचन्द्रदत्तने कोलम्बिया यूनिवर्सिटी तथा अन्य कई यूनिवर्सिटियोंमें अपनी असाधारण शक्तिका प्रकाशन किया। न्यूयार्कके एक उत्सवमें जहां आबादीकी प्रत्येक श्रेणी-के प्रतिनिधि उपस्थित थे, उसे ६० अङ्कोंका ६० अङ्कोंके साथ गुणा करनेका एक प्रश्न दिया गया। उसने ४५ मिनटमें इसे मौखिक हल किया। इस सवालको पहले एक पी० ऐच० डी० गणितके प्रोफेसरने लिखकर हल किया था। सुमेशचन्द्रदत्तका जवाब उसके जवाबके साथ न मिला तो समझा गया कि सुमेशचन्द्रदत्तका जवाब ग़लत है। प्रोफ़ेसर ने कहा कि मैंने दो घण्टे रोज़ खर्च करके एक हफ़्तेमें इस सवालको किया है, मेरा जवाब ग़लत नहीं हो सकता। सुमेशचन्द्रदत्तने सवाल-को फिर मौखिक हल किया और कहा कि मेरा पहला जवाब सही है। इसपर और अधिक जांचकी गई, तो मालूम हुआ कि सुमेशचन्द्रदत्तका जवाब सही था और प्रोफ़ेसरका हल जो उसने लिखकर किया था १६ स्थानोंपर ग़लत था! फिर उसने राशियोंके २५वें मूलतक एक सैकण्डमें बताए। उससे तिथियोंके सवाल पूछे गये, किसी सदीकी किसी तिथिको कौनसा दिन था या किसी विशेष दिन कौनसी तिथि थी, हर हालतमें वह एक सैकण्डमें सही जवाब देता था।

अमरीकाके अखबारोंने सुमेशचन्द्रदत्तके लिये इस प्रकारके शब्द प्रयुक्त किये—'दिमाग़ी जादूगर', (Mental Wizard) 'मैशीनका प्रतिद्वन्दी', (Machine's Rival) 'विद्युत की तरह जल्दी हिसाब करने वाला'; (Lightning Calculator) 'मनुष्य रूपमें हिसाबकी मैशीन' (Human Ready Reckoner)! कई लोगोंने कहा कि सुमेशचन्द्रदत्त वस्तुतः हिसाब नहीं करता बल्कि जादूसे जवाब मालूम कर लेता है । इसलिये उससे इस प्रकारके प्रश्न किये गये— तुम्हारी गुणा की ४७वीं पंक्तिमें बांई ओरसे ३९वां अङ्क क्या है ? इन सबके भी उसने ठीक उत्तर दिये ।"

सुमेशचन्द्रदत्त ज़िला मैमनसिंहमें थियेटरोंमें अपने दिन बिता रहा था जब भावी पत्नीसे उसकी मुलाक़ात हुई और फ़ौरन शादी हो गई। पति पत्नीका आपसमें असीम प्रेम था। पत्नी की मृत्युकी वर्षगांठ सुमेश-चन्द्रदत्त प्रतिवर्ष एक सप्ताहका उपवास रखकर मनाता है । पत्नीकी आत्मिक उन्नति असाधारण थी।

सुमेशचन्द्रदत्तको हमने स्वयं देखा है और हम अपने प्रत्यक्ष अनु-भवके आधारपर कह सकते हैं कि उसमें वे सब शक्तियां विद्यमान हैं जिनका ऊपर ज़िकर किया गया है। उपर्युक्त वर्णनसे स्पष्ट है कि उसने क्रमशः परन्तु थोड़े ही अरसेमें गणितमें आश्चर्यजनक उन्नति करली। क्या इस प्रकारकी उन्नति ऐसी नहीं मालूम होती जैसे कोई किसी ऐसे विज्ञान या कलामें थोड़ेही समयमें पूर्ण प्रवीणता प्राप्त कर लेता है जिसे उसने पहले अच्छी तरह सीख लिया हो, लेकिन जिसे ध्यान न देनेसे कुछ अंशोंमें भूल गया हो।

असाधारण योग्यताका कारण पैतृक संस्कार और परिस्थितियां नहीं हो सकतीं। यह ऊपर के दृष्टान्तोंसे स्पष्ट है। बहुतसी हालतोंमें मां बाप या किसी पूर्वजमें वे गुण विद्यमान नहीं होते और परिस्थितियां प्रतिकूल होती हैं, मगर फिर भी किसी बच्चेमें विशेष उच्च कोटिकी योग्यता प्रगट हो जाती है। यदि उसका कारण परिस्थितियां तथा मां बाप और अन्य पूर्वजोंके संस्कार हों तो एक साथ भरणपोषण पानेवाले सब भाई बहनोंमें वह योग्यता प्रगट होनी चाहिये। लेकिन कई हालतोंमें ऐसा नहीं होता। शेक्सपीअरका कौनसा पूर्वज कवि और बुद्धका कौनसा पूर्वज महात्मा था? अगर पुनर्जन्मको मान लिया जाय तो ये घटनाएं आसानीसे समझमें आजाती हैं, अर्थात् ये असाधारण योग्यताके लोग वे हैं जिन्होंने किसी अपने पूर्वजन्ममें परिश्रमसे कोई विद्या प्राप्त की है और उसकी स्मृति इनमें इस जन्ममें भी विद्यमान है। इससे यह भी समझमें आजाता है कि बच्चोंकी प्रवृत्तियां और रुचियाँ भिन्न भिन्न क्यों होती हैं। जिसने पूर्वजन्ममें गणितपर परिश्रम किया है उसे अब गणितमें रुचि है, और जिसने पहले गायन का अभ्यास किया है उसे गाने की रुचि है। इस जन्ममें भी हम देखते हैं कि जो एक बार किसी विद्यामें परिश्रम करके उसमें योग्यता प्राप्त करले उसे उसमें विशेष आनन्द आने लगता है और उस विद्याका उसे शौक़ होजाता है। एक बार प्राप्त की हुई योग्यता हमेशा तक रहती है। अगर समय बीतनेसे कुछ अंशोंमें भूल जाय तो ज़रासी कोशिश करनेसे फिर ताज़ी हो जाती है। अभिप्राय यह है कि पुनर्जन्मको मान लेनेसे असाधारण योग्यता और बचपनसे ही स्वभाव और प्रवृत्तिके भेद ऐसे

नियमके उदाहरण बन जाते हैं जिसे हम प्रत्येक मनुष्यके जीवनमें काम करता हुआ देखते हैं । इस तरह ये घटनाएं असाधारण न रह कर बिल्कुल स्वाभाविक मालूम होने लगती हैं ।

ऐसा भी देखा जाता है कि असाधारण योग्यता कईबार कुछ समय-तक रहकर लुप्त हो जाती है । पुनर्जन्म के सिद्धान्तके अनुसार इसका यह अभिप्राय है कि इस जन्ममें ये असाधारण मनुष्य पुराने संस्कार लेकर आते हैं, लेकिन अगर इन्हें क़ायम रखने और ताज़ा करनेके लिये इस जन्ममें कुछ न किया जाय या परिस्थितियां प्रतिकूल हों, तो ये लुप्त भी हो जाते हैं । यह बात भी एक माने हुऐ नियमके अनुसार ही है । इस जन्ममें यदि हम कोई चीज़ सीखें और फिर सर्वथा उसका अभ्यास छोड़ दें तो वह भूल भी जाती है । जिस आदमीने ऐण्ट्रेंसमें दो सालतक बीजगणित पढ़ी हो और फिर उमर भर उसे कभी न देखा हो तो शायद तीस सालकी उमरमें उसे कुछ याद होगा मगर अस्सी बरस-की उमरमें बहुत कुछ भूल चुका होगा ।

साथ ही हम यह भी देखते हैं कि लोगोंकी स्मृति-शक्तिमें अन्तर होता है । कुछ लोग किसी चीज़को याद तो आसानीसे और अच्छी तरह कर लेते हैं मगर वे बहुत देरतक याद नहीं रख सकते । इसके विपरीत ऐसे भी लोग हैं जिन्हें अगर एक चीज़ एक बार अच्छी तरह याद हो जाय तो उमर भर याद रहती है और बहुत कम भूलती है । यदि पुनर्जन्मको मान लिया जाय तो पहले प्रकारके लोगोंको एक जन्मकी समाप्तिके निकट जो चीज़ खूब याद हो वह आगामी जन्ममें थोड़े समय तक याद रहेगी और अगर उसे ताज़ा रखनेके लिये कुछ न किया जाय

तो वह भूल जायगी, जैसा कि इस जन्ममें ऐसी ही अवस्थाओंमें भूल जाती है।

३

कई बार ऐसा होता है कि एक ही नया सिद्धान्त या सचाई दो समान शिक्षा और बुद्धिवाले व्यक्तियोंको बताई जाय, तो एक झट समझ जाता है, दूसरा नहीं समझ सकता। फिर उन्हीं दो व्यक्तियोंको कोई और नया सिद्धान्त बताया जाय तो हालत बिलकुल बदल जाती है। इस बार पहला नहीं समझता और दूसरा झट समझ जाता है। इस फ़र्क़की वजह क्या है? अगर मान लिया जाय कि जिस सिद्धान्तको जिसने फ़ौरन ही समझ लिया है वह उससे पूर्वजन्ममें परिचित था तो वजह साफ़ समझमें आ जाती है। संसारका प्रसिद्ध दार्शनिक अफ़लातून अपने ज्ञानको पूर्वजन्मके अध्ययनका परिणाम मानता था। कपिल मुनिके विषयमें प्रसिद्ध है कि उसे पूर्वजन्मसे ही चारों वेद याद थे।

४

कई लोग केवल एक घटनाको देख कर किसी सार्वजनिक नियमका पता लगा सकते हैं जबकि दूसरे लोग उससे कुछ भी शिक्षा ग्रहण नहीं करते। कई लोग किसी कष्टमेंसे गुज़रकर बहुत अनुभव प्राप्त कर लेते हैं और दूसरे लोगोंके दुःखोंसे सहानुभूति कर सकते हैं लेकिन दूसरे ऐसे अनुभवोंसे ज़रा भी फ़ायदा नहीं उठाते। इस फ़र्क़की कोई वजह होनी चाहिये। अगर मान लिया जाय कि जो लोग एक ही बारके अनुभवसे लाभ उठाते हैं उन्हें पिछले जन्मोंमें भी इस प्रकारके अनुभव हो चुके हैं तो फ़र्क़की वजह साफ़ समझमें आ-

जायगी; क्योंकि कई बारके अनुभवसे लाभ उठाना या नियम स्थिर करना इस जन्ममें भी कोई असाधारण बात नहीं है। कुछ भद्र और सुशील स्त्रियां जिन्हें पापका कुछ भी अनुभव नहीं, अपने बालकोंको पापके विरुद्ध बहुत उत्तम सम्मति दे सकती हैं, जबकि और स्त्रियां ऐसा नहीं कर सकतीं। कहा जाता है कि इसका कारण एक विशेष प्रकारकी अन्तर्दृष्टि है (Intuition) लेकिन किसी चीज़को कोई नाम दे देनेसे उसका कारण मालूम नहीं हो जाता। यदि पूर्वजन्मोंका अनुभव मान लिया जाय तो यह शक्ति स्वभाविक प्रतीत होने लगती है।

५

कई लेखकोंमें दूसरोंके भावों और विचारोंको समझनेकी विशेष योग्यता होती है, यद्यपि इस जन्मका वैयक्तिक अनुभव उन्हें इस बातमें कुछ भी सहायता नहीं दे सकता। कई आदमी पुरुषका स्वभाव रखते हुए भी स्त्रियोंके मनोगत भावों और विचारोंका उत्तम रीतिसे चित्रण करते हैं। अंग्रेज़ीके एक लेखक विलियम शार्पके बारेमें कहा जाता है कि उसका स्वभाव बिलकुल पुरुषकासा था लेकिन स्त्रियोंका सा नाम (Fiona Meleod) रख कर सर्वथा स्त्रियोंकी तरह लिखता था। शेक्सपीयरके विषयमें प्रसिद्ध है कि वह अपने नाटकोंमें प्रत्येक पात्रका ऐसा उपयुक्त चित्रण करता है मानो वह स्वयं उसका सा अनुभव प्राप्त कर चुका हो। उसने अनेक नाटक लिखे हैं और इस लिये सैकड़ों प्रकारके लोगों और शतधा परिवर्तित होते हुए स्वभावोंका चित्र खींचा है। यही बात कालिदासके सन्बन्धमें कही जा सकती है। इतने विविध प्रकार के विचारों, भावों और स्वभावोंको समझ सकनेका

कारण क्या है ? अगर मान लिया जाय कि पूर्वजन्मोंमें इन लोगोंने विविध प्रकारका अनुभव प्राप्त किया था तो इनकी असाधारण योग्यता-की व्याख्या हो सकती है। जिस तरहके आचार या मानसिक अवस्था-का ये वर्णन करना चाहते हैं उसके अनुकूल विचार और भाव इनके मनमें आ जाते हैं क्योंकि ये स्वयं इनमेंसे गुजर चुके हैं।

६

एक अन्य प्रकारकी घटनाओंकी व्याख्या, पुनर्जन्मको मानकर बड़ी अच्छी तरह हो सकती है। कई लोगोंमें दो तरहके स्वभाव पाए जाते हैं, इन स्वभावोंमें पारस्परिक संग्राम होता है (Divided Self or Heterogeneous Personality) उदाहरणार्थ, श्रीमती ऐनी बेसैण्ट अपने जीवन-चरित्रमें लिखती है कि—

"पहले मैं निर्बलता और शक्तिका संग्राम थी। बचपनमें मेरी जूतीका तस्मा खुला होता तो मुझे बहुत शर्म आया करती थी। जब मैं गृहिणी बनी तो अपने नौकरोंसे डरा करती थी। नौकरको भर्त्सना करनेके स्थानपर इस बातको सहन कर लेती थी कि काम न हो या बुरी तरह हो। होटलमें चाहे नौकरकी कितनी भी ज़रूरत होती परन्तु मैं घण्टी बजाकर उसे बुलाते हुए डरती थी। लेकिन इन्हीं दिनों व्याख्यान देनेमें मैं बड़ी ज़बर्दस्त और बहादुर थी। प्लेटफ़ॉर्मपर जितना ही मेरा विरोध होता उतनाही मैं अधिक अच्छा बोलती थी।"

कई लोगोंकी इच्छाओंका आपसमें विरोध होता है। एक प्रकारकी इच्छा एक तरफ़ आकृष्ट करती है तो दूसरी प्रकार की किसी और तरफ़। बुद्धि एक ओर जाती है तो भावनाएँ दूसरी ओर। उपनि-

षदोंमें इस अवस्थाको देवासुर संग्रामका नाम दिया गया है। कई लोगों के इरादे बहुत अच्छे होते हैं लेकिन काम बहुत निन्दनीय और खराब। कई हालतों में यह आन्तरिक संग्राम सीमाको पार करजाता है। उदाहरणार्थ, प्रसिद्ध ईसाई महात्मा बनियन के (Bunyan) दिलमें दिनमें अनेक बार यह आता था कि इस चीजके लिये ईसाको छोड़ दूँ, उस चीज़के लिये ईसाको छोड़ दूं ? और हर बार वह जवाब में कहता था, "मैं नहीं छोड़ूंगा, मैं नहीं छोड़ूंगा"। दो विरोधी स्वभावोंमें पारस्परिक कलह होता था और कई बार यह प्रश्नोत्तर एकदम सौ-सौ बार हो जाता था, जिससे बनियन हांप जाता था। अब प्रश्न यह है कि एक ही मनुष्यके अन्दर इस प्रकारके विभिन्न और विरोधी स्वभावों और इच्छाओंका कारण क्या है ?

पुनर्जन्म इसका एक बहुत युक्तियुक्त उत्तर दे सकता है। नाना जन्मोंमें विविध प्रकारके अनुभवके कारण आत्मामें विविध इच्छाएँ उत्पन्न होती रहीं। इस जन्ममें इन सबके संस्कार विद्यमान हैं। इनमेंसे कई आपसमें विरोधी होनेके कारण मनुष्यको भिन्न-भिन्न दिशाओंकी ओर आकृष्ट करते हैं। उपर्युक्त संग्रामके अतिरिक्त मनुष्यके स्वभावमें एक परिवर्तन भी आता रहता है। एक ही मनुष्य किसी समय बहादुर होता है तो किसी समय डरपोक। किसी हालतमें उदार होता है तो किसीमें अनुदार। किसी वक्त बेपरवा होता है तो किसी और वक्त बड़ा सावधान। आजकल मनोविज्ञान इन परिवर्तनोंको स्वीकार करता है और इन सामयिक अवस्थाओंको 'मूड' (Moods) का नाम देता है। इनके अतिरिक्त कुछ अधिक स्थिर परिवर्तन भी होते हैं, जैसे कई लोग

बचपनमें निर्दय और क्रूर होते हैं, ज़रा बड़े होकर लड़ाके हो जाते हैं और पूर्ण यौवन प्राप्त करके सभ्य और विनम्र बन जाते हैं। इन सब प्रकारके परिवर्तनोंका कारण यह हो सकता है कि अनेक जन्मोंके भिन्न-भिन्न प्रकारके संस्कार (Subconscious Memories) आत्मामें हैं। इनमेंसे कभी कोई जागकर प्रबल हो जाता है तो कभी कोई और।

उपर्युक्त सामयिक परिवर्तनोंके अतिरिक्त कई बार नित्य परिवर्तन भी मनुष्यके जीवनमें हो जाते हैं:—कहते हैं कि वाल्मीकि पहले लुटेरा था। एक बार महात्माओंपर हमला कर रहा था, उन्होंने उसे उपदेश दिया। बाल्मीकिके दिलपर ठेस लगी और फिर वह जीवनभरके लिये सदाचारी ही नहीं, बल्कि ऋषि बन गया। इसी तरह ध्रुवका उसकी सौतेली मांने अपमान किया तो वह हमेशाके लिये तपस्वी बन गया। आधुनिक मनोविज्ञान शास्त्र ऐसे परिवर्त्तनोंको स्वीकार करता है।

प्रोफ़ेसर जेम्स अपनी पुस्तक (Varieties of Religious Experience) में एक आदमी का उदाहरण देता है जिसने बहुतसी सम्पत्ति अपने पितासे उत्तराधिकारमें पाई थी और फ़ज़ूल खर्चीमें सब नष्ट कर दी थी। जब वह दरिद्र हो गया तो अपने झूठे मित्रोंकी कृतघ्नता देखकर उसके मनपर बहुत चोट लगी। एकदमसे वह कृपण और परिश्रमी हो गया और लगातार प्रयत्न करनेसे फिर अमीर बन गया। कई दुराचारी मनुष्योंमें सहसा परिवर्तन हो जाता है और वे सदाचारी और महात्मा बन जाते हैं। इसे मनोविज्ञान 'कायापलट' (Conversion) का नाम देता है।

अब समस्या पैदा होती है कि यह नया स्वभाव कहांसे आ जाता है ? एक प्रकारका स्वभाव सम्पूर्ण जीवनके अनुभव और अभ्यासका परिणाम होता है । इसीके अनुसार सामर्थ्य और योग्यताएँ बनी होती हैं। वे सहसा कैसे नष्ट हो जाती हैं और उनके स्थानपर नया स्वभाव और उसके अनुसार योग्यताएँ और विशेषताएँ कहांसे आ जाती हैं ? उदाहरणार्थ लुटेरा बननेके लिये विशेष प्रकारकी शक्तियां और योग्यताएँ थीं जो वाल्मीकिके जीवनके अभ्यासका परिणाम थीं। ऋषि बननेके लिये भिन्न प्रकार की योग्यताएँ और शक्तियां आवश्यक हैं, जैसे तपस्या, ज्ञान आदि। वे बिना अनुभवके एकदम कैसे आ गईं ? यह कहना बिल्कुल व्यर्थ होगा कि वाल्मीकिको लुटेरेपनसे घृणा हो गई, इसलिये ऋषित्व स्वयं उसमें प्रविष्ट हो गया, क्योंकि लुटेरा न होना और ऋषि होना एक ही बात नहीं है । संसारमें कितने मनुष्य हैं जो लुटेरे नहीं हैं परन्तु ऋषि भी नहीं हैं ।

पुनर्जन्मके माननेसे इस प्रकारके परिवर्तनका युक्तियुक्त कारण मिल जाता है, अर्थात् वर्तमान जीवनके अनुभव और अभ्यासका परिणाम डाकूका स्वभाव और शक्तियां थीं तो किसी पूर्वजन्मके अनुभव और अभ्यासका परिणाम ऋषिका स्वभाव और शक्तियां थीं, जो संस्कारोंके रूपमें आत्मामें पहलेसे ही विद्यमान थीं, लेकिन वर्तमान जन्मके विरोधी कार्योंके कारण दबी हुई थीं। ज्यों ही ठेस लगनेके कारण वर्तमान जन्मकी प्रवृत्तियां ढीली हुईं, ऋषि-स्वभाव आविर्भूत हो गया। जैसे किसीके दो वेश हों, एक ऊपर और एक नीचे। जबतक ऊपरका वेश पहिना हुआ हो, नीचेका

छिपा रहता है। जब ऊपरका ज़रा उतर जाए तो नीचेका प्रगट हो जाता है।

७

साधारणतया यह माना जायगा कि आध्यात्मिक दृष्टिसे उन्नत पुरुषोंमें सत्य जाननेकी विशेष योग्यता होती है। वे सत्यको युक्ति और तर्कसे नहीं जानते, प्रत्युत उन्हें किसी अद्भुत शक्ति द्वारा सत्यका इस तरह प्रत्यक्ष होता है जैसे साधारण लोगोंको संसार की वस्तुओंका, जिन्हें देखकर इनके अस्तित्वके सम्बन्धमें किसी प्रकारका सन्देह करना असम्भव हो जाता है। पुनर्जन्मके पक्षमें एक प्रबल युक्ति यह है कि प्रत्येक युगमें सुविख्यात और आध्यात्मिकरूपसे उन्नत व्यक्ति इसकी साक्षी देते रहे हैं। उदाहरणके लिये भारतवर्षके योगी पुरुष, सुक़रात, अफ़लातून, प्लॉटिनस, ऐपोलोनियस, (Apollonius of Tyana) इमर्सन, वॉल्ट ह्विटमैन (Walt Whitman) आदिका उल्लेख किया जा सकता है।
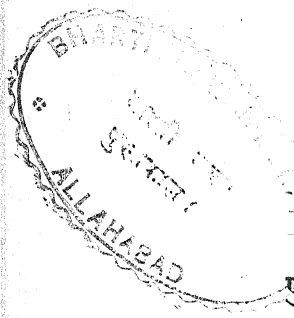
चौथा अध्याय

पुनर्जन्मके प्रमाण (२)

पिछले अध्यायमें हमने कई बातें बताई हैं जो पुनर्जन्मको मानने से आसानीसे समझमें आ सकती हैं। उनमेंसे एक-एक की व्याख्या, सम्भव है किसी और सिद्धान्तसे भी की जा सके, परन्तु पुनर्जन्मको माननेसे वे सब एक ही सिद्धान्तसे समझ आ जाती हैं। जितनी अधिक बातें किसी एक सिद्धांत को मानने से समझ में आ सकें उतना ही वह सिद्धांत सत्य तथा विश्वसनीय होता है। अब हम कुछ अन्य बातोंका उल्लेख करते हैं जिनकी व्याख्या पुनर्जन्मको माननेसे सरलतापूर्वक हो सकती है:—

१

प्रायः देखा जाता है कि कुछ लोग स्वभावतः एक दूसरे की ओर आकृष्ट होते हैं। वे आसानीसे एक दूसरेके मित्र बन जाते हैं। उन्हें शुरूमें ही एक दूसरेके साथ बैठनेसे पुराने मित्रोंकासा आनन्द आता है। कई लोगोंको एक ही बार एक दूसरेको देखनेसे परस्पर इश्क या प्रेम उत्पन्न हो जाता है। (इसे अंग्रेज़ीमें Love at first sight कहते हैं)। कइयोंको देखते ही एक दूसरेके प्रति घृणा पैदा हो जाती है। प्रश्न यह है कि ऐसा क्यों होता है?

यदि पुनर्जन्मको स्वीकार कर लिया जाय तो ये बातें स्वाभाविक प्रतीत होती हैं। पूर्वजन्मके सौहार्द और द्वेषके संस्कार अवशिष्ट होते हैं, जो उन्हीं आत्माओंके सामने आनेसे उद्बुद्ध हो जाते हैं। इस जन्ममें भी किसी पुराने मित्रको देखकर संस्कार जाग उठते हैं और उसके प्रति एक आकर्षण उत्पन्न हो जाता है। ऐसी हालतोंमें विज्ञान का कहना यह है कि जिन लोगों में ऐसा आकर्षण पैदा होता है उनकी प्रकृति स्वभावसे एक दूसरेके अनुकूल होती है, लेकिन यह अनुकूलता तो आपसके मेल-जोलसे प्रगट हो सकती है, केवल एक बार देखनेसे इसे नहीं जाना जा सकता। यह भी कहा जाता है कि आकर्षण रूप व आकृति और हाव-भावपर आश्रित होता है, किन्तु इस विचारसे आकस्मिक प्रेम की व्याख्या तो हो सकती है, आकस्मिक मित्रताकी नहीं, क्योंकि मित्रता बाह्य रूप आकृति अथवा हाव-भावपर आश्रित नहीं होती।

विचारनेसे ज्ञात होता है कि आकस्मिक प्रेमकी भी पूर्ण व्याख्या केवल रूप और आकृतिसे नहीं हो सकती। यह पारस्परिक प्रेम कई बार ऐसे व्यक्तियोंमें भी होता है जिनमेंसे एक या दोनोंको सुन्दर नहीं कहा जा सकता। अगर यह भी मान लिया जाय कि प्रेमी एक दूसरेको सुन्दर प्रतीत होते हैं, चाहे अन्य लोगोंको उनमें सौन्दर्य न भी दिखाई दे, तो भी बाह्य रूपसे केवल क्षणिक वासना पैदा होनी चाहिये, स्थायी प्रेम नहीं। क्योंकि दुनियांमें सुन्दर लोग तो बहुतसे हैं, इस लिये प्रत्येकको देखनेसे एक नया भाव पैदा होना चाहिये। जैसा कि एक कवि ने कहा है:—

"तंग हूँ अपनी तबीअतसे मैं,
जो हसीन इसको मिला लोट गई।"

प्रसिद्ध कवि दाग़ने भी इसी विचारको प्रगट किया है:—

"जितने दिलवर हैं सभी ख्वाहिशे दिल रखते हैं,
एक दिल और तलबग़ार जमाना दिलका।"

यह कहना तो व्यर्थ होगा कि प्रेमियोंको एक दूसरेके सिवाय कोई सुन्दर ही नहीं मालूम होता, अर्थात् दुनियाँभरके सुन्दर लोग कुरूप या साधारण रूपके दिखाई देने लगते हैं। इस लिये यदि आकर्षण किसी एक ही के प्रति होता है, तो उसका कारण केवल रूप नहीं हो सकता। प्रेम और वासनामें महान् अन्तर है। वासना स्वार्थमयी होती है, इसे अपने भौतिक आनन्दसे मतलब है, प्रियतमकी भलाईसे नहीं। प्रेम आत्मिक भाव है, वह बहुत हदतक निःस्वार्थ होता है, बल्कि इसमें इष्टजनके लिये बलिदान करनेमें मज़ा आता है। प्रेम की अवस्थाका चित्रण जो कवि लोग करते है, इस प्रकारका होता है:—

"यही आशिक़ों की नियाज़ है, यही दिलजलोंकी नमाज़ है,
जहां देखा यारका नक़्शे पा, पए सिज्दा सरको झुका दिया।"

(ज़फ़र)

"ये सरके बाल क्यों बिखरे, ये सूरत क्यों बनी ग़मकी
तुम्हारे दुश्मनोंको क्या पड़ी थी मेरे मातमकी।"

(आग़ा)

"खड़ा है देरसे आशिक़ कफ़न बांधे हुए सरसे
तेरे सदक़े तेरे क़ुर्बां मेरे क़ातिल निकल घरसे।"

पारस्परिक प्रेममें प्रेमी व्यक्तियोंको अनुभव होता है कि हम एक दूसरेके लिये बने हैं। प्रेम दिल और दिलका पारस्परिक प्यार है, आत्मा और आत्माका पारस्परिक आकर्षण है, केवल बाह्य सौन्दर्यपर मुग्ध होना नहीं; यद्यपि सौन्दर्यका प्यार भी इसमें सम्मिलित होकर इसकी सहायता करता है। सारांश यह कि आकस्मिक प्रेमकी व्याख्या बाह्य रूपके प्रति आकर्षणके आधारपर नहीं की जा सकती। इसे किसी पूर्व-जन्मके लम्बे और गहरे प्यारके संस्कारोंका परिणाम माना जाय तो यह सर्वथा स्वाभाविक मालूम होने लगेगा और इसमें ज़रा भी आश्चर्यकी बात न रहेगी।

२

साधारण निरीक्षणसे ज्ञात होता है कि भिन्न-भिन्न प्रकारके लोगोंकी बुद्धि एक जैसी नहीं होती। इसी तरह विविध प्राणी भी बुद्धिमें एक दूसरेके बराबर नहीं होते। विज्ञान (Science) इसका कारण यह बताता है बुद्धिका आधार मस्तिष्ककी पेचीदगी होती है, परन्तु बहुतसी हालतोंमें यह बात ठीक प्रतीत नहीं होती। कीड़ों, मधुमक्खियों और मकड़ियोंके मस्तिष्क बिल्कुल सादे होते हैं, लेकिन उनके कई काम ऐसे होते हैं जिनके लिये बहुत बुद्धिकी आवश्यकता है। मधुमक्खीका छत्ता, मकड़ीका जाला और पक्षीका घोंसला ऐसी चीज़ें हैं जिनसे मनुष्यभी कुछ शिक्षा ग्रहण कर सकता है। इसके विपरीत कई बड़े-बड़े प्राणी हैं जिनका मस्तिष्क विशाल और पेचीदा है परन्तु उनकी बुद्धि बहुत निम्न श्रेणीकी होती है। वैज्ञानिक कहते हैं कि किसी प्राणीकी बुद्धि उसके मस्तिष्क और शरीरके भारमें परस्पर अनुपातके अनुसार होती है।

लेकिन वस्तुस्थिति इस बातको भी पुष्ट नहीं करती। डीबायर (Debierre) ने इस सम्बन्धमें परीक्षण किये हैं। उसके निकाले हुए परिणाम इस प्रकारसे हैं:—

खरगोशके मस्तिष्क और शरीरमें १ और १४०का अनुपात होता है, बिल्लीमें १ और १५६का, लोमड़ीमें १ और २०५का, कुत्तेमें १ और ३५१का, घोड़ेमें १ और ८००का। यदि विज्ञानका सिद्धान्त ठीक हो तो खरगोश—बिल्ली, लोमड़ी, कुत्ते, घोड़े आदिसे अधिक बुद्धिमान् होना चाहिये, लेकिन यह बात ग़लत है। कई वैज्ञानिक कहते हैं कि मनुष्यकी अनेक जातियोंकी बुद्धि उनके मस्तिष्कके आकारके अनुसार होती है परन्तु निरीक्षणसे यह भी ठीक नहीं मालूम होता। भारतवर्षमें मद्रासके शूद्रोंका मस्तिष्क १३३२ घन सैण्टीमीटर होता है, आस्ट्रेलियाके जंगली मनुष्योंका मस्तिष्क १३३८ घन सैण्टी मीटर, पौलिनीशियाके जंगली मनुष्योंका १५००, प्राचीन मिस्रके लोगोंका १५००, मेरोविंजियन जंगलियोंका १५३६ और आजकलके पैरिसके निवासियोंका १५५६ घन सैण्टी मीटर। यदि विज्ञानकी बात मानली जाय तो इससे सिद्ध हो जायगा कि पुराने मिस्रके लोग जिन्होंने मिस्रके मीनार बनाए और पत्थरकी ऐसी शिलाओंको जिनमेंसे एक-एकको समतल भूमिपर खैंचनेके लिये १५-१५ घोड़ोंकी ज़रूरत है, पांचसौ फ़ीटकी ऊंचाईपर लेगये और उस ऊंचाई पर उन बड़ी शिलाओंको बिना किसी गारे या चूनेके ऐसी उत्तमताके साथ जोड़ा कि उनके जोड़ नज़र नहीं आते; वे मिस्रके लोग जो सीसा पिघला सकते थे और ऐसे रंगोंसे नक़्काशी किया करते थे जो सदियोंमें भी मद्धम नहीं पड़े और जिनके एक स्कूलका लड़का आजकल

के अच्छे पढ़े लिखे आदमीकी अपेक्षा गणितका ज्ञान अधिक रखता था, ऐसे मिस्रके लोग विज्ञानके इस सिद्धान्तके अनुसार मैरोविंजियन (Merovingian) और पौलिनीशियन (Polynesian) जंगली मनुष्योंसे बुद्धिमें कम थे।

पांच सालके बच्चेके मस्तिष्कका भार १२५० ग्राम होता है, लेकिन जब वह जवान होजाता है तो उसके शरीरका भार कई गुना होता है परन्तु मस्तिष्कका भार इस तुलनामें कम बढ़ता है। विज्ञानके अनुसार जवान होनेपर उसकी बुद्धि कम होजानी चाहिये, लेकिन वस्तुतः बचपनकी अपेक्षा बहुत अधिक होजाती है। क्यूवियर (Cuvier) के मस्तिष्कका भार १८३० ग्राम, क्रोमवैल (Cromwell) के मस्तिष्कका भार २२३० ग्राम था, अर्थात् क्रोमवैलका मस्तिष्क बच्चेके मस्तिष्कसे लगभग दुगना था, परन्तु इसका शरीर पांच सालके बच्चेके शरीरसे कई गुना बड़ा था; इससे परिणाम निकलेगा कि पांच सालका बच्चा क्रोमवैलसे अधिक बुद्धिमान् होना चाहिये, उस क्रोमवैलसे जो एक साधारण सैनिकसे उन्नति करता करता इंगलैण्डके राजा को क़त्ल करके उसीके स्थानपर डिक्टेटर बन गया। टीडमैन (Tiedman)का मस्तिष्क जो एक प्रसिद्ध औपन्यासिक था, सिर्फ़ १२५४ ग्राम था और गैम्बेटा (Gambetta) का १२४६ ग्राम, अर्थात् एक पांच सालके बच्चेसे भी कम था। इन बातोंका विज्ञान कोई युक्तियुक्त कोई कारण नहीं बता सकता। परन्तु पुनर्जन्मको मान लेनेसे इनके समझनेमें कठिनता नहीं रहती। पुनर्जन्मके अनुसार बुद्धि मस्तिष्कके अनुसार नहीं, अपितु आत्मा और उसके संस्कारोंके अनुसार होती है। इस जन्ममें भी

हम देखते हैं कि यदि कोई किसी विद्यामें परिश्रम करे तो उसमें उसकी निपुणता बढ़ जाती है। इसी तरह इस जन्ममें भिन्न-भिन्न क्षेत्रोंमें बुद्धि और कुशलता पूर्वजन्मोंमें उन क्षेत्रोंमें प्राप्त की हुई दक्षता और अनुभवका परिणाम हैं।

३

कई प्रकारकी विचित्र घटनाएं देखनेमें आती हैं, जो पुनर्जन्मको मानने से बड़ी आसानीसे समझमें आसकती हैं:—डाक्टर पास्कल लिखता है कि कई जन्मके अन्धोंको स्वप्नमें चित्र दिखाई देते हैं। इस जन्मका अनुभव हमें बताता है कि स्वप्नमें केवल वही चीज़ें दिखाई देती है जिन्हें या कमसे कम जिनके अवयवोंको हमने अपनी जागृत अवस्थामें देखा हुआ हो। लेकिन अन्धा इस जन्ममें तो कुछ देख नहीं सकता, इसलिये अनुमान होता है कि उसे इस जन्मसे पहले अर्थात् किसी अतीत जन्मकी देखी हुई चीजोंके चित्र स्वप्नमें दिखाई देते होंगे। एक जन्मका बहरा और गूंगा बेवकूफ़ ●सौम्नैम्बूलिज़्म (Somnam-

● सौम्नैम्बूलिज़्मका शाब्दिक अर्थ है, 'स्वप्नमें चलना'। यह एक असाधारण अवस्थाका नाम है जिसमें कोई मनुष्य सोते सोते अचानक उठ बैठता है और चलने फिरने तथा कई प्रकारके काम करने लगता है। यद्यपि वह नींदमें होता है इस अवस्थामें साधारधतया जागृत अवस्थाकी बातें याद नहीं रहतीं और जागृतिमें इस अवस्थाकी बातें भूल जाती हैं। कई आदमियोंमें यह हालत स्वाभाविक रूपसे आती रहती है और कइयोंमें सम्मोहन (Hypnotism) के द्वारा लाई जा सकती है।

bulism) की अवस्थामें बोल सकता था, लेकिन एक बहरेको जिसने कभी कोई शब्द नहीं सुना, कोई शब्द कैसे मालूम हो सकता है ? इस लिये उसके शब्दोंको किसी पूर्वजन्मसे याद रहे हुए मानना बहुत स्वाभाविक प्रतीत होता है। ई० डी० वाकर लिखता है कि फ़िलेडेल्फ़िया (अमरीकाकी) रहने वाली एक नौजवान स्त्रीको १८वीं सदीके अंग्रेज़ी समाजके स्वप्न आते थे, वैसे ही मकान, वैसा ही वेश तथा अन्य सब बातें नज़र आती थीं। ये चीज़ें उसे न ही कभी किसीने बताईं। और न ही कभी उसने इस विषयपर पुस्तकें पढ़ी थीं।

जी० एच० ह्वाइट अपनी पुस्तकमें एक अंग्रेज़ नौकरानीका ज़िकर करता है जो सौम्नैम्बूलिज़्मकी हालतमें अरबी भाषा बोलती थी। डॉक्टर टैस्ट एक नौकरानीके सम्बन्धमें लिखता है कि वह बिलकुल अनपढ़ और मामूली अक़्लकी थी, लेकिन सम्मोहन * (Hypnotism) की हालतमें एक बड़ी भारी दार्शनिक बनकर बड़े विषयोंपर विद्वतापूर्ण भाषण दिया करती थी। म्यो नामक एक शरीर क्रियाविज्ञानवेत्ता (Physiologist) लिखता है कि एक अनपढ़ लड़कीने सौम्नैम्बूलिज़्मकी हालतमें ज्योतिषपर एक पुस्तक लिखी जिसमें बड़ी कठिन गणना की गई थी। इन घटनाओंका आधुनिक विज्ञान यह कारण बताता है कि मनुष्यकी चेतनताका एक दूसरा भाग 'उपचेतना' (Secondary Conscionsness) होती है जिसे वे बातें भी मालूम होती हैं जो साधारणतया उस मनुष्यको ज्ञात नहीं होती। लेकिन इस उपचेतनाका तो यह मतलब है कि मनुष्यकी स्मृतिकी गहराइयोंमें ऐसी

* निद्रा की एक असाधारण अवस्था को कहते हैं।

भी बातें छिपी रहती हैं जो उसे साधारणतया मालूम नहीं होतीं, परन्तु विशेष अवस्थाओंमें प्रगट हो जाती हैं। इसे मानकर भी प्रश्न उत्पन्न होता है कि ये बातें स्मृतिमें आ कैसे गई ? अगर पुनर्जन्मको मान लिया जाये तो वे किसी पूर्वजन्मकी स्मृतियां हैं। इस प्रकार इन बातोंको समझनेके लिये किसी असाधारण और विचित्र शक्तिको माननेकी आवश्यकता नहीं, परन्तु स्मृतिकी उन्ही शक्तियोंको मानना पर्याप्त है जिनका हमें प्रतिदिन अनुभव होता है। पुनर्जन्मका सिद्धान्त 'उपचेतना' के सिद्धान्तके प्रतिकूल नहीं, प्रत्युत उसके सर्वथा अनुकूल और उसपर अधिक प्रकाश डालने वाला है।

४

बच्चेको बचपनसे ही कई प्रकारका ज्ञान होता है और वह कई प्रकारकी चेष्टाएं करता है जो कई लोगोंकी सम्मतिमें पुनर्जन्मका प्रमाण हैं। उदाहरणार्थ बच्चा पैदा होते ही मांका दूध पीनेमें समर्थ होता है। प्राचीन भारतीय दार्शनिकोंके अनुसार यह पूर्वजन्ममें प्राप्त किये हुए अभ्यासका परिणाम है, अन्यथा बिना सिखाये बच्चा ऐसे कठिन कार्यको क्योंकर करने लगता है ?

छोटे बच्चे कई बार अचानक ऐसी बातें कर देते हैं जो उनकी आयुकी योग्यतासे बहुत बढ़ कर होती हैं, और जिनसे अनेक मां-बाप चकित हो जाते हैं। यह पूर्वजन्मकी बातोंका अचानक स्मरण हो सकता है। ई० डी० वाकर अपनी पुस्तक (Re-incarnation) में लिखता है कि—मेरे एक मित्रके घरमें बच्चे मेज़पर बैठे हुए एक दिन गिनना खेल रहे थे, उनकी मां पास ही थी। जब वे सौ पर पहुंचे तो

फिर एकसे आरम्भ किया। इसपर उनमेंसे एक लड़केने कहा—हम दस, बीस, तीस सौतक गिनते हैं फिर एकसे शुरू कर देते हैं। मां! सब लोग भी इसी तरह मर जाते हैं और फिर जीवित हो जाते हैं। मुझे आशा है अगले जन्ममें भी तुम मेरी मां बनोगी। इस घरानेमें पहले कभी पुनर्जन्मकी चर्चा नहीं हुई थी। यही लेखक अपने एक और मित्रके बारेमें लिखता है कि उसकी चार सालकी लड़की अपने पितासे बातें कर रही थी, उनकी बड़ी बहन ये बातें सुन रही थी। छोटी लड़की ऐसी घटनाओंका ज़िकर कर रही थी जो उसके पैदा होनेसे पहले घटित हुई थीं। उसकी बहनने पूछा—तुम्हें इन बातोंकी क्या खबर है? ये तो तुम्हारे पैदा होने से पहले हुई थीं। लड़कीने जवाब दिया—मैं पैदा होनेसे पहले एक दफ़ा बूढ़ी हो चुकी हूँ।

कई बार बच्चोंमें पैदा होतेही ऐसी शक्तियां होती हैं जो साधारणतया जन्मसे कई वर्ष बाद आती हैं और पर्याप्त विकास और शिक्षणका परिणाम होती हैं। यदि इनका आधार पूर्वजन्मको मान लिया जाए तो इनमें कोई आश्चर्य नहीं रहता, अन्यथा इनका कोई कारण नहीं मिलता और इन्हें प्रकृतिकी लीला (Freak of Nature) कह कर टाल देना पड़ता है। एक उदाहरणसे हमारा तात्पर्य अधिक स्पष्ट हो जाएगा। लाहौरके दैनिक अंग्रेज़ी अखबार ट्रिब्यूनके ७ मई १६३४ के अङ्कमें एक समाचार प्रकाशित हुआ था। हम उसका लगभग शाब्दिक अनुवाद पाठकोंकी सेवामें उपस्थित करते हैं:—

"जालन्धर, ४ मार्च १६३४—गांव हीरान, तहसील निकोदरसे आश्चर्यजनक समाचार आया है कि वहां एक वैरागी साधूके घर एक

विचित्र लड़का पैदा हुआ है । लड़केके पूरे दांत हैं और दाढ़ी भी है । यह १४ इञ्च लम्बा है । इसका भार केवल चार पौण्ड है, परन्तु सम्पूर्ण शरीरपर बाल हैं और सत्तर वर्षके बूढ़ेकीसी शक्ल है । जो लोग इसे देखने आते हैं वे प्रश्न करते हैं तो उनका यह ठीक उत्तर देता है । लोग इसे अवतार समझ रहे हैं । यह गिलाससे दूध पीता है । दूर-दूरसे लोग प्रकृतिकी इस अद्भुत लीलाको देखनेके लिये इस गाँवमें आरहे हैं । —यूनाइटेड प्रैस ।"

पैदा होतेही गिलाससे दूध पीना और प्रश्नोंका ठीक उत्तर देना दोनों स्वाभाविक कार्य नहीं हैं । बल्कि सीखनेका परिणाम होते हैं । जिसने इस जन्ममें इन्हें नहीं सीखा परन्तु इन्हें जानता है, उसने अवश्य पैदा होनेसे पहले अर्थात् किसी पूर्वजन्ममें सीखा होगा ।

५

अगर हम पुनर्जन्मको न मानें और केवल वर्त्तमान जन्मकी घटनाओंको ही सामने रखें, तो दुनियामें दुःख कष्ट और बड़ाईका कोई समुचित कारण नहीं दिखाई देता । कई लोग अमीरोंके घर पैदा होते हैं तो कई ग़रीबोंके घर, कोई बहुत सुखी है, कोई बहुत दुःखी । निकम्मे और मूर्ख लोग बहुत प्रतिष्ठा और ऐश्वर्य प्राप्त कर लेते हैं । योग्य व्यक्ति दीन अवस्थामें रहते हुए भटकते फिरते है । कई लोग जन्मसे ही अंधे लंगड़े बहरे अथवा अंगहीन पैदा होते हैं और कई सुन्दर, स्वस्थ, बलवान् अथवा उत्तम गले वाले । कई सौभाग्यशाली होते हैं तो कई अभागे । कई अफ्रीकाके जंगलोंमें नंगे वहशियोंके यहां ख़राब जलवायु और बुरी परिस्थितियोंमें पैदा होते हैं तो कई अमरीकाके सभ्य समाजमें

बहुत अच्छी परिस्थितियोंमें। इन विभिन्नताओंका प्रायः इस जन्ममें कोई कारण प्रतीत नहीं होता। लेकिन यदि पुनर्जन्मको मान लिया जाय तो इनका कारण स्पष्ट समझमें आजाता है। इस जन्मकी परिस्थितियां पूर्वजन्मके कर्मोंका फल हैं। सर्वशक्तिमान् परमेश्वर प्रत्येकको अपने कर्मोंका फल दे रहा है, हर जगह न्याय हो रहा है; अन्यायकी कोई सम्भावना नहीं। 'अकस्मात्' (Chance) कोई चीज़ नहीं। समाजमें प्रत्येक विभिन्नताका कारण है और मनुष्य-जीवनके प्रत्येक सुख और दुःखका कारण है। देखनेमें पापी लोग फलते-फूलते नज़र आते हैं और सज्जन लोग तकलीफ़ उठाते दिखाई देते हैं, जिसे देखकर मनमें अशान्ति पैदा होती है और पुण्यकर्मोंसे विश्वास उड़ जाता है। पुनर्जन्मको मानकर ही इस विश्वासको स्थिर रखा जा सकता है, क्योंकि यह हमें बताता है कि प्रसन्नता किसी पुण्यकर्मका ही फल है और पापका बुरा फल मिलकर ही रहेगा। इसके विपरीत यदि वर्त्तमान जन्मको आत्माका प्रथम जन्म माना जाय तो समाजमें विभिन्नता और सुख-दुःखका कारण क्या है? यदि ये विभिन्नताएँ और सुख-दुःख बिना कारण हैं तो सर्वशक्तिमान् न्यायकारी परमात्मापर अन्याय या कमज़ोरीका दोष आता है; अर्थात् या तो वह इन विभिन्नताओंको रोक नहीं सकता, इसलिये सर्वशक्तिमान् नहीं, अथवा रोकना नहीं चाहता इसलिये न्यायको पसन्द नहीं करता।

कुछ लोग, जैसे ईसाई, मानते हैं कि आत्माको ईश्वरने उत्पन्न किया है और वर्त्तमान जन्म आत्माका पहला और अन्तिम जन्म है। इस एक जन्मके बाद आत्मा हमेशाके लिये स्वर्ग या नरकमें चली जाती है और

एक ही जन्मके कर्मोंसे यह फ़ैसला कर दिया जाता है कि इसे स्वर्गमें या नरकमें भेजा जाय। लेकिन यह बात न्यायसे विपरीत है कि इतने थोड़े समयके कर्मोंका फल हमेशा रहनेवाला हो। दया (Mercy) और न्याय चाहते हैं कि ग़लती करनेवालेको अपने पापोंके प्रतिकारका अवसर दिया जाय और यह अवसर बार-बार जन्म देनेसे ही दिया जा सकता है। कई बच्चे पैदा होते ही अथवा बहुत थोड़ी आयुमें मर जाते हैं। उन्होंने न कोई पुण्य किये हैं न पाप, तो क्या इन्हें स्वर्गमें भेजा जायगा या नरक में। कई लोग ऐसी परिस्थतियोंमें पैदा होते हैं कि उनके लिये विशेष प्रकारके कामोंके अतिरिक्त कोई काम करना बहुत मुश्किल हो जाता है। उदाहरणके लिये जो लोग अत्यन्त दरिद्र मां-बापके यहां पैदा होते हैं, उनके लिये विद्या ग्रहण करना और आध्यात्मिक उन्नति करना लगभग असम्भव होता है। बचपनमें ही उन्हें काममें लगा दिया जाता है और सारी उमर उन्हें इस प्रकारका कठोर परिश्रम करना पड़ता है कि इन्द्रियोंकी साधारण आवश्यकताओं-को पूर्ण करनेके अतिरिक्त उन्हें न किसी बातका ख़याल आता है और न ही उनके पास अवकाश ही होता है। कई व्यक्ति जुर्मपेशा लोगोंके यहां पैदा होते हैं और उन ही में पलते और रहते हैं। कई जातियोंमें लड़के को पगड़ी तब बांधने देते हैं जब वह चोरी करले। ऐसी भी जातियां हैं जिनमें क़त्ल करना पुण्यकार्य माना जाता है। ऐसी परिस्थितिमें पैदा हुए बच्चोंके लिये भद्र पुरुष बनना कितना कठिन बल्कि असम्भव है! एक छोटासा जीवन, उसमें भी ऐसी परिस्थितियोंमें काम करना और फिर उसका फल अनन्त स्वर्ग या नरक, यह न्याय और दयाके सर्वथा विरुद्ध है।

पहले तो इस बातका कोई कारण होना चाहिये कि संसारमें इस तरहकी विभिन्नता और विषमता क्यों नज़र आती है ? और फिर कर्म-फल कुछ परिमित समयके लिये होना चाहिये और पुण्य और पापसे बहुत बढ़कर न होना चाहिये। आत्माको ईश्वरसे उत्पन्न माननेका अभिप्राय यह है कि आत्माकी सब विशेषताएं, इच्छाएं, प्रवृत्तियां और रुचियां उसे ईश्वरसे मिली हैं और इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि जीवनमें आत्माके कर्म उन विशेषताओं आदिके अनुसार होंगे। इस तरह आत्मा अपने कर्मोंके लिए उत्तरदायी न होगा। उसमें स्वभाव और प्रवृत्तियां विद्यमान हैं और उन्हींके अनुसार कर्म करना उसके लिये अनिवार्य है, फिर इन कर्मोंकी सज़ा देना आत्माके प्रति क्रूरता है। इस रूपमें इस सिद्धान्तका तात्पर्य यह है कि आत्मा एक ही वार जन्ममें आता है, उसमें भी यह कर्म बाधित होकर करता है, इनका करना या न करना इसके आधीन नहीं, फिर भी इन कर्मोंकी इसे सज़ा मिलती है और वह भी ऐसी कठोर और अत्यन्त, और इसमें पापके प्रतिकारका भी अवकाश नहीं। दया और न्याय इस बातको सह नहीं सकते।

यदि कहा जाय कि आत्माको परमेश्वरने कर्म करनेमें स्वतन्त्र बनाया है और यह अपने जीवनमें जैसे चाहे कर्म करता है तो जन्मसे सब लोग बराबर होने चाहियें, लेकिन ऐसा होता नहीं। जैसा हम देख चुके हैं बचपनसे ही बच्चोंकी प्रवृत्तियों और विशेषताओंमें अन्तर होता है। साथ ही स्वास्थ्य, रोग, अमीरी, ग़रीबी तथा अन्य परिस्थितियोंमें भी, जिनपर उनके जीवनके कर्म आश्रित होते हैं, विषमता होती है, भिन्न-

भिन्न प्रकारकी विशेषताओं और परिस्थितियोंके होनेपर मनुष्य लगभग परतन्त्र हो जाता है। पुनर्जन्मको माननेसे ये कठिनाइयां पैदा नहीं होतीं, क्योंकि इसके अनुसार आत्मा अनादि है और यह सदा नाना जन्मोंमेंसे गुज़रती है। किसी जन्मकी इच्छाएं और विशेषताएं पूर्व-जन्मके संस्कारोंका परिणाम हैं, और परिस्थितियां आत्माके अतीत-जन्मोंके कर्मोंके फल हैं; जो सर्वशक्तिमान् न्यायकारी परमेश्वर देता है। इस तरह विशेषताएं और परिस्थितियां दोनों आत्माके आधीन हैं, उसके स्वतन्त्र कर्मोंका परिणाम हैं और इन स्वतन्त्र कर्मोंसे ही बदली भी जा सकती हैं।

यदि पुनर्जन्मको न माना जाए, यदि आत्मा एक दूसरेके बाद अनेक जन्मोंमेंसे न गुज़रती हो, बल्कि एक ही जन्मके बाद सदाके लिये स्वर्ग या नरकमें चली जाए तो एक और कठिनता उपस्थित होगी। एक जन्ममें आत्मा सब प्रकारका अनुभव नहीं प्राप्त कर सकती और यदि उसे फिर जन्म न मिले तो यह उन बातोंके लिये भटकती रहेगी जो इसे उस एक जन्ममें नसीब नहीं हुईं; अर्थात् उस जन्ममें जो इच्छाएं पूरी नहीं हुईं वे इसे सताती रहेंगी। साधारणतया देखा जाता है कि कई लोगोंको संसारसे बहुत मोह होता है, मरते दमतक भी सांसारिक विषयोंकी कामना दूर नहीं होती। ऐसे आदमी किसी आध्यात्मिक जीवनमें जाना या मुक्ति-लाभ करना पसन्द ही नहीं करेंगे। आध्यात्मिक जगत्की आकांक्षा तभी हो सकती है जब कि इस संसारकी सब बातोंको देखकर उनसे जी भरजाए, लेकिन हम देखते हैं कि यह काम एक जीवनमें नहीं होता, विशेषकर जब कि

कई आदमियोंका जीवन इतना छोटा और मुश्किलोंसे भरा होता है। ऐसी हालतमें स्वर्ग या मुक्ति अथवा आध्यात्मिक जीवन शान्ति और सुख देने वाले नहीं होंगे बल्कि अनन्त दुःखका कारण होंगे और इस तरह स्वर्ग और नरक तथा मुक्ति और बन्धनमें कोई अन्तर न रह जायगा।

६

कई पुनर्जन्मके मानने वालोंका खयाल है कि जातियोंमें भी आपसमें जो छोटाई बड़ाई, सम्पन्नता तथा दरिद्रताके भेद दिखाई देते है, इनकी व्याख्या पुनर्जन्म और कर्मफलसे हो सकती है। उदाहरणके लिये, कहा जाता है कि स्पेनकी वर्त्तमान पतितावस्थाका कारण यह है कि इस देशने अपनी समृद्धिके दिनोंमें अमरीकाके लोगोंको दास बनाकर उनपर अनेक अत्याचार किये। वही आत्माएं जिन्होंने ये पाप किये थे, अब जन्म लेकर इनकी सज़ा भोग रही हैं। आजकल इंग्लैण्ड-की समृद्धिका कारण यह है कि ईसवी सन्‌के शुरूसे तीन चार सदियोंतक जिन ऊंची आत्माओंने रोममें जन्म लिया था वे ही अब इंग्लैण्डमें महारानी ऐलिजेबैथके कालसे जन्म ले रही हैं। इस प्रकारके विचारके आधारपर जातियोंके सादृश्यकी व्याख्या भी की गई है। पुराने रोमन लोगोंमें और आजकलके अंग्रेज़ लोगोंमें बहुत सादृश्य पाया जाता है। स्वतन्त्रताका शौक़, साम्राज्यविस्तारकी प्रवृत्ति और उपनिवेश बनानेकी रुचि आदि बहुतसी बातें दोनोंमें एक जैसी हैं। ऐसेही पुराने यूनानी लोगोंमें और आजकलके फ़्रैञ्च लोगोंमें सादृश्य है। दोनों जातियां बड़ी बुद्धिमान् और दर्शनके प्रति प्रेम रखने वाली तथा सौन्दर्य और

लालित्यकी पूजा करने वाली हैं । कई लेखकोंका विचार है कि इस प्रकारके सादृश्यका कोई कारण होना चाहिये और यह मान लिया जाए कि प्राचीन रोमकी आत्माएँ सामूहिक रूपसे आजकल इंग्लैण्डमें जन्म ले रही हैं और प्राचीन यूनानकी आजकल फ्रांसमें, तो हेतु स्पष्टतया समझमें आजाता है, अन्यथा अकस्मात् (Chance) कह कर इस समस्याको टाल देना पड़ेगा। इतिहासके कई प्रसिद्ध व्यक्तियोंमें अत्यन्त सादृश्य पाया जाता है। कुछ लोगोंका खयाल है कि इसकी व्याख्या भी पुनर्जन्म द्वारा हो सकती है। उदाहरणार्थ, ऐफ० ऐच० विलिस लिखता है कि अपोलोनियस ऑफ़ टियाना (Apollonius of Tyana) पहले जन्ममें ईसा मसीह था। ग्लैडस्टोन (Gladstone) पहले सिसरो (Cicero) और श्रीमती बेसैण्ट पहले ब्रूनो (G. Bruno) थी। कूपर लिखता है कि शौपनहॉरके विचारोंके बौद्ध दर्शनके साथ इतने अधिक सादृश्यका कारण यही हो सकता है कि उसने पूर्वजन्ममें बौद्ध दर्शनसे परिचिति प्राप्त की होगी। इसी तरह हेगल, फ़िश्टे और काण्टके दर्शनमें भारतवर्षका वेदान्तदर्शन प्रगट हो रहा है, इसका कारण पुनर्जन्म ही हो सकता है । इतिहासपर दृष्टि डालनेसे बहुतसे ऐसे युग मिलेंगे जिनमें विद्या और कलाके दृष्टिकोणसे अत्यन्त सादृश्य है। यदि मान लिया जाय कि ऐसे युगोंमें एक ही आत्माएँ सामूहिक तौरपर लेखकों आदिके रूपमें जन्म ले रही हैं तो इस सादृश्यकी व्याख्या हो जाएगी।

हम देख चुके हैं कि पुनर्जन्मको माननेसे बहुतसी बातें समझमें आजाती हैं। ये सब किसी अन्य एक सिद्धान्तको मानने से समझ नहीं

आ सकतीं। जैसा हम ऊपर कह चुके हैं, जितनी अधिक बातें किसी एक सिद्धान्तको माननेसे समझमें आ जायँ उतना ही वह सिद्धान्त युक्तियुक्त और विश्वासयोग्य होता है। पुनर्जन्मके सिद्धान्तकी एक और खूबी यह है कि इसे माननेसे प्रगट रूपसे विचित्र और असाधारण बातें स्वाभाविक तथा साधारण प्रतीत होने लगती हैं जैसा कि ऊपर हमने स्थान-स्थानपर बताया है; असाधारण घटनाओंके लिये असाधारण कारणोंकी कल्पना नहीं करनी पड़ती, परन्तु वे उन्हीं सामान्य नियमोंकी सहायतासे समझ आजाती हैं जिन्हें हम प्रतिदिन जीवनमें काम करता देखते हैं।

पांचवां अध्याय

पुनर्जन्मपर आक्षेप और उनका समाधान (१)

पुनर्जन्मके सिद्धान्तपर कई आक्षेप किए जाते हैं। किसी सिद्धान्त की सत्यताकी परीक्षा करनेका एक यह भी उपाय है कि यह देखा जाय कि उसपर होने वाले आक्षेपोंका कहां तक समाधान किया जा सकता है। अब हम पुनर्जन्मको इस कसौटी पर परखनेकी कोशिश करते हैं और एक-एक करके आक्षेपोंका निराकरण करनेका प्रयत्न करते हैं।

१

पुनर्जन्मपर एक बड़ा आक्षेप यह है कि इसे माननेसे पहले आत्माका अस्तित्व सिद्ध करना आवश्यक है, क्योंकि पुनर्जन्म तभी हो सकता है यदि आत्माका अस्तित्व विद्यमान हो। शरीरका तो पुनर्जन्म हो ही नहीं सकता वह तो मृत्युके बाद नष्ट हो जाता है और गलने सड़ने लगता है, प्रायः जला या दबा दिया जाता है और जहां डाल दिया जाए वहीं पड़ा रहता है। आत्माकी सत्ताके बहुतसे प्रमाण दिये जा सकते हैं, लेकिन क्योंकि यह अपने आपमें एक बहुत बड़ा विषय है इसलिए यहां केवल कतिपय प्रमाण ही दिये जाते हैं।

इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि हरेक मनुष्यमें शरीरके अतिरिक्त एक विचार-प्रवाह भी होता है। विचार, कल्पना, सुख दुःखका अनुभव, स्मृति, प्रेम या घृणा तथा सङ्कल्प आदि मनुष्यमें होते रहते हैं, यह प्रत्येक मनुष्य अपने अनुभवके आधारपर कह सकता है। इस विचार-प्रवाहमें सदा परिवर्त्तन होता रहता है, अर्थात् विचारकी जो अवस्था किसी समय होती है वह उससे ज़रा पहले नहीं थी और इसके थोड़ी देर बाद नहीं रहेगी। दर्शनका यह एक सर्वसम्मत सिद्धान्त है कि जिस चीज़का आरम्भ होता है उसका कोई कारण होना चाहिये। इसलिये प्रश्न उत्पन्न होता है कि विचार-प्रवाह और उसकी विविध अवस्थाओंका कारण क्या है ? आजकलके वैज्ञानिकोंका विचार है कि इस विचार-प्रवाह और इसके परिवर्त्तनोंका कारण शरीर अर्थात् मस्तिष्क और उसकी चेष्टाएँ हैं, और इसके अतिरिक्त कुछ नहीं—अर्थात् यही पर्याप्त कारण है। परन्तु ऐसा मानना कठिन है। विचार-प्रकृति अथवा उसके किसी गुण या रूपान्तर-उष्णता विद्युत या प्रकाश आदिसे सर्वथा भिन्न वस्तु है। यदि किन्हीं दो ऐसी वस्तुओं-का दृष्टान्त लेना हो जिनमें परस्पर भेदकी पराकाष्ठा हो तो विचार, और प्रकृति तथा उसके रूपान्तर उष्णता आदिसे अच्छा दृष्टान्त नहीं मिल सकता। विचारमें ज्ञानकी शक्ति है, यह सदा प्रमाता और प्रमेयमें भेद करता है, परन्तु प्रकृति या उससे बने हुए किसी पदार्थमें यह विशेषता नहीं। इसलिए यह मानना आवश्यक है कि विचार या चेतनाका कारण शरीरसे कोई सर्वथा भिन्न पदार्थ है।

२

मनुष्यकी विशेषताएँ और कार्य प्रकृतिसे बिलकुल भिन्न हैं बल्कि इसके विरोधी हैं। उदाहरणार्थ मनुष्यमें सङ्कल्पशक्ति (Will) है। वह किसी वस्तुको प्राप्त करनेका सङ्कल्प कर लेता है, तो फिर अपनी सारी शक्ति उसके लिये खर्च कर देता है; मुसीबतें झेलता है मगर प्रयत्न नहीं छोड़ता। जितनी ही अधिक मुश्किलें हों उतना ही उसे एक नशा चढ़ता जाता है, मुश्किलोंपर विजय पानेमें उसे आनन्द आता है, यहांतक कि किसी सुगम कार्यको करनेमें कुछ मज़ा ही नहीं आता। इसके विपरीत, सब प्राकृतिक वस्तुएँ सुगमसे सुगम रास्ता (The path of least resistance) ढूंडती हैं। जैसे पानी ढलानकी ओर बहता है और मार्गमें किसी रुकावटके आनेपर एक तरफ़ हो जाता है। सब प्राकृतिक वस्तुएँ गिरनेमें उसी रास्ते गिरती हैं जिसमें कोई रुकावट न हो, मगर मनुष्यको यदि कोई रुकावट न मिले तो वह उसकी तलाशमें रहता है। प्रतिवर्ष लोग हिमालय पर्वतके उच्चतम शिखरोंपर चढ़नेका प्रयत्न करते हैं यद्यपि उन्हें मालूम होता है कि बहुतसे व्यक्ति पहले इसी प्रयत्नमें अपनी जान गंवा चुके हैं। प्रतिदिन खबरें आती रहती हैं कि अमुक मनुष्यने लाहौरसे अमृतसरतकका मार्ग बाइसिकलपर एक घण्टेमें तय किया, या अमुक आदमीने तैरकर समुद्रको पार किया या अमुक ७२ घण्टे पानीमें ही रहा, या अमुक आदमी शतरञ्ज, फ़ुटबॉल या किसी और चीज़में दुनियामें सबको मात करके प्रथम बननेका प्रयत्न कर रहा है। मालूम होता है कि मनुष्यके अन्दर कोई ऐसी चीज़ है जिसकी विशेषताएँ प्रकृतिकी विशेषताओंकी बिलकुल

विरोधी हैं। कई बार मनुष्य थका होता है, शरीर आगे जानेसे इनकार करता है क्योंकि ताक़त बिल्कुल खर्च हो चुकी होती है परन्तु उद्देश्यपर पहुँचनेकी लालसा लगी होती है और संकल्पका बल शरीरको घसीटता हुआ भी वहां पहुँचा देता है। ऐसी अवस्थाओंमें मनुष्यके अन्दर शरीर की उससे किसी भिन्न वस्तुके साथ कशमकश होती दिखाई देती है। एक विद्यार्थी जिसने कल परीक्षामें बैठना है, रातको लैम्पके सामने पुस्तक लेकर बैठा है, दिनभरके अध्ययनसे थक चुका है, और नींद आती है, परन्तु आंख झपकने नहीं देता। यदि झपक जाए तो फिर खोल लेता है, (और कइयोंके बारेमें तो सुना जाता है कि वे चोटी छतसे बांधकर बैठते हैं) उसके शरीर को आराम चाहिये मगर एक शक्ति है जो इस आरामकी इच्छाका प्रतिरोध कर रही है। इस शक्तिकी इच्छाएँ शारीरिक आवश्यकताओंसे प्रतिकूल हैं। नज़ीरके कुछ पद्योंमें इस बातका बहुत खूबीसे वर्णन किया गया है:—

कभी दिल मुझसे कहता है कि चल तू यारके डेरे,
तो तन फिरसे यह कहता है कि मत तू मुझको दुःख देरे।
जो कहना दिलका करता हूँ तो यह रहता है घर मेरे,
वगर तनकी सुनूं तो और दुःख होते हैं बहुतेरे।
न तन माने न दिल माने हर इक अपनी तरफ़ फेरे,
करे क्या कुछ 'नज़ीर' ऐसी जो मुश्किल आनकर घेरे।

तात्पर्य यह है कि मनुष्यमें शरीरके अतिरिक्त एक ऐसी भी चीज़ मालूम होती है जो अपनी विशेषताओं में प्रकृति और शरीर से भिन्न है।

३

'जीवन' भी आत्माके अस्तित्वका एक प्रमाण है। आजकलके वैज्ञानिक कहते हैं कि जीवित वस्तुएँ कार्बन, उज्जन, अम्लजन, नत्रजन (Carbon, Hydrogen, Oxygen, Nitrogen) का रासायनिक समास हैं। यदि यह बात ठीक हो तो इन तत्त्वोंको रासायनिक पद्धतिसे मिलाकर जीवित वस्तुएँ बनाई जा सकनी चाहियें जैसे कि अन्य सहस्रों निर्जीव वस्तुऐं रासायनिक पद्धतिसे बनाई जाती हैं। परन्तु आजतक कोई भी वैज्ञानिक छोटीसे छोटी जीवित वस्तुको केवलमात्र रासायनिक पद्धतिके आधारपर नहीं बना सका। जीवित वस्तुओंका रासायनिक प्रक्रियासे विभाग करने पर उन्हें कार्बन उज्जन आदि रासायनिक तत्त्व ही प्राप्त होते हैं। परन्तु इससे यह सिद्ध नहीं होता कि जीवनका आधार रासायनिक तत्त्वोंके इलावा कुछ नहीं। इससे तो केवल यही सिद्ध होता है कि रासायनिक उपायोंसे और चीरने फाड़नेसे हम केवल प्राकृतिक तत्त्वोंतक ही पहुँच सकते हैं और ये क्रियायें आत्मा जैसी किसी अप्राकृतिक सत्ताका पता लगानेमें अशक्त हैं। यदि वैज्ञानिकोंकी बात मान ली जाए और मनुष्य केवल प्राकृतिक तत्त्वोंका समास हो तो मानना पड़ेगा कि मनुष्यमें पूर्ण बनने का शौक़, मुक्तिकी आकांक्षा, सहानुभूति, अनुकम्पा, तप, बलिदान, भक्ति, सौन्दर्य-प्रेम, न्यायका भाव, जिसके कारण अपने लाभ या हानिकी भी वह परवाह नहीं करता, आपत्तिमें धैर्य, समृद्धि और ऐश्वर्यका प्रेम आदि आदि सब भावनाएँ शरीरकी विशेषताएँ हैं। क्या शरीर के तत्त्व कार्बन, उज्जन और अम्लजन (जिन दोनोंसे मिल कर पानी बनता है) तथा नत्रजन

आदिका इन विशेषताओंसे कोई सम्बन्ध प्रतीत होता है ? यदि नहीं तो मानना पड़ेगा कि मनुष्यमें एक अप्राकृतिक पदार्थ या आत्मा भी विद्यमान है ।

४

मनुष्योंमें बहुतसी असाधारण शक्तियाँ हैं जिनसे वह कई ऐसे काम कर सकता है जो शरीरकी शक्तिसे बाहर हैं । जैसे सौम्नैम्बुलिज़्म (Somnambulism) की हालतमें मनुष्य आँखें बन्द करके देख सकता है, कई लोग इस हालतमें आँखोंपर पट्टी बाँध कर ताश या शतरञ्ज खेलते हैं, सन्दूकोंमें बन्द चीज़को बाहरसे देख लेते हैं । एक कमरेमें बैठे हुए दूसरे बन्द कमरोंकी चीज़ें देख रहे होते हैं और कुछ लोग जिनकी यह शक्ति बहुत बढ़ी हुई होती है, सैंकड़ों हज़ारों मील-तक दूरकी वस्तुओंको देख सकते हैं और वहाँकी आवाज़ोंको सुन सकते हैं (Clair-voyance, Clairaudience) । योरपमें आज-कल ऐसे व्यक्तियोंसे गुम हुए आदमियों और भागे हुए मुजरमोंको तलाश करनेमें मदद ली जाती हैं । कई बार लोगोंको किसी दूर रहने वाले प्रेमी अथवा सम्बन्धीकी तकलीफ़ या मृत्युकी खबर स्वप्नमें मिल जाती है, या जागते हुए बहुत ज़ोरसे उनके दिलमें आ जाती है, अर्थात् उनको खयाल होने लगता है कि ऐसा हुआ है और जाँच करनेपर मालूम होता है कि वह खयाल या स्वप्न ठीक है (Tele-pathy) । ऐसा अनुभव कभी न कभी बहुतसे लोगोंको हुआ होता है । कई लोगोंको यह मालूल हो जाता है कि क्या होनेवाला है, अर्थात् जो कुछ होनेवाला हो उसके बारेमें उन्हें स्वप्न आ जाता है, अथवा जाग्रत्

अवस्थामें ज़ोरसे बार-बार उसका ख़याल आने लगता है (Present-ment)। इसी तरह कई लोगोंको अपने या दूसरोंकी मृत्युकी पहलेही खबर हो जाती है और कुछ लोग आनेवाले कष्टोंकी ख़बर पाकर इन्तज़ाम करके उनसे बच जाते हैं। उदाहरणके लिये फ़्लैमेरियनकी डैथ ऐण्ड इट्स मिस्ट्री (Death and its Mystery) नामक पुस्तक से हम एक घटना नीचे देते हैं:—

"एक आदमी जिसका नाम कैप्टिन लेक ग्रून था, अपने दो लड़कोंको उनके छुट्टीके दिनोंमें साथ लेकर ब्रुकलिन नामक शहरमें सैरके लिये गया। वहाँ उसने अपने लड़कोंसे उन्हें थियेटर दिखानेका वादा किया और पहले ही जाकर टिकट खरीद लिये तथा सीटें रिज़र्व करा लीं। जिस दिन शामको थियेटर जाना था उसे सवेरेसे ही अपने अन्दर आवाज़ आने लगी कि थियेटर मत जाओ, अपने लड़कोंको वापिस स्कूल पहुँचा दो। उसने इस आवाज़की परवा न की, मगर यह आवाज़ बार-बार आने लगी और ज़ोरदार होती गई। अन्तमें परिणाम यह हुआ कि दोपहर तक उसने फ़ैसला कर लिया कि थियेटर नहीं जायँगे। और अपने लड़कोंको आज्ञा दी कि न्यूयार्क चलनेके के लिये तैयार हो जाओ। उसके मित्रों और सम्बन्धियोंने बहुत समझाया कि लड़कोंको थियेटर ले जाना चाहिये क्योंकि तुमने उन्हें वचन दिया हुआ है और न ले जानेपर उन्हें अत्यन्त दुःख होगा। परन्तु उसने किसीकी न सुनी और रवाना हो गया। उसी शामको उस थियेटरमें आग लग गई जिससे ३०५ आदमी मर गये, और जिस सीढ़ीसे हो कर उन बाप-बेटोंको अपनी रिज़र्व की हुई सीटों पर जाना

था और वहाँसे वापिस आना था, उस सीढ़ी परसे उतरने वालोंमेंसे एक भी न बचा। यदि वह थियेटर चला जाता तो वह स्वयं, उसके लड़के और उसकी बहन जिसने उसके साथ जाना था सबके सब काल-के ग्रास हो जाते।

इस प्रकारकी शक्तियां शरीर में नहीं हो सकतीं। शरीर तो वैज्ञा-निकोंके अपने अन्वेषणके अनुसार केवल आँखोंसे देख सकता है और कानोंसे सुन सकता है और वह भी थोड़ी दूर और वह भी प्रकाश आदि साधनोंके होते हुए। भविष्यकालकी बातोंका मालूम हो जाना तो वैज्ञानिकोंको केवल इत्तिफ़ाक़ (Chance) से अधिक कुछ नहीं मालूम होता। इसका अभिप्राय यह है कि वे इनका कुछ सन्तोषजनक कारण नहीं बता सकते। शरीरमें इन शक्तियों और घटनाओंका कोई समुचित कारण नहीं मिलता और इस लिये ये सिद्ध करती हैं कि एक अप्राकृतिक सत्ता भी मनुष्यमें विद्यमान है।

५

हिप्नॉटिज़्म (जो एक नींदकी हालत है, जिसमें मनुष्य किसी और मनुष्यकी इच्छाके सर्वथा वशीभूत हो जाता है) की हालतमें लाकर हिस्टीरिया, पागलपन, अर्द्धांग (Paralysis) आदि दुःसाध्य रोगोंकी चिकित्सा की जाती है। इस हालतमें रोगीको बार-बार कहा जाता है कि—तुम स्वस्थ हो रहे हो, और इसी प्रयोगके कुछ दिन तक करनेसे वह शनैः-शनैः स्वस्थ हो जाता है। रोगीको केवल विश्वास दिलानेमात्रसे चिकित्सा हो जाती है। कई बार ऐसा होता है कि असाध्य रोगोंमें चिकित्सक लोग रोगीको औषधिके स्थानपर केवल

पानी देना शुरू कर देते हैं, किन्तु रोगीको पूरा विश्वास होता है और वह केवल पानीसे ही स्वस्थ हो जाता है। इससे सिद्ध होता है कि विचारका शरीरसे उत्पन्न होना तो एक ओर रहा, शरीर स्वयं विचारके आधीन है और इस लिये विचारका कारण शरीरसे भिन्न प्रकारकी कोई वस्तु अर्थात् कोई अप्राकृतिक सत्ता होनी चाहिये।

६

स्मृति भी आत्माके अस्तित्व में एक प्रमाण है क्योंकि स्मृति तभी हो सकती है जब किसी वस्तुको पहले देखने या सुनने वाली और फिर स्मरण करने वाली सत्ता एक ही हो। यदि देखा किसीने हो और स्मरण कोई और करना चाहेतो यह बात असम्भव है। अतः स्मृतिके लिये किसी अपरिवर्तनशील सत्ताकी आवश्यकता है। परन्तु शरीर तो सदा परिवर्त्तित होता रहता है। वैज्ञानिक स्वयं मानते हैं कि शरीर सदा घिसता और नया बनता रहता है इसलिये स्मृतिका कारण शरीरसे अतिरिक्त कोई चीज़ होनी चाहिये जो परिवर्त्तनशील न हो, और इस अवस्थामें यह अप्राकृतिक ही हो सकती है, क्योंकि प्राकृतिक वस्तुओंमें हमेशा परिवर्तन होता रहता है।

७

उपर्युक्त प्रमाणोंसे स्पष्ट है कि मनुष्यमें एक ऐसी सत्ता भी है जो शरीरसे भिन्न है और अप्राकृतिक है, जिसमें बहुतसी असाधारण शक्तियाँ हैं और जिसपर जीवन, विचार, स्मृति आदि आश्रित हैं। दूसरे शब्दोंमें मनुष्यमें आत्मा भी है। इसके अतिरिक्त यह भी मालूम होताहै कि प्रत्येक मनुष्यमें एक अलग आत्मा है, क्योंकि सबमें यदि एक ही आत्मा हो

तो सब मनुष्योंके कर्म, विशेषताएँ, इच्छाएँ और विचार आदि सब एक जैसे ही होने चाहियें। इसके इलावा प्रत्येक मनुष्य (अर्थात् उसकी आत्मा) अपने आपको अन्य सब वस्तुओं और मनुष्योंसे पृथक् अनुभव करता है किन्तु प्रत्येकको अपने विषयमें यह अनुभव होता है कि मैं वही हूँ जो पहले था, लेकिन यह कभी अनुभव नहीं होता कि मैं वही हूँ जो दूसरा मनुष्य दस वर्ष पहले था। जो लोग सब मनुष्योंमें एकही आत्मा मानते हैं उनमेंसे कई मानवीय आत्माको परमात्मासे पृथक् नहीं मानते। ऐसे लोगोंको यह मानना पड़ेगा कि मनुष्यका पाप परमात्माका पाप है, इससे परमात्मा पूर्ण न रहेगा। अथवा उनको यह मानना पड़ेगा कि पाप कोई चीज़ नहीं, परन्तु यह भी मानव प्रकृतिकी स्वाभाविक और सार्वत्रिक साक्षीके विरुद्ध है, क्योंकि स्वभावतः मनुष्य पाप और पुण्यमें भेद करता है, वह पापसे घृणा और पुण्यसे प्रेम करता है। इसके अतिरिक्त धर्मका सार्वत्रिक होना यह सिद्ध करता है कि धर्म मनुष्यकी एक स्वाभाविक आवश्यकता है। परन्तु आत्मा और परमात्मा यदि एक हों तो पूजा और भक्ति सम्भव नहीं। तब इनकी आवश्यकता ही क्यों अनुभव होती है? यदि मानव आत्मा और परमात्मा एक हों तो कोई कारण नहीं मालूम होता कि संसारमें इतनी विषमता क्यों है? कई अमीर हैं कई ग़रीब, कई सुखी हैं कई दुःखी, कई बुद्धिमान् हैं कई मूर्ख, कई विद्वान् हैं कई निरक्षर, कई भले हैं कई बुरे। परमात्मा होनेके कारण सबके स्वभाव और योग्यताएँ एक जैसी होनी चाहियें। किसी मनुष्यको उसकी किसी विशेषताके लिये अच्छा या बुरा कहना अनुचित होगा क्योंकि मनुष्य परमात्मासे अतिरिक्त न होनेसे

स्वतन्त्र कर्त्ता न रहेगा। उसका प्रत्येक कर्म परमात्माके स्वभावका आवश्यक परिणाम होगा। स्वतन्त्र न होनेसे वह अपने किसी कर्मके लिये उत्तरदायी भी न होगा,इसलिये उसे अच्छा या बुरा कहना भी उचित न होगा। 'अच्छा' या 'बुरा' शब्द या तो निरर्थक होंगे, अथवा उनका प्रयोग केवल परमात्माके लिये हो सकेगा। लेकिन अच्छे और बुरेमें कुछ अन्तर न हो, यह बात जैसा हम ऊपर कह चुके हैं, मनुष्य स्वभाव की सार्वत्रिक साक्षीके विरुद्ध है और यदि परमात्माके लिये 'बुरा' इस शब्द का प्रयोग हो सके तो वह पूर्ण नहीं रहता। सारांश यह है कि आत्माओं को परमात्मासे अलग और एक दूसरेसे भी अलग मानना चाहिये।

८

दर्शनका एक प्रसिद्ध और मान्य सिद्धान्त है कि भावसे अभाव और अभावसे भाव नहीं हो सकता। संसारके दो सर्वश्रेष्ठ दर्शन अर्थात् हिन्दू और यूनानी दर्शन इस सिद्धान्तको मानते हैं। मुस्लिम और ईसाई दर्शन भी इसे मानते हैं, केवल इसके साथ यह शर्त लगाते हैं कि परमात्मा अपनी इच्छासे इस सिद्धान्तके विपरीत भी कर सकता है। इसके विरुद्ध यह नहीं कहा जा सकता कि हम बहुतसी चीज़ें बनती और बिगड़ती देखते हैं। यह बनना और बिगड़ना केवल अवयवोंका संयोग और विभाग है, अवयवोंके नए आकार में मिलनेका नाम पैदा होना तथा अवयवोंके अलग होनेका नाम नाश है। इससे अधिक उत्पत्ति और नाश आत्माके अस्तित्वका निषेध करने वाला आधुनिक विज्ञान भी नहीं मानता। इसके अनुसार भी प्रकृति (Matter) नित्य है, यह घट बढ़ नहीं सकती। इसके अवयवोंका संयुक्त होना वस्तुओं का

बनना है और अवयवोंका विभक्त होना उनका नाश है । इस नियमके अनुसार जो वस्तुएँ अवयवोंसे न बनी हों उनका नाश भी नहीं हो सकता, क्योंकि नाश तो अवयवोंके एक दूसरेसे पृथक् होनेका ही नाम है ।

आत्मा ऐसी चीज़ नहीं है जो अवयवोंका समास हो, यदि आत्मा अवयवोंसे बनी हो तो उसका ज्ञान एक नहीं हो सकता । उदाहरणके लिये दस हज़ार भेड़ोंको एक रेवड़ कहते हैं, ये भेड़ें अपने आपमें तो अलग-अलग दस हज़ार भेड़ें हैं, इनका एक होना अर्थात् रेवड़ होना देखने वालेपर आश्रित है और यह एक रेवड़का ज्ञान तभी हो सकता है यदि दस हज़ार भेड़ोंका ज्ञान एक ही चीज़को हो । यदि आत्माके अवयव हों और एक भेड़का ज्ञान एक अवयवको हो और दूसरी भेड़का ज्ञान दूसरे अवयवको, तो अवयवोंका ज्ञान अलग-अलग रहेगा और आत्माको सारी भेड़ों या रेवड़का ज्ञान कभी नहीं हो सकता । इस तरह यदि सेवके रङ्गका ज्ञान एक अवयवको हो, उसके स्वादका दूसरे अवयवको और उसकी कोमलता-कठोरताका तीसरे अवयवको, तो सारे सेवका ज्ञान किसी भी अवयवको नहीं हो सकता । हम किसी वस्तु या गुणकी किसी और वस्तु या गुणके साथ तुलना कर सकते हैं, जैसे रूपकी शब्दके साथ और कह सकते हैं कि वे एक दूसरेके सदृश हैं या असदृश, लेकिन यह तभी हो सकता है जब दोनोंका ज्ञान इकट्ठा हो । इस तरह हम हज़ार चीज़ों या गुणोंकी भी तुलना कर सकते हैं । यदि कुछ ज्ञान एक अवयवको और कुछ दूसरे अवयवको हो तो इस प्रकारकी तुलना असम्भव है परन्तु क्योंकि हम ऐसी तुलना कर सकते हैं इस लिये सम्पूर्ण ज्ञान एक ऐसी सत्ताको होना चाहिये

जो एक हो और निरवयव हो। इससे सिद्ध होता है कि आत्मा समास अथवा अवयव-संयोगसे बनी हुई वस्तु नहीं है, और जो वस्तुएं अवयवोंसे बनी हुई न हों, उनका नाश नहीं हो सकता। वे अमर होनी चाहियें क्योंकि जैसा हम ऊपर कह चुके हैं, उत्पत्ति और नाश अवयवोंके समस्त या विभक्त होनेसे अतिरिक्त कुछ नहीं है। इसलिये आत्मा नित्य है, शरीरके साथ नष्ट नहीं होती। यदि आत्माको अवयवों-से बना हुआ समास माना जाए तो इसमें उत्पन्न होने वाला ज्ञान भी अवयवोंके ज्ञानका समास होना चाहिये, लेकिन मनुष्यका ज्ञान या विचारधारा समास प्रतीत नहीं होती। समास वह होता है जो अपने अवयवोंके बिना न रह सके परन्तु उसके अवयव उसके बिना रह सकें। जैसे पानी अम्लजन और उज्जनके बिना नहीं रह सकता परन्तु अम्लजन और उज्जन पानीके बिना रह सकते हैं, (अर्थात् उस हालतमें भी रह सकते हैं जब ये पृथक् पृथक् हों और पानी न बना रहे हों)। मकान ईंटोंके बिना नहीं रह सकता परन्तु ईंटें मकानके बिना रह सकती हैं। चेतनामें भी रूप शब्द रस आदिका ज्ञान तथा इच्छा कल्पना आदि विद्यमान हैं जो विचारधाराके अवयवोंकी तरह मालूम होते हैं, परन्तु वास्तवमें ज्ञान इनका समास नहीं क्योंकि ये ज्ञानसे पृथक् नहीं रह सकते। यदि सम्पूर्ण ज्ञान (या किसी समयका विचार-प्रवाह) न रहे तो क्या रूप रस इच्छा आदिका अनुभव जो उसके अवयव प्रतीत होते हैं, शेष रह जायगा? मकानके न रहनेपर भी ईंटें बच रहती हैं। भिन्न भिन्न मकानोंकी ईंटें लेकर एक नया मकान बनाया जा सकता है या एक मकानकी ईंटें दूसरे मकानमें लगाई जा सकती

हैं, परन्तु यह कभी नहीं हो सकता कि ज्ञानके न रहनेपर उसके अवयव बच जाएँ अथवा भिन्न भिन्न लोगोंके ज्ञानके अवयव एकत्रित होकर एक नया ज्ञान बन जाए, या एक आदमीका ज्ञान दूसरे आदमीमें प्रविष्ट हो जाए। प्रत्येक आदमीका ज्ञान उसीमें रहता है। दूसरे आदमीको उन्हीं चीज़ोंका वैसा ही ज्ञान हो सकता है परन्तु किसीको किसी दूसरेके ज्ञानका अनुभव नहीं हो सकता। इस प्रकार हमारा ज्ञान अवयवोंसे अलग और अवयव ज्ञानसे अलग नहीं रह सकते, इसलिये ज्ञान समास नहीं माना जा सकता और इसीलिये ज्ञानके आधार आत्माको भी समास नहीं माना जा सकता, और समास न होनेसे आत्मा नश्वर नहीं हो सकती, अपितु अनादि और अनन्त होनी चाहिये।

६

आत्माके अनश्वर होनेके पक्षमें तो युक्तियां हैं किन्तु उसके नश्वर होनेके पक्षमें कौनसी युक्ति है? शरीरका नाश होता तो हम देखते हैं परन्तु आत्माका नाश तो हमारे देखनेमें कभी नहीं आता। आत्मा शरीरसे पृथक् है इसलिये शरीरका नाश आत्माके नाशमें कोई प्रमाण नहीं है, ऐसी हालतमें आत्माको जो नश्वर कहें उन्हीं पर इस नश्वरताको सिद्ध करनेका उत्तरदायित्व भी होना चाहिये। परन्तु क्या ऐसे लोग कोई युक्ति देते हैं जिससे स्पष्ट सिद्ध हो जाए कि आत्मा नश्वर है? कोई युक्ति या प्रमाण न होनेपर भी आत्माके नश्वर होनेका विचार साधारणतया लोगोंको इसलिये होता है कि वे शरीरको मरता देखते हैं, लेकिन यदि मृत्युके पश्चात् भी आत्माके होनेके कुछ चिह्न मिल जाएँ तो इस विचारका यथार्थ खण्डन हो जायगा। इस

प्रकारके चिह्न कई घटनाओंमें मिलते हैं जो प्रत्येक युगमें होती रहती हैं, इनकी ओर आजकलके अन्वेषकोंने विशेष ध्यान दिया है। कई बार ऐसा होता है कि किसी मृत पुरुषकी आत्मा किसी मनुष्यके सामने स्वप्न या जागृतिकी अवस्थामें प्रगट हो जाती है या अपने होनेका कोई और प्रमाण देती है अथवा कोई फ़ायदेकी बात बताती है जिसका उसे पहले परिज्ञान न हो। इसे स्पष्ट करनेके लिये हम कुछ दृष्टान्त देते हैं:-

फ्रांसके प्रसिद्ध वैज्ञानिक मेफ़्लैरियनने अपनी पुस्तक Mystery of Death में स्वीडनबर्गके सम्बन्धमें, जो योरपमें अपनी आत्मिक उन्नतिके लिये बहुत विख्यात है, निम्नलिखित घटनाका वर्णन कियाहै-"सन् १७६१ में हॉलैण्डके एक भूतपूर्व बज़ीरकी विधवासे उसके पतिके क़र्ज़ख्वाहने २५ हज़ार फ़्लौरेनका तक़ाज़ा किया। उस देवीको मालूम था कि उसका पति यह रक़म अदा कर चुका है। यदि वह उसे दोबारा अदा करती तो उसे बड़े भारी आर्थिक सङ्कटका सामना करना पड़ता। लेकिन रसीद कहीं नहीं मिलती थी। वह स्वीडनबर्गके पास गई और उसके आठ दिन बाद उसे अपना पति स्वप्नमें दिखाई दिया जिसने उसे वह स्थान बताया जहाँ रसीद और एक हेअरपिन (Hairpin) रखा हुआ था। इस हेअरपिनमें बीस हीरे जड़े हुए थे और वह समझती थी कि यह गुमहो चुकाहै। यह घटना रातके दो बजे हुई। बड़ी ख़ुशीमें वह उठी और जो जगह उसके पतिने बताई थी उसी जगह उसे दोनों चीज़ें मिल गईं। वह फिर सो गई और प्रातःकाल नौ बजे तक सोई रही। ग्यारह बजेके लगभगस्वीडनबर्ग उसे मिलने आया और पूर्व इसके कि उसे गत रात्रिकी घटनाके बारेमें कुछ बताया जाता, उसने कहा कि गत रात्रिको ऐम० डी० मार्टविल (यह

हॉलैण्डके उस मृत वज़ीरका नाम था) की आत्मा मुझे मिली थी और उसने मुझे कहा था कि मैं अपनी विधवाके पास जा रही हूँ ।"

फ़्लैमेरियनकी उपर्युक्त पुस्तकमेंसे हम एक और घटना नीचे देते हैं । इस घटनाको प्रोफ़ेसर हिसलपने जांच करके प्रमाणित किया और पांच गवाहोंने अपनी साक्षियोंके आधारपर इसकी पुष्टि की । इन गवाहोंमेंसे एक, डाक्टर ऐच० ए० किनेमैन निम्नलिखित कहानी बयान करता है:—"मेरे चचा डब्ल्यू किनेमैन, मेरे पिता जेकब कनेमैन और आडम्स नामक एक और नवयुवककी आपसमें घनिष्ठ मित्रता थी। ये सब चिकित्सा शास्त्रके विद्यार्थी थे। एक दिन इन्होंने आपसमें प्रतिज्ञा की कि यदि हम तीनोंमेंसे कोई यौवनमें ही मर जाए तो शेष दोको अधिकार होगा कि वे वैज्ञानिक पर्यवेक्षणके लिये उसके शरीरपर क़ब्ज़ा कर लें परन्तु इस शर्तपर कि अस्थिपञ्जर हमेशा मित्रोंके पास ही रहे। यदि कभी ऐसा अवसर आ जाए कि यह शर्त पूरी न की जा सके तो पिञ्जरको दबा दिया जाए। आडम्सने कहा यदि मैं मर गया तो मैं आग्रह करूंगा कि इस शर्तको बिल्कुल पूरा किया जाए, अन्यथा मैं शोर करके इस शर्तको पूरा न किये जानेका विरोध करूंगा। कुछ समयके बाद नवयुवक आडम्स मर गया । मेरे चचाने सबसे बड़ा भाई होनेके कारण शरीरको ले लिया। पिञ्जरको बाक़ायदा जोड़ा और मृत्युपर्य्यन्त आपने पास रखा। इसके बाद मेरे पिता डॉक्टर जेकबने उसे रखा । फिर उसके भाई डॉक्टर लौरेन्सने और फिर डाक्टर जैक्सनने। इसके बाद मेरे भाई रॉबर्टने और अन्तमें मेरे दूसरे भाई चॉर्ल्सने इसे अपने पास रखा । इस दीर्घकालमें देखा गया कि जब तक शर्तें पूरी की जाती थीं आडम्स चुप रहता था, लेकिन यदि

इनकी उपेक्षा की जाती तो कष्ट उठाना पड़ता था। मुझे याद है कि १८४६ में जब मैं अभी बच्चा ही था, मेरे पिताको कुछ समयके लिये कैलिफ़ोर्निया जाना पड़ा और पिञ्जरको मकानकी सबसे ऊपरकी छत पर एक छोटे कमरेमें रख दिया गया। यह बात आडम्सको पसन्द न थी। उसी रातको उस कमरेतक जाने वाली सीढ़ियोंपर चढ़ते और उतरते हुए तथा कमरेके अन्दर जाते और बाहर आते हुए भारी क़दमों कीसी आवाज़ सुनाई दी। घरके सब लोग सो नहीं सकते थे। इसलिये मेरी मां बड़े चक्करमें थी, उसने मेरे चचासे प्रार्थना की कि हमें आडम्स की हड्डियोंसे रिहाई दो। वह मान गया, और ज्यों ही उसने उन्हें अपनी संरक्षामें ले लिया, घरमें फिर एक बार शान्ति हो गई। मेरे चचाने बहुत दिनों तक हड्डियोंको अपने दफ़्तरमें रखा, लेकिन एक दिन उसने सोचा कि इन्हें घरके एक परले कोनेमें रख दिया जाय। इमारतके इस परले कोनेमें दो परिवार और रहते थे, रातको वहां विचित्र आवाज़ होने लगी जिसका कोई कारण समझमें नहीं आता था। इसलिये उन परिवारोंको शीघ्र ही वह मकान छोड़ देना पड़ा। जब ये परिवार चले गये तो इस घरमें कोई न रह सकता था। जब मेरे पिता कैलिफ़ोर्नियासे वापिस आये तो उन्होंने फिर आडम्सके पिञ्जरको अपने दफ़्तरमें रख लिया। इससे फिर एक बार सुख शान्ति होगई। सन् १८७४ में मेरे पिताकी मृत्यु हो गई और मेरे भाईने हड्डियां उत्तराधिकारमें पाईं। उसने उन्हें अपने दफ़्तरके पास वाले कमरेमें एक चारपाईके नीचे रख दिया। एक दिन उसने सोचा कि इन्हें एक पड़ोस वाले मकानकी नीचेकी कोठरीमें रख दिया जाए जिसमें इमारत बनानेका सामान पड़ा

रहता है। हड्डियोंको वहां कारीगरोंको बताए बिना ही रख दिया गया। परन्तु थोड़े ही दिनोंके बाद कारीगरों और मज़दूरोंने शामके समय उस कोठरीमें जानेसे इनकार कर दिया, क्योंकि वहां विचित्र आवाज़ें सुनाई देती थीं। मेरी मां पिञ्जरको वापिस ले गई और वहां फिर शान्ति हो गई। आडम्सकी हड्डियां अभी तक मेरे परिवारमें हैं।"

दूसरे और तीसरे गवाह डाक्टर सी० एल० किनेमैन और डाक्टर आर० सी० कनीमैनने घरके ऊपर वाले कमरेमें आवाज़ होनेके बारेमें बहुतसी बातें बताई हैं और लिखा है कि जब कोई उस कमरेको देखने जाता था तो आवाज़ बन्द हो जाती थी और सब चीज़ें अपनी जगहपर पड़ी दिखाई देती थीं,लेकिन जब वह लौट आता था तो आवाज़ फिरसे शुरू हो जाती थी। आवाज़ कभी बहुत ऊँची होती थी जैसे कोई बहुत भारी चीज़ सीढ़ियोंसे नीचे लुढ़क रही हो और कभी बहुत धीमी होजाती थी। परन्तु विस्तारभयसे हम इस वर्णनको और लम्बा नहीं करते।

मृत्युके पश्चात् आत्माके अस्तित्वकी ओर सङ्केत करने वाली असंख्यात घटनाएँ आजकलके अन्वेषकोंने संगृहीत की हैं, यहां नमूनेके तौरपर ये दो पर्याप्त हैं।

(१०)

उपर्युक्त विवेचना और युक्तियोंके आधारपर हम कह सकते हैं कि मनुष्यमें शरीरसे अतिरिक्त एक अप्राकृतिक सत्ता अर्थात् आत्मा भी है, जो अवयवोंसे बना हुआ समास नहीं है, जो अनश्वर और अमर है, जिसका न तो कभी आरम्भ हुआ है और न ही अन्त होगा। आत्मा के अनश्वर और नित्य होनेके पक्षमें यूनानके प्रसिद्ध

दार्शनिक अफ़लातून और पोलैण्डके ल्यूटोस्लॉस्कीकी एक एक युक्ति लिखकर हम इस विवेचनाको समाप्त करते हैं । अफ़लातून कहता है कि कोई वस्तु यदि मर सकती है तो अपनी कमी या अस्वस्थतासे, जैसे विष शरीरको तभी नष्ट कर सकता है यदि यह शरीरमें कोई अस्वस्थता उत्पन्न कर दे । लेकिन जो वस्तु अपनी अस्वस्थतासे भी न मरे वह किसी प्रकार भी नहीं मर सकती क्योंकि बाहरका असर भी इस वस्तुके अन्दर अस्वस्थता पैदा करके ही इसे मार सकता है। आत्माकी मृत्यु अपनी अस्वस्थतासे नहीं होती। यदि आत्माका नाश अपने रोगसे हो सकता तो मुजरमको मारनेके लिये जल्लादकी आवश्यकता न होती। वह आत्माके मर जानेसे स्वयं ही मर जाता। इसलिये आत्माका नाश इसके अपने रोगसे नहीं हो सकता और यदि अपने रोगसे इसका नाश नहीं हो सकता तो किसी तरह भी नहीं हो सकता।

ल्यूटोस्लॉस्की लिखता है कि आत्मा अनश्वर है, इसलिये इसका आरम्भ भी नहीं हो सकता, क्योंकि जिस चीज़का आरम्भ होता है उसका अन्त भी अवश्य होता है। आत्माका चूंकि अन्त नहीं इसलिये आरम्भ या आदि भी नहीं हो सकता। प्रत्येक मनुष्यको अनुभव होता है कि—मैं स्वतन्त्र हूँ, कुछ सीमाओंतक जो चाहूँ कर सकता हूँ। स्वातन्त्र्यका अर्थ है किसी पर आश्रित न होना। यह स्वातन्त्र्यका भाव क्योंकि आत्मामें अब विद्यमान है इसलिये पहले भी होना चाहिये था, लेकिन यदि आत्माका आरम्भ होता तो इसका कारण भी होना चाहिये था, और यदि इसका कारण होता तो इसमें स्वतन्त्रता नहीं हो सकती थी क्योंकि तब आत्मा अपने कारणपर आश्रित होती।

छठा अध्याय

पुनर्जन्मपर आक्षेप और उनका समाधान (२)

(१)

पुनर्जन्मके सिद्धान्तपर एक बड़ा आक्षेप यह किया जाता है कि साधारण लोगोंको अपने पूर्वजन्मका स्मरण नहीं होता। यदि स्मृति आत्माका एक गुण है और एक ही आत्मा कई जन्मोंमें से गुज़रती है तो प्रत्येक मनुष्यको अपने पूर्वजन्मों और उनकी घटनाओंका स्पष्टरूप से स्मरण होना चाहिये, जैसे प्रतिदिन सोनेके बाद हमें इस जीवनके बीते हुए दिनोंकी घटनाएं याद होती हैं। यदि इस जन्मकी आदतों, विशेषताओं और योग्यताओंकी व्याख्या अतीत जन्मोंकी परिस्थितियों और क्रियाओंसे की जाती है तो आवश्यक है कि उनका स्मरण होना चाहिये, अन्यथा वे इस जन्मकी विशेषताओं आदि का कारण कैसे कही जा सकती हैं? इसका उत्तर यह दिया जा सकता है कि कुछ आदमियोंको अपना पूर्वजन्म और कइयोंको बहुतसे जन्म याद होते हैं जैसे यूनानी दार्शनिक पाइथेगोरसको अपने पिछले सात जन्म अलग अलग याद थे और इनमेंसे प्रत्येककी कुछ घटनाएं वह बता सकता था। वर्त्तमान युगमें ऐनी बेसेण्ट अपने पिछले सात या आठ जन्मोंके विषयमें बताया करती थी। ऐसे आदमी तो कई देखनेमें आते हैं जो अपने

पिछले एक जन्मके बारेमें बताते हैं। ऐसे मनुष्योंके कुछ दृष्टान्त हम तीसरे अध्यायमें लिख आये हैं। परन्तु इस प्रकारके उदाहरणोंके होते हुए भी यह मानना पड़ेगा कि बहुतसे लोगोंको अपना पिछला जन्म याद नहीं होता, कुछ लोंगोको कभी-कभी याद आता है और कुछको यदि बचपनमें याद होता है तो आगे चलकर भूल जाता है। लेकिन कदाचित् ध्यान देनेसे मालूम हो कि इससे पुनर्जन्मका सिद्धान्त कुछ भी कमज़ोर नहीं होता। हमें इस जन्मकी बहुतसी बातें भूल जाती हैं। दस वर्ष पहलेकी बातें किसे याद हैं ? बड़े होकर बचपनकी बातें प्रायः भूल चुकी होती हैं या बहुत कम याद होती हैं। किसी घटनाकी बहुतसी बातें तो फ़ौरन भूल जाती हैं, केवल कुछ बातें जो ध्यान खींचने वाली हों याद रह जाती हैं। बुढ़ापेमें बहुतसे आदमियोंको तो विस्मरण रोग हो जाता है। एक प्रसिद्ध लेखक बुढ़ापेमें अपनी लिखी हुई पुस्तकें पढ़कर मज़ा लिया करता था लेकिन यह उसे कभी सन्देह भी नहीं होता था कि ये पुस्तकें मेरी अपनी लिखी हुई हैं। जवान होकर बचपनके साथियोंके चेहरे जिन्हें देरसे न देखा हो किसे याद रहते हैं ? बड़ी उमरमें जवानी और बचपनकी जो याद रह जाती है वह स्वप्नकी सी होती जाती है। आतिश कविने कहा है—

"बयां ख्वाबकी तरह जो कर रहा है,
यह क़िस्सा है जबका कि आतिश जवां था।"

इससे मालूम होता है कि भूलना मनुष्यकी एक विशेषता है याद कर सकना और भूल जाना दोनों समान रूपसे आत्माके गुण हैं। ऐसी हालतमें पूर्वजन्मकी घटनाओंका भूल जाना भी ऐसा ही स्वाभाविक

है जैसा इस जन्मकी घटनाओंका भूल जाना। पिछले जन्मोंकी घटनाएँ अधिक भूलनी चाहियें क्योंकि उन्हें अपेक्षाकृत अधिक देर हो चुकी है। भूलना न केवल अनिवार्य है, अपितु यह एक सौभाग्यकी बात है। यदि सब कुछ याद रहे तो हमें अपने सब दुःख और कष्ट भी याद रहा करें, परिणामतः हम सदाके लिये मुसीबतमें पड़ जाएँ। यदि किसीने हमारा अपराध किया हो या हमें क्षति पहुँचाई हो तो क्षमा करना असम्भव हो जाए।

आधुनिक मनोविज्ञान हमें बताता है कि यदि हमें कुछ न भूले तो किसी गुज़री हुई घटना को याद करनेमें उतना ही समय लग जायगा, जितना समय उसे गुज़रे हुए बीत चुका है। क्योंकि उसके याद आनेसे पहले प्रत्येक छोटीसे छोटी बातभी याद आएगी जो उस समयसे अबतक हुई हो। और चूंकि प्रत्येक छोटीसे छोटी बात याद आएगी, इसलिए जितना समय किसी घटनाके होनेमें लगेगा उतना ही उसके याद करनेमें लगेगा। हमारी स्मृति शक्ति परिमित है और यदि हम कुछ न भूलें तो व्यर्थ बातोंसे ही हमारा मस्तिष्क भर जायगा। उपयोगी बातोंके लिये स्थान ही नहीं रहेगा। सीखनेके लिये भूलना अत्यन्त आवश्यक है। इससे स्पष्ट है कि भूलना लाभकर है।

सारांश यह है कि यदि इस जन्मकी बातें याद नहीं रह सकतीं तो पूर्वजन्मकी कैसे रह सकती हैं? इससे पहले कि पूर्वजन्मकी बातें याद हों इस जन्मकी सब बातें याद होनी चाहियें। इसपर भी आक्षेप किया जा सकता है कि यद्यपि इस जन्मकी सब बातें याद नहीं होतीं परन्तु कुछ

बातें अवश्य याद होती हैं। इसी तरह पूर्वजन्मकी सब बातें चाहे याद न हों परन्तु कुछ बातें अवश्य याद होनी चाहियें। जीवनके जिस भागको व्यतीत हुए जितनी देर हो चुकी होती है उतनी ही कम घटनाएं साधारणतया उसके बारेमें याद होती हैं। पिछले जन्मोंको तो बहुत देर हो चुकी है, इसलिये उनकी कम घटनाएं याद हों परन्तु कुछ न कुछ तो अवश्य याद होनी चाहियें। इसका समाधान हम इस प्रकार कर सकते हैं कि पिछले जन्मोंकी घटनाएँ याद हो सकती हैं और होती हैं, यद्यपि उनके याद होनेका ढंग और होता है और हमें प्रगट रूपसे मालूम नहीं होता कि वे याद हैं। किसी चीज़का प्रगट रूपसे स्मरण न होना इस बातका प्रमाण नहीं कि वह चीज़ बिल्कुल याद नहीं। हम देखते हैं कि इस जन्मकी भी कई बातें किसी मनुष्यको याद होती हैं, यद्यपि प्रगट रूपसे वे भूली हुई होती हैं और उसे मालूम नहीं होता कि वे मुझे याद हैं, परन्तु विशेष अवस्थाओंमें वे उसे याद आ जाती हैं। इससे सिद्ध है कि वस्तुतः वे उसे याद हैं। लीडियन लिखता है कि एक बार एक स्त्री एक थियेटरमें गई। उसके बाद सौम्नैम्बुलिज़्म (Somnambulism) की हालतमें वह उस नाटकका दूसरा अङ्क शब्दशः दोहराती थी जो उसने थियेटरमें सुना था परन्तु साधारण जागृत् अवस्थामें वह उसे बिल्कुल याद नहीं था। इंग्लैण्डका कवि कोलरिज (Coleridge) एक नौकरानीके विषयमें लिखता है कि वह बिल्कुल मूर्ख और अनपढ़ थी और कभी-कभी दीवानी हो जाती थी। उस दीवानगीकी अवस्थामें वह लातीनी, (Latin) यूनानी (Greek) और सुरयानी (Hebreew) के लम्बे-लम्बे वाक्य बोला करती थी। खोज करने पर मालूम हुआ कि

उसे एक पादरीने पाला था और बचपनमें वह पादरीको पढ़ता सुनती थी। वही पादरीके वाक्य उसे अक्षरशः याद रह गये थे। परन्तु साधारणतया मस्तिष्कके स्वस्थ होनेकी अवस्थामें उसे एक अक्षर भी याद न होता था और सन्देह तक भी न होता था कि वे उसे याद हैं, मानो उसकी स्मृतिकी गहराइयोंमें उनकी याद छिपी पड़ी थी, यद्यपि उसे स्वयं भी मालूम न था कि वे मुझे याद हैं। इससे ज्ञात होता है कि स्पष्टरूपसे किसी चीज़का याद न होना इस बातका प्रमाण नहीं है कि चीज़ सर्वथा भूली हुई है। इस जन्ममें जीवन या उसके किसी भागकी सम्पूर्ण घटनाएं ऐसी भूल सकती हैं मानो वह कभी हुई ही न थीं।* एक युवती जिसका नाम मेरी रैनल्ड्स था अपने मामूली वक्तपर सो कर नहीं उठी, जगानेपर जागती न थी, बीस घण्टों के बाद वह जागी, उसकी विचित्र हालत थी। उसे अपने जीवनकी कोई बात याद न रही। वह एक ऐसे मनुष्यकी तरह थी जो अभी पहली बार दुनियामें आया हो। केवल थोड़ेसे शब्द उसे याद रह गए थे परन्तु उनके भी अर्थ वह भूल गई थी। अपने मां-बाप भाई-बहनों और मित्रोंमेंसे किसीको नहीं पहिचानती थी। उन्हें कहती थी कि—मैंने तुम्हें पहले कभी नहीं देखा। अपना घर और आस-पास की वस्तुएं उसे नई मालूम पड़ती थीं। उसे फिरसे बताना पड़ा कि तुम्हारे घरके लोगों का तुम्हारे साथ क्या सम्बन्ध है। पढ़ना-लिखना उसे फिरसे सिखाया गया। परन्तु ध्यान देने योग्य बात यह है कि वह पढ़ना लिखना कुछ ही दिनोंमें सीख गई जैसे कई लोग किसी विद्या

* Principles of Psychology by W. James.

या कलाको बड़ी सुगमतासे सीख जाते हैं। उसका स्वभाव भी बदल गया। पहले वह उदास रहा करती थी, अब खुश रहने लगी। वनोंमें भ्रमण करने और प्राकृतिक दृश्य देखनेका उसे बहुत शौक़ हो गया। इसी तरह पांच सप्ताह तक होता रहा। एक दिन फिर वह एक असाधारण दीर्घ निद्राके पश्चात् उठी और उसकी पूर्वावस्था लौट आई। वह अपने सम्बन्धियोंको पहिचानने लगी। जो काम उसने इस अरसे से पहले शुरू किए हुए थे, वे उसे फिर याद आ गये और वह उन्हें करने लगी, लेकिन बीच के पांच सप्ताहों की कोई भी बात उसे याद न रही। इसी तरह १५ वर्ष तक उसकी अवस्थाएं परिवर्त्तित होती रहीं। दूसरी अवस्थामें पहलीकी कोई बात याद नहीं होती थी परन्तु दूसरीकी सब बातें याद होती थीं। इसी प्रकार पहलीमें दूसरी अवस्था सर्वथा भूल जाती थी। इस तरह एकके स्थानपर उसके दो जीवन (Double Personality) हो गए। प्रत्येकमें दूसरी अवस्थाका भूला हुआ होना इस बातका प्रमाण न था कि वह वास्तव में भूली हुई थी क्योंकि फिर कभी वह याद आजाती थी। यदि इस जन्मकी बातें इस तरह भूल सकती हैं तो दूसरे जन्मकी क्यों नहीं भूल सकतीं ? क्या इस युवतीका दूसरी अवस्थामें कुछ ही दिनोंमें पढ़ना लिखना सीख जाना ऐसा ही मालूम नहीं होता जैसा कि कई लोग किसी विद्या या कलाको बहुत जल्दी सीख जाते हैं। बहुतसे लोगोंको किसी न किसी बातका स्वाभाविक शौक़ होता है जिसमें वे शीघ्र ही उन्नति करते हैं। इस युवतीके जल्दी सीख जानेका कारण यह था कि वह पहले पढ़े हुएको फिरसे पढ़ रही थी। ऐसे ही क्या इन जल्दी सीखने

वालों और स्वाभाविक रुचि रखने वालोंका युक्तियुक्त कारण यह नहीं हो सकता कि ये भी पहले जन्ममें सीखे हुएको फिरसे सीख रहे हैं।

† कुछ साल हुए बोस्टन (अमरीका) के एक पादरीके सम्बन्धमें अखबारमें यह खबर प्रकाशित हुई थीः—

"यह पादरी एक दिन बैंकमेंसे कुछ रुपया निकलवाने गया। रुपया निकलवाकर एक ट्राम गाड़ीमें बैठ गया। उसके बाद कई सप्ताह गुम रहा। उसके घर वालों और मित्रों ने इसकी कोई खबर न सुनी। इस घटना के कुछ दिन बाद पैन्सिलवेनियामें एक आगन्तुक आया, उसने शीशोंका एक स्टोर खरीद लिया और उसे लेकर बड़े परिश्रमसे दूकान करने लगा। कुछ काल बाद वह बीमार हो गया और उसे बेहोशी रहने लगी। एक दिन वह जागा और अपनी नर्ससे पूछने लगा— मैं कहां हूं। उसने जवाब दिया—पैंसिलवेनियामें। उसने पूछा—मैं यहां कैसे आगया, मैं तो बोस्टनका रहनेवाला हूं। नौकरानीने जवाब दिया—तुम तीन महीनेसे यहां रहते हो और अमुक स्टोरके मालिक हो। उसने कहा—तुम ग़लती करती हो, मैं तो बोस्टनके अमुक गिरजेका पादरी हूं। जिस समयसे उसने रुपया निकलवाया था तब से तीन महीने तककी उसे बिल्कुल कोई बात याद नहीं थी, और उन तीन महानोंमें उसे पहला जीवन सर्वथा भूल गया था।"

यदि इस जीवनमें इस प्रकार के परिवर्त्तन आ सकते हैं तो मृत्युके

† Principles of Psychology by W. James.

बाद क्यों नहीं। बहुत सम्भव है कि मृत्युके बाद आत्मामें कुछ इस प्रकार का परिवर्त्तन हो जाता है जैसा इस पादरी में तीन महीने के लिये हुआ। मृत्यु आत्माके जीवनकी समाप्ति नहीं तो भी उसके जीवनमें एक महत्त्वपूर्ण घटना अवश्य है। इसलिये स्वभावतः आशा की जा सकती है कि उस समय आत्माके ज्ञानमें कुछ परिवर्त्तन आएं। कई ऐसे चिह्न मिलते हैं जिनसे प्रतीत होता है कि ऐसे परिवर्त्तन होते हैं। कहा जाता है कि कई बार मरनेसे पहले इस जीवनका सम्पूर्ण घटनाचक्र जल्दीसे आँखके सामनेसे गुज़र जाता है। हैडक लिखता है कि समुद्रीय सेनाका सेनापति ब्यूफर्ट डूब गया, लेकिन उसे बचा लिया गया। दो मिनटतक वह बेहोश रहा। इस दो मिनटके अरसेमें उसके जीवनकी समस्त घटनाएँ, उसके सब कार्य और उनके परिणाम, उनके बारेमें उसकी अपनी अच्छी या बुरी सम्मति, सब उसके दिमाग़में से गुज़र गये। फ्रांसका प्रसिद्ध वैज्ञानिक फ्लैमेरियन (Camille Flammarion) अपने एक मित्र ऐलफ़ॉन्स ब्यू (Alphonse Bue) के विषयमें लिखता है कि वह एक बार घोड़े पर सवार होकर ऐलजेरिया (अफ्रीका) में एक पहाड़ी ग़ारके किनारेके साथ साथ जा रहा था, अचानक उसका घोड़ा ठोकर खाकर सवार सहित ग़ारमें गिर पड़ा। सवार बेहोश हो गया और तीन चार सैकण्ड में उसे होश आ गई। परन्तु इस तीन चार सैकण्डके अरसेमें शुरूसे लेकर तबतक उसका सारा जीवन धीमे धीमे और बहुत स्पष्टरूपसे उसकी आंखोंके सामनेसे गुज़र गया। उसका बचपन, उसके लड़कपन की खेलें, उसकी जमाअतें, उसकी छुट्टियां, उसका विविध विषयोंको

पढ़ना, उसकी परीक्षाएँ, उसका सैनिक जीवन, उसके युद्धविषयक अनुभव, उसका धार्मिक जीवन, उसका राजमहलके आमोदमें सम्मिलित होना आदि आदि समस्त घटनाएँ एक निरन्तर चित्रके रूपमें उसकी अन्तर्दृष्टिके सामनेसे गुज़र गईं। ऐसी घटनाओंसे हम अनुमान कर सकते हैं कि मृत्युके समय हमारी स्मृति आदिमें एक विचित्र हलचल पैदा होती होगी जिससे गहरे परिवर्त्तनोंका होना स्वाभाविक बात हो।

स्मृतिमें कुछ परिवर्त्तन हम वर्त्तमान जीवनमें भी होते हुए देखते हैं:—

जब हम किसी चीज़को सीखते हैं तो बहुतसे। नियमोंका ध्यान रखना पड़ता है और बहुतसी बातोंको याद करना पड़ता है। परन्तु ज्यों ज्यों हमें अभ्यास होता जाता है, नियम सब भूलते जाते हैं बहुतसी बातोंपर ध्यान देनेकी ज़रूरत कम हो जाती है। परन्तु हमें उस चीज़का करना आजाता है यद्यपि हमें स्वयं नहीं मालूम होता कि हम कैसे इसे कर लेते हैं। हमारा एक स्वभावसा बन जाता है जिसके द्वारा बिना बहुत सोचनेके और बिना बहुत प्रयत्नके हम उस चीज़को कर लेते हैं। उदाहरणके लिये जब हम तैरना या बाईसिकलपर चढ़ना सीखते हैं तो बहुतसे नियमोंको ध्यानमें रखना पड़ता है तथा कई बातोंका विशेष ध्यान रखना पड़ता है। तैरनेमें सीखने वाला यदि हाथ चलाता है तो पांव चलाना भूल जाता है। परन्तु जब अभ्यास हो जाता है तो किसी बातपर ध्यान नहीं दिया जाता। वही व्यक्ति अब तैरता जाता है। किन्तु उसे मालूम नहीं कैसे। तैरना उसका स्वाभावसा बन जाता है और सर्वथा कभी नहीं भूलता। इसी तरहसे विद्यार्थी जब संस्कृत या

अंग्रेज़ी पढ़ने लगाता है तो लिखने और बोलनेमें व्याकरणके नियमों का बहुत ध्यान रखता है, पर थोड़ासा अभ्यास होने पर व्याकरणके नियम सब भूल जाते हैं, उनकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया जाता। लेकिन भाषा उसके स्वभावका अङ्ग बन जाती है। कोई ग़लती उसके कानको बुरी लगने लगती है चाहे उसके सम्बन्धमें व्याकरणका नियम न भी याद हो। अन्य क्षेत्रोंमें भी यही हाल है। एक नये हकीमको चिकित्साकी पुस्तकें, रोगोंके लक्षण और निदानके नियम खूब याद होते हैं और वह किसी रोगीको देखने पर बहुत ध्यानसे उनके द्वारा तर्क करता हुआ किसी परिणामपर पहुँचता है, फिर भी प्रायः ग़लती करता है। परन्तु एक अभ्यस्त अनुभवी हकीम शायद बहुतसे नियम और लक्षण भूल चुका होता है, लेकिन किसी रोगीको देखते ही या नाड़ीपर हाथ रखते ही उसे सूझ जाता है कि अमुक रोग है और उसका अनुमान प्रायः सत्य होता है। यही हाल किसी वकील या व्यापारी अथवा किसी और पेशे वालेका है। इससे हम देखते हैं कि जितनी किसी चीज़में हम कुशलता प्राप्त कर लेते हैं उतनी ही वह चीज़ स्मृतिके क्षेत्रसे निकलकर हमारे स्वभाव (Intuition or Instinct) का अङ्ग बनती जाती है। इसी तरह यह हो सकता है कि पूर्वजन्ममें जो बातें हमने सीखी हों या जो अनुभव हमने प्राप्त किए हों वे स्मृतिके क्षेत्रसे निकलकर आत्माके संस्कारोंमें परिणत हो गए हों। इस विचार की पुष्टि इस बातसे होती है कि आत्मापर संस्कार तो होते ही हैं क्योंकि प्रत्येक मनुष्यकी जन्मसे कुछ रुचियां और प्रवृत्तियां होती हैं। कई पापसे प्यार करते हैं, कई पुण्यसे। कई विद्याओंके शौक़ीन होते हैं तो

कई कलाओंके। कई डरपोक होते हैं तो कई साहसी, यद्यपि बहुतसी हालतोंमें मां-बापमें भी ये गुण नहीं होते। इस प्रकार पिछले जन्मोंका स्मरण सम्भव है, यद्यपि हम साधारणतया इसे पहचान न सकें और प्रायः पिछले जन्मोंका स्मरण न होना इस बातका प्रमाण नहीं कि यह वास्तवमें ही भूल गए हैं।

सारांश यह है कि पुनर्जन्मके सिद्धान्तके अनुसार शारीरिक मृत्यु आत्माके जीवनकी समाप्ति नहीं, यद्यपि इसमें एक महत्त्व पूर्ण घटना अवश्य है। मृत्युके समय आत्माकी स्मृतिमें परिवर्त्तन होते हैं, जिससे पिछले जन्मके प्रायः सब अनुभव संस्कारोंमें परिणत हो जाते हैं। कुछ स्वाभाविक रूपसे भूल चुके होते हैं और कुछ याद रह जाते हैं जो स्मृतिकी गहराइयोंमें छिपे पड़े रहते हैं, और किसी समय प्रगट हो सकते हैं और कई व्यक्तियोंमें प्रगट हो जाते हैं जैसा कि हम ऊपर कह चुके हैं कि कई आदमियोंको पिछले जन्मकी कोई बात कभी अचानक याद आजाती है जबकि साधारणतया उन्हें वह बात सर्वथा याद नहीं होती। ऐसी बातोंका साधारणतया भूल होना इस बातका प्रमाण नहीं कि वे वस्तुतः याद नहीं है। प्रत्येक मनुष्यकी स्मृतिमें ऐसी बातें होती हैं जो उसे स्वयं भी ज्ञात नहीं होतीं और जिनका क्रियात्मक प्रमाण कभी-कभी मिल जाता है। आजकल मानसिक विश्लेषण (Psycho-Analysis) करने वाले इस बात पर ज़ोर दे रहे हैं कि बचपन की बहुत सी बातें प्रगटरूपसे भूली हुई होती हैं परन्तु वस्तुतः याद होती हैं और मनुष्यके व्यक्तित्व पर गहरा असर डाल रही होती हैं।

यदि प्रश्न किया जाए कि जब प्रायः सब बातें संस्कारोंमें परिणत हो गई हैं तो कुछ क्यों याद रह गई हैं, उनमें क्या विशेषता है अन्यों से उनमें क्या अन्तर है ? इसका उत्तर भी हमें वर्त्तमान जीवनकी स्मृतिके नियमोंसे मिल सकता है। इस जीवनमें हम देखते हैं कि बचपन, लड़कपन, जवानी और बुढ़ापे की कई घटनाएं हमें याद होती हैं जबकि उनके साथ और उनसे पीछे होने वाली असंख्यात घटनाएँ भूल चुकी होती हैं। आधुनिक मनोविज्ञानवेत्ता इसके कई कारण बताते हैं। जैसे यह कि ऐसी घटनाएँ हमारे ऊपर गहरा असर डालने वाली थीं। अथवा सुख दुःख या कोई अन्य भाव पैदा करने वाली थीं। किसी विशेष भाव को पैदा करने वाली घटनाएँ बहुत देर तक याद रहती हैं, बल्कि उसी समय उनके साथ होनेवाली घटनाएँ भी याद रह जाती हैं। प्रत्येक मनुष्यका वैयक्तिक अनुभव इसमें प्रमाण है और आधुनिक विज्ञानके अन्वेषणसे भी इसकी पुष्टि होती है। हम नीचे इस सम्बन्धमें एक घटना देते हैं:—

मिस ल्यूसी आर (Miss Lucy.R.) एक अंग्रेज़ स्त्री संयुक्तप्रान्त अमेरिका (U. S. A.) में एक जर्मन कारखानेके मालिकके यहाँ बच्चों की धात्री (Governess) थी। एक दिन वह डाक्टर फ्रूडके (Freud) पास इसलिये आई कि उसे हमेशा जले हुए हलवेकी गन्ध आती रहती थी। खोज करने से मालूम हुआ कि उसकी देख रेखमें जो बच्चे थे वे एक दिन खेलमें ही लगे रहे और उनका हलुआ आगपर पड़ा हुआ जल गया वहींसे जले हलवेकी गन्धका आरम्भ

हुआ था, लेकिन यह बात समझमें नहीं आती थी कि यह गन्ध उसके दिमाग़में ऐसी क्यों गड़ गई कि हमेशा ही उसे आती रहे । डॉक्टर फ्रूडने उसे थोड़ासा हिप्नॉटाइज़ (Hypnotize) करके जले हुए हलुएके दिन वाली घटनाओंका चित्र अपने सामने लाने का आदेश दिया और इस तरह बहुत देरमें पता लगा कि उसी समय जब हलवा जला था तो एक और घटना भी हुई थी। उस कारखानेके मालिकका बड़ा ख़ज़ाञ्ची जो प्रायः आया करता था, उस दिन भी भोजन करने उसके यहाँ आया हुआ था। जब वह जाने लगा तो उसे एक बच्चा बड़ा प्यारा मालूम हुआ और उसने ऐसी चेष्टा की मानो वह उसे पकड़कर चूमने लगा हो। इसपर मालिक ज़ोरसे बोल उठा कि— बच्चेको मत चूमो। एक मित्रके साथ ऐसा दुर्व्यवहार किया गया और वह भी एक ऐसे मनुष्यने किया जिसे वह स्त्री बड़ा कोमल हृदय समझती थी और जिससे वह आशा करती थी कि शायद वह कभी मेरे साथ विवाह कर ले। इस बातका उसपर बड़ा गहरा असर पड़ा। यह उसके दिल और दिमाग़में गड़ गई और साथही हलुएकी गन्ध भी जो उसी समय आई थी गड़ गई।

तात्पर्य यह है कि पूर्वजन्मकी जो घटनाएँ भूलती नहीं और संस्कारोंमें परिणत नहीं होतीं बल्कि याद रह जाती हैं, वे या तो हमारे लिये कोई विशेष महत्त्व रखने वाली होती हैं या गहराअसर डालनेवाली अथवा विशेष भाव पैदा करनेवाली होती हैं, या विशेष भाव उत्पन्न करनेवाली घटनाओंके साथ हुई होती हैं, अथवा उनमें और कोई वैचित्र्य होता है जिससे वे स्मृतिपटलपर भली भांति अङ्कित हो जाती हैं।

ऊपरकी विवेचनासे स्पष्ट है कि पूर्वजन्मका याद न होना पूर्वजन्मके सिद्धान्तके विरुद्ध कोई युक्ति नहीं है और पिछले जन्मोंकी बहुतसी बातोंका भूलना वस्तुतः भूलना नहीं परन्तु स्मृतिमें उनके रूपका परिवर्तित होना है जो वर्तमान जीवनमें आनेवाले परिवर्तनोंके सर्वथा सदृश और इसलिए स्वाभाविक है। इसके अतिरिक्त पूर्वजन्मकी जो बातें भूली हुई मालूम होती हैं, सम्भव हैं इनमेंसे कुछ वास्तवमें न भूली हों और जो सचमुच भूल गई हैं उनका भूलना स्मृतिके मानेहुए नियमोंके सर्वथा अनूकूल है।

कूपर (Cooper I. S.) लिखता है कि इस जीवनमें भी हम संस्कार बनते देखते हैं। हमें बहुतसी बातें भूल जाती हैं, केवल संस्कार शेष रहजाते हैं और इन्हींसे हम जानते हैं कि हमें कभी इन बातोंका अनुभव हुआ था। जैसे हम उबलते हुए पानीमें हाथ नहीं डालते लेकिन हमें याद नहीं कि कब हमारा हाथ जला था, यद्यपि हम कहते हैं कि हमारा हाथ जला होगा क्योंकि अब हम सावधान हैं। इस हालतमें हमारा पिछला अनुभव इस संस्कार में परिणत होगया है कि हम उबलते हुए पानीसे सावधान रहते हैं। एक भद्र मनुष्य बड़ा होकर असत्यसे घृणा करता है लेकिन बचपनमें उसने अनेक बार झूठ बोला होगा और इसके लिये उसे दण्ड मिला होगा लेकिन अब उसे याद नहीं कि कब कब झूठ बोला था और क्या क्या दण्ड मिला था। इस सारे अनुभवका परिणाम यह हुआ है कि अब झूठसे घृणा हो गई है, मानो घटनाओंकी याद संस्कारमें परिणत हो गई है। इसी तरह यह क्यों न समझाजाए कि जो बच्चे शुरूसे ही योग्यता दिखाते हैं

वह पूर्वजन्मोंके ही संस्कारका परिणाम है ? हमें मानना चाहिये कि जो बच्चा स्वभावतः औज़ारोंका प्रयोग ठीक तरहसे करता है वह पिछले किसी जन्ममें कारीगर था। जो लड़का अपने साथियोंका माना हुआ सर्दार हो और जो खेल खेलकी लड़ाइयोंमें ज़ोरसे लड़नेके लिये जोश दिला सकता हो वह पहले जन्ममें वीरयोद्धा था। जो बच्चा जंगल की सरसराहट और समुद्रका शब्द सुनकर प्रसन्न होता हो और जिसका मन सुन्दर वस्तुओंको देखकर बहुत प्रभावित होता हो वह पहले जन्ममें कवि या कलाविद् था। जो नवयुवक क्रय विक्रयकी बातोंमें मज़ा लेता हो और लाभ हानिके खेल पसन्द करता हो वह पूर्वजन्मके सौदागरीके अनुभव प्रगट कर रहा है। जो लड़का आध्यात्मिक बातोंको पसन्द करता है और धार्मिक संस्कारोंको हृदयसे पसन्द करता है वह पूर्वजन्ममें पुरोहित होनेका प्रमाण देरहा है।

(२)

पुनर्जन्मपर एक और आक्षेप यह किया जाता है कि यदि हमें पूर्वजन्मोंकी याद नहीं रहती तो हमें पुनर्जन्मसे फ़ायदा क्या ? एक ऐसी आत्मा है जिसने पहली बार जन्म लिया है, दूसरी ऐसी है जिसे अपने पूर्वजन्मोंका बिल्कुल स्मरण नहीं, इन दोनों आत्माओंमें क्या अन्तर है ? इसलिये इस प्रकारका पुनर्जन्म मानना निरर्थक है। इसके उत्तरमें कहा जासकता है कि पुनर्जन्मका फ़ायदा केवल याद होनेपर आश्रित नहीं। न याद रहनेपर भी हमें पूर्वजन्मोंसे बहुतसा फ़ायदा हो सकता है, बल्कि वे सब फ़ायदे हो सकते हैं जो समझा जाता है कि पिछले जन्मोंके याद रहनेसे होंगे।

हमारे जीवनमें स्मृतिके तीन प्रकारके लाभ होसकते हैं:—

(१) अपना अनुभव याद होनेसे हम अधिक बुद्धिमान् हो जाते हैं।

(२) प्रलोभनोंको जीतनेके प्रयत्न, चाहे हम उनमें सफल हों या असफल, हमें आगामीमें नये प्रलोभनोंका सामना करनेमें सहायता देते हैं। जैसे हम कभी आलस्यका प्रतिरोध न कर सकें तो दुष्परिणाम होता है। इस दुष्परिणामका स्मरण आगे हमें आलस्यका प्रतिरोध करनेमें सहायता कर सकेगा अथवा हमें मालूम हो जाएगा कि किस दुर्बलताके कारण हम प्रतिरोध नहीं कर सके और यह बात याद रहनेसे आगामी जीवनमें हम इसके विषयमें विशेष सावधान रहेंगे और विशेषतया इसका प्रतिकार करेंगे। यदि हम प्रलोभनोंपर विजय पानेमें सफल रहें तो इस बातकी याद रहनेसे अगली बार वैसा ही अवसर आनेपर हमारा उत्साह और अभ्यास बढ़े हुए होंगे और हम अच्छी तरहसे सामना कर सकेंगे। इसी तरह उत्तम कार्य करनेसे वैसा करनेकी आदतहो जायगी, और यह आदत उत्तम आचार (Character) बन जाएगी।

(३) दूसरे लोगोंके साथ प्रेमका स्मरण इस समय के प्रेम को बढ़ा सकता है।

ये तीनों बातें स्मृतिके बिना भी होसकती हैं। हम इन्हें एक एक करके लेते हैं।

(१) इनमें पहली बात बुद्धिमान् होनेकी है। बुद्धि केवल बहुतसी घटनाओं और अनुभवोंके स्मरणमात्रसे नहीं बढ़ती, अपितु उनका प्रयोग करने तथा उनसे परिणाम निकालनेकी योग्यता प्राप्त करनेसे

बढ़ती है । यदि घटनाएं और अनुभव भूल भी जाएं तो भी वह योग्यता रहजाती है, इस बातको हम प्रतिदिनके अनुभवसे जान सकते हैं। जैसे नये वकील और डॉक्टरोंको पुरानोंकी अपेक्षा पुस्तकें अधिक याद होती हैं, परन्तु फिर भी पुराने वकील और डॉक्टर अधिक योग्य होते हैं, क्योंकि अभ्याससे उनका स्वभाव (Intuition) बन जाता है, जिससे वे घटनाओंसे ठीक परिणाम निकाल सकते हैं और उन्हें बहुतसे बीते हुए अनुभवों और घटनाओंको याद रखनेकी आवश्यकता ही नहीं होती। इसलिये यदि आत्माको शारीरिक मृत्यु होनेपर सब घटनाएं आदि भूल भी जाएं तो भी यह अधिक शक्ति और बुद्धि प्राप्तकरके नये जन्ममें प्रविष्ट होसकती है। अनेक जन्मोंकी समस्त घटनाएं याद रहनेसे हमारी स्मृतिमें एक ऐसा जंगल बनजाता कि हमारी बुद्धि उन्हें संभाल ही न सकती और उनसे कुछ लाभ न उठा सकती। इसकी कल्पना हम यह सोचनेसे कर सकते हैं कि यदि इस जीवनमें हमें कोई चीज़ बिल्कुल भी न भूलती, हमें प्रत्येक मक्खी, प्रत्येक मच्छर, प्रत्येक रेतका कण, प्रत्येक पत्ता, प्रत्येक शब्द तथा गन्ध और सब वस्तुएं जो हमारे अनुभवोंमें कभी आई हों बिल्कुल वैसीकी वैसी याद रहतीं तो हमारी क्या हालत होती। उपयोगी बातोंको हम निरर्थकबातोंसे अलग ही न कर सकते। इसलिये यह एक सौभाग्यकी बात है कि शारीरिक मृत्युके बाद बहुतसी घटनाएं तो भूल जाती हैं परन्तु वस्तुतः उपयोगी चीज़ शेष रह जाती है। और यह जैसा कि हम ऊपर कह चुके हैं घटनाओंसे ठीक परिणाम निकालनेकी शक्ति या दूसरे शब्दोंमें बुद्धिमत्ता है। घटनाओंका ज्ञान धीमे धीमे इस बुद्धिमत्तामें परिणत होता रहता है।

इस बुद्धिमत्ताके बिना घटनाओंका ज्ञान किसी प्रकारसे भी लाभकर नहीं। दृष्टान्तरूपसे हम एक कहानी देते हैं, जो ठीक हो या ग़लत, किन्तु इस बातको समझानेके लिये उपयुक्त है:—

"कहते हैं कि एक राजाको शौक़ हुआ कि वह अपने लड़केको ज्योतिष पढ़ाए। इसलिये उसने एक योग्य ज्योतिषी गुरु नियुक्त किया जिसने कुछही दिनोंमें राजकुमारको शिक्षा देकर राजाके सम्मुख उपस्थित किया। राजाने परीक्षा लेनेके लिये अपनी मुट्ठीमें एक लाल रख लिया और राजकुमारको कहा कि—बताओ मेरे हाथमें क्या है? राजकुमारने हिसाब लगाकर कहा—कोई रक्तवर्णकी वस्तु है। राजाने कहा—ठीक है। फिर उसने कहा—कोई गोल और चमकदार चीज़ है। उत्तर मिला—बहुत ठीक। यहाँ तक तो उसका ज्योतिष गया लेकिन आगे अक़्लका सवाल था। राजाने कहा कि—चीज़की सब विशेषताएँ तो तुमने बतादीं परन्तु बताओ कि चीज़ क्या है? राजकुमारने सोचकर कहा कि—चक्कीका एक पाट मालूम होता है।"

(२) दूसरा प्रश्न धर्म और आचारका है। धर्म और आचारके लिये स्मृतिका यही उपयोग हो सकता है कि यह हमें सदाचार-निर्माण करने अथवा उत्तम गुण प्राप्त करनेमें सहायता दे। परन्तु जब एक बार श्रेष्ठ आचार बनजाये तब उन घटनाओंको याद रखने की आवश्यकता नहीं जिनसे यह बना हो। जिसका सत्य बोलनेका स्वभाव बन गया है उसे यह याद रखनेसे क्या फ़ायदा कि यह स्वभाव इस इस प्रकारकी घटनाओंके आधारपर बना है। ऐसी हालतमें बहुतसी घटनाओंको याद रखना एक व्यर्थकासा बोझ हो जाएगा। इसी तरह आत्मा एक जन्ममें

प्रलोभनोंका पराभव करके सच्चरित्र बनकर नये जन्ममें प्रवेश कर सकती है। इस अवस्थामें भी सम्पूर्ण घटनाओंका स्मरण अनावश्यक है। क्योंकि घटनाओंके स्मरणका उपयोग आचार निर्माणके सिवा कुछ नहीं है। ऐसा देखनेमेंभी आता है कि कई लोगोंकी जन्मसे ही धर्मकी ओर तथा कइयोंकी पापकी ओर प्रवृत्ति होती है।

(३) प्रेम और मैत्री को भी विशेष घटनाओं के याद न रहने से कोई क्षति नहीं होती। इस जन्ममें भी यदि हम किसी पुरानी गाढ़ मैत्रीका निरीक्षण करें तो पता लगेगा कि मित्र बहुतसी बातें भूल चुके हैं। एक दूसरे के प्रति उपकार, आपसकी गुप्त बातें और सहानुभूति और परस्पर विश्वास, कई गहरी दोस्तीकी घड़ियां और उल्फ़तके मज़े याद नहीं होते, लेकिन इनके कारण प्रेम गहरा हो चुका होता है। घटनाएं भूल गई हैं, परन्तु वे अपना असर छोड़ गई हैं। घटनाओंके याद रहनेका यही लाभ हो सकता हैं कि वे प्रेममें उत्तरोत्तर वृद्धि करें। लेकिन यदि यह लाभ घटनाओंके भूल जानेपर भी दृष्टि-गोचर होता है, तो उनका याद रहना स्मृतिपर निरर्थक भारके सिवा कुछ न होगा। इसी तरह यद्यपि पूर्वजन्मकी मैत्रीके सम्बन्धमें घटनाएं याद न भी रहें, फिर भी उनके कारण इस जन्ममें पुरानी मैत्री उत्तरोत्तर बढ़ सकती है। जो चीज़ भूल जाती है वह अनावश्यक है। पुरानी मैत्रीके उपयोगी अंश इस जन्ममें भी बचे रहते हैं। जैसे कई लोगोंको देखते ही एक दूसरेके प्रति प्रेम उत्पन्न हो जाता है और कई लोगोंमें अकारण ही परस्पर आकर्षण होता है, इससे वे बड़ी सरलतासे एक दूसरेके मित्र बन जाते हैं और जीवनभर बने रहते हैं।

तात्पर्य यह कि पूर्वजन्मोंका स्मरण न रहनेसे यह नहीं कहा जा सकता कि उनका हमें कोई लाभ नहीं क्योंकि उनके उपयोगी परिणाम घटनाओं के याद न रहनेपर भी उत्पन्न हो सकते हैं। इस जन्मका अनुभव हमें बताता है कि घटनाएं भूलकर ही बुद्धि, आचार, प्रेम और मैत्रीके लिये अपने उत्तम परिणाम पैदा कर सकती हैं। इस लिये पूर्वजन्म की घटनाओंका भूल जाना हमारे लिये सौभाग्यकी बात है।

सातवां अध्याय

पुनर्जन्मपर आक्षेप और उनका समाधान (३)

१

हम पहले कह चुके हैं कि कर्मफल भी पुनर्जन्मके सिद्धान्तका एक आवश्यक अङ्ग है, किसी जन्मके कर्मोंका फल उस जन्ममें भी और अगले जन्मोंमें भी मिलता है। वर्त्तमान जन्ममें किसीका सौभाग्य या दौर्भाग्य, अमीरी या ग़रीबी, स्वास्थ्य या बीमारी आदि जहांतक इस जन्मके कर्मों परिणाम नहीं हैं, पूर्वजन्मके कर्मोंका फल हैं। जन्मसेही कई लोग अमीर होते हैं; कई ग़रीब, कई स्वस्थ और बलवान्; कई रोगी और दुर्बल; कई सुन्दर और कई कुरूप; कई भाग्यवान् और कई अभागे। कई योग्य और परिश्रमी होते हुए भी दुःखी तथा हीनावस्थामें होते हैं, कई अयोग्य और आलसी होते हुएभी ऐश्वर्यका उपभोग कररहे हैं। ...... "ऊधो कर्मनकी गति न्यारी। मूरख मूरख राजकरत हैं, पण्डित फिरैं भिखारी।" इस प्रकारकी अनगिनत विषमताएं हमें प्रतिदिन संसारमें दिखाई देती हैं और इनका कोई युक्तियुक्त कारण इस जन्ममें नहीं मिलता, इन्हें पूर्वजन्मोंके कर्मोंका फल माना जा सकता है।

इसपर यह आक्षेप किया जा सकता है कि पूर्वजन्मोंकी बातें हमें याद तो होती नहीं, परन्तु उनका फल मिलता रहता है। लेकिन जब हमें यह ही मालूम नहीं कि किस अपराधके लिए दण्ड मिल रहा है तो ऐसा दण्ड न्यायके अनुकूल नहीं है, और फिर इस दण्डसे फ़ायदा क्या? क्योंकि इसके द्वारा मनुष्य अपने आपको अधिक अच्छातो बना नहीं सकता। उसे यह तो मालूम होता ही नहीं कि कौनसे कर्म अच्छे हैं और कौनसे बुरे। और भविष्य में कौन से काम करने चाहिएँ और किन से बचना चाहिए। ऐसी हालतमें हम यह क्योंकर कह सकते हैं कि किसी अपराधके लिये दण्ड मिल रहा है और आकस्मिक (by chance) कष्ट नहीं होरहा। इसके उत्तरमें निम्नलिखित बातें कही जा सकती हैं:—

यदि हम वर्तमान जन्म को ही ध्यान में रखें और उदाहरणके तौर पर एक ऐसे आदमी को लें जिसने अपनी मूर्खता और दुष्कर्मोंसे अपना स्वास्थ्य ख़राब कर लिया हो। क्या ऐसे आदमी को अपना हरेक काम विस्तार के साथ याद है जिसके कारण वह रोग का अधिकारी हुआ? इसे—बहुत सम्भव—नहीं मालूम कि मेरी बीमारी का कारण मेरे कौन से बुरे कर्म हैं। इनमें से बहुत से तो भूल चुके होंगे और कइयों के सम्बन्ध में मालूम ही नहीं होगा कि उन्होंने बीमारी पर क्या असर डाला है। क्या ऐसी हालतमें उसे दण्ड ही नहीं मिलना चाहिये? क्या उसे बीमार नहीं होना चाहिये? जो कारण भूल गये हैं अथवा कभी मालूम नहीं हुए, क्या उनसे पैदा होने वाला असर बीमारी पर नहीं होना चाहिये? एक अच्छा विद्वान् अच्छी

अंग्रेज़ी बोल सकता है लेकिन क्या उसे बिल्कुल याद है कि मैंने एक एक शब्द को कितनी बार दुहरा दुहरा कर याद किया था, या किस किस पुस्तक से क्या क्या प्राप्त किया था, अथवा किसी वर्ष के किसी विशेष दिन कितना परिश्रम किया था और उस परिश्रम से ज्ञान में कितनी वृद्धि हुई थी ? लेकिन ज्ञानवृद्धि तो अवश्य हुई होगी, और इस प्रकार की क्रमिक ज्ञान वृद्धि से ही ज्ञान का एक भण्डार बन गया है परन्तु ये बातें विस्तार से याद न होने का यह परिणाम नहीं होता कि हमें प्राप्त की हुई चीज़ भी भूल जाये। क्या इस चीज़ का याद रहना अनुचित है ? क्या कारणों के विस्तार से याद न होने से परिणाम पैदा नहीं होना चाहिये ? अब कल्पना कीजिये कि उपर्युक्त हालतों में बीमारी के कारण हानियां होती हैं, गरीबी आती है, अपमान होता है, सफलता में बाधा उपस्थित होती है और इसके विपरीत विद्या प्राप्ति से प्रतिष्ठा तथा सम्पत्ति मिलती है, सफलता और प्रसिद्धि प्राप्त होती है, तो क्या यह कहा जा सकता है कि यह दण्ड और पुरस्कार न्यायानुकूल नहीं ? ये व्यर्थ हैं क्यों कि इनके कारण पूर्णतया याद नहीं ? यदि मैंने किसी से कुछ रुपया उधार लिया हो या किसी को उधार दिया हो और मुझे यह बात भूल जाय तो क्या न्याय को यह इष्ट होगा कि मुझसे रुपया वापिस न लिया जाए या मुझे वापिस न दिया जाये ? न्याय का बलपूर्वक अनुरोध है कि भूला हुआ रुपया मुझसे वापिस लिया भी जाये और मुझे वापिस दिया भी जाये। इस प्रकार यदि इस जन्म में भूलना दण्ड या पुरस्कार के विरुद्ध कोई युक्ति नहीं है तो पूर्व जन्म के भूलने के बारे में भी यही बात होनी चाहिये। यह समस्या बहुत कम पैदा

होती है कि हमें यह सुख मिला है, लेकिन मालूम नहीं हमारे किस कर्म के परिणाम स्वरूप, इसलिये हमें यह सुख मिलना न्याय के प्रतिकूल है। जब सुख और सम्पत्ति के बारे में यह आक्षेप नहीं होता तो दुःख और विपत्ति के सम्बन्ध में ही क्यों होता है?

शायद यह कहा जाये कि यदि हमें मालूम ही न हो कि यह कष्ट हमारे किस दुष्कर्म का परिणाम है तो आगामी जीवन में हम ऐसे दुष्कर्म से सावधान कैसे रह सकते हैं? लेकिन जो आदमी ऐसा कहता है वह या तो ईमानदारी से काम नहीं ले रहा, अथवा उसे मालूम नहीं कि वह क्या कह रहा है। स्वभावतः मनुष्य की प्रकृति ही ऐसी है कि वह पुण्य और पाप में भेद करता है। कौन है जिसे अच्छा काम करके अभिमान और बुरा काम करके शोक नहीं होता। जिसने पाप किया हो उसे स्वयं ही लज्जा आ रही होती है, चाहे दूसरे को मालूम भी न हो कि उसने पाप किया है। वह स्वयं ही नीची नज़र कर लेता है। दूसरों से डरता फिरता है। कई बार सुना जाता है कि अमुक घर में कोई चोर छिपा हुआ था उसे किसी निर्बल स्त्री ने पकड़ लिया। वह चोर चाहे कितना ही बलवान क्यों न हो परन्तु चोर होने का ज्ञान प्रायः उसकी शक्ति को नष्ट कर देता है। बलवान गठकतरा यदि जेब कतरता हुआ पकड़ा जाये तो एक बच्चा भी कई बार उसे पकड़ कर पीट देता है। कई बार मनुष्य कोई ऐसा पाप कर देता है, जो उसके अतिरिक्त किसी को मालूम नहीं होता, न उसके मालूम होने की कोई आशंका होती है, न ही दुनियावी सज़ा का ख़याल होता है, परन्तु फिर भी उसे घण्टों और कई हालतों में दिनों

और महीनों तक उस पाप का पश्चात्ताप रहता है, और पीछा ही नहीं छोड़ता। कई बार सुना जाता है कि कोई ख़ूनी या मुजरिम जिसके जुर्म का किसी को पता न था केवल अपने रंग ढंग और चालचलन के बदल जाने से संशय का पात्र बन कर गिरफ्तार कर लिया गया, और इस तरह उसके जुर्म का पता लग गया। इससे मालूम होता है कि मनुष्य स्वभाव से ही पुण्य और पाप को पहिचानता है। जो लोग पाप भी करते हैं वे प्रायः जानते हैं कि यह पाप है। इसमें कोई शक नहीं कि पिछले जन्म और इस जन्म के संस्कारों के कारण पुण्य और पाप की ओर हमारी प्रवृत्ति शिथिल अथवा दृढ़ हो जाती है। पुण्य कर्म करने से जिसका उत्तम आचार बन चुका है उसे पाप से बहुत अधिक घृणा होती है। इसके विपरीत दुराचारी को पाप से बहुत कम घृणा होती है। इसके इलावा जैसा हम पहले कह चुके हैं पिछले जन्मों के अच्छे या बुरे कर्मों की स्मृति तो नहीं रहती परन्तु उनके कारण अच्छा या बुरा आचार बन जाता है। जैसे इस जन्म में भी कई हालतों में होता है अर्थात् सांसारिक दृष्टि से भी पुण्य से लाभ और पाप से हानि होती है जिससे पुण्य से प्रेम और पाप से घृणा हो जाती है और यह प्रेम और घृणा आचार का अंग बन जाते हैं, जबकि इन कर्मों की कोई स्मृति नहीं रहती जिनसे यह प्रेम और घृणा उत्पन्न हुई थीं। इस प्रकार का आचार लेकर हम नये जन्म में प्रविष्ठ होते हैं और इस आचार के कारण हमें विशेष प्रकार के कार्य अच्छे या बुरे प्रतीत होंगे। उत्तम आचार को अच्छे कर्मों से प्रेम होगा तो बुरे कर्मों से बहुत घृणा।

ऐसी हालत में हम कह सकते हैं कि एक परिवर्तित रूप में अथवा संस्कारों के रूप में पूर्व जन्मों की स्मृति हमें पुण्य और पाप में भेद करने में सहायता दे रही है। क्या किसी को यह भी शिकायत हो सकती है कि मुझे मालूम नहीं कि कौन से कार्य पुण्य के और कौनसे पाप के हैं? इतने महात्मा, ऋषि, महर्षि और विद्वान होते हैं जिन्हें सत्य का ज्ञान होता है उनके जीवनों से हम लाभ उठा सकते हैं और सब से बढ़ कर हमारी अन्तरात्मा हमारा नेतृत्व कर सकती है। मुश्किल तो इस बात में होती है कि पुण्यकर्म कैसे किया जाये। यह जानना तो प्रत्येक के लिए आसान होता है कि पुण्य कर्म कौनसे हैं। यदि पूर्व जन्म की बातें स्पष्ट रूप से हमें याद रहतीं तो जहां अपने पाप पुण्य के कार्य याद रहते वहां दूसरों के पाप पुण्य भी वैसे ही याद रहते। परिणाम यह होता है कि किसी ने एक जन्म में कोई पाप किया होता तो सदा के लिये लोगों को मालूम रहता और वह व्यक्ति कभी सिर उठाने के योग्य न रहता। यदि किसी मनुष्य ने कोई पाप किया हो और इस बात को सब जगह प्रसिद्ध कर दिया जाये तो वह या तो शर्म से इतना दब जाता है कि कुछ करने के योग्य नहीं रहता अथवा ढीट बन जाता है और उसे इस बात की परवा ही नहीं रहती कि उसने पाप किया है या पुण्य। यदि जन्म जन्मान्तरों में भी लोग एक दूसरे के पापों को न भूला करें तो कई मनुष्य हमेशा के लिए पतित हो जांयगे। किसे पसन्द होगा कि मेरे साथियों को मेरे सब जन्मों की बातें याद हों? यदि ऐसा भी होता कि हमारे पाप दूसरों को तो न याद रहते परन्तु केवल हमें ही याद रहते, तब भी उनसे बुरे परिणाम पैदा होते। सफलता प्राप्त

करने से हमारा उत्साह बढता है परन्तु असफलता से उत्साह टूट जाता है। जिसे क्रमशः बहुत सी असफलताओं का सामना करना पड़े वह प्रायः किसी काम का नहीं रहता। पहली सफलताओं का विचार आगामी सफलताओं में बहुत सहायता करता है और पहली असफलताएँ आगे के लिये उत्साह तोड़ देती हैं। संसार में अनेक मनुष्यों को विविध क्षेत्रों में कितनी असफलता होती है! बहुत से लोग अपने अन्दर पाप को दबाने का प्रयत्न करते हैं परन्तु बहुत हद तक सफल नहीं होते। बहुत से क्षेत्रों में सफलता होती भी है तो इतनी धीमे कि वह दृष्टि से ओझल रहती है और कठिनाइयां और असफलताएं बड़ी बन कर नज़र के सामने आती रहती हैं। यदि ये मृत्यु के बाद भी याद रहें तो कई जन्मों की असफलताएं इकट्ठी होकर एक पहाड़ सा नज़र आने लगेंगा, और मनुष्य का कार्य करने का उत्साह ही मारा जायगा। इसलिए पूर्व जन्मों के पापों आदि का याद न रहना एक अत्यन्त उपयोगी चीज़ है। इसके अतिरिक्त कर्मफल का लाभ पाप के याद रहने के बिना भी हो सकता है। उदाहरण के लिए जो मनुष्य अन्याय करता है वह अगले जन्म में ऐसी परिस्थितियों में पैदा होगा कि उसे अन्याय सहना पड़े, इससे उसे अन्याय से घृणा हो जाएगी। फिर अवसर आने पर वह स्वयं भी अन्याय न करेगा। इस तरह दण्ड का लाभ हो गया यद्यपि पाप याद नहीं कि कौनसा था।

(२) एक और आक्षेप यह किया जाता है कि क्यों कि पिछला कोई जन्म याद नहीं रहता, इसलिए हरेक जन्म बिलकुल एक नया जीवन है—अर्थात आत्मा के किसी जन्म में प्रविष्ट होने और पहलीवार

सांसारिक जीवन में आने में कोई अन्तर नहीं है। ऐसे पुनर्जन्म का होना या न होना बराबर है। इसके उत्तर में इतना कहना पर्याप्त है कि जो कुछ हम पिछले जन्मों की स्मृति के सम्बन्ध में पहले कह चुके हैं उससे इस आक्षेप का कुछ महत्व नहीं रहता। आत्मा पर पिछले जन्मों के प्रवृत्तियों, विशेषताओं और योग्यताओं आदि के रूप में इतने संस्कार होते हैं और पिछले जन्मों के कर्मों के इतने परिणाम इस जन्म में भाग्य के रूप में प्रगट हो रहे होते हैं कि इस जीवन की लगभग प्रत्येक बात पर उनका असर होता है। ऐसी हालत में इस आक्षेप का कोई अर्थ नहीं कि वर्त्तमान जन्म का पिछले जन्म से कोई सम्बन्ध नहीं होता।

(३) वैज्ञानिक लोग पुनर्जन्म पर यह आक्षेप करते हैं कि वर्त्तमान जन्म में किसी मनुष्य के स्वभाव प्रवृत्ति और विशेषताओं की युक्तियुक्त व्याख्या के लिए पुनर्जन्म की आवश्यकता नहीं—अर्थात पिछले जन्मों के संस्कारों को न मान कर माता पिता के संस्कारों (Heredity) को मान लेना पर्याप्त है। मां बाप के गुणों का स्वभावतः सन्तान पर असर होता है और इसलिए किसी मनुष्य के स्वभाव और गुणों का कारण यह है कि वह किन्हीं विशेष मां बाप और पूर्वजों की सन्तान है। इसके उत्तर में यह कहा जा सकता है कि यदि मान भी लिया जाय कि पैतृक संस्कार के सिद्धान्त से स्वभाव प्रवृत्ति विशेषता आदि का उचित कारण मिल जाता है तो भी जीवन की अन्य कई पहेलियों का इसके पास कोई उत्तर नहीं। जैसे संसार में इतनी विषमता क्यों है? कई सौभाग्यशाली और कई अभागे हैं। पहली बार देखते ही प्रेम

अथवा घृणा क्यों होती है ? क्या पैतृक संस्कार का सिद्धान्त यह कहेगा कि इन लोगों के मां बाप में भी प्रेम अथवा घृणा थी ? बहुत सी हालतों में एक के मां बाप दूसरे के मां बाप से अपरिचित होते हैं। कई चीजें पहली बार देखने पर भी पहले देखी हुई क्यों मालूम होती हैं ? आदि आदि। ऐसे कई प्रश्नों का पैतृक संस्कार के सिद्धान्त के पास उत्तर नहीं। पुनर्जन्म का सिद्धान्त कई प्रश्नों और पहेलियों का एक उत्तर है और जैसा कि हम पहले कह चुके हैं यह किसी सिद्धान्त के सामर्थ्य और सत्यता का प्रमाण है कि वह कई पहेलियों और प्रश्नों को एक साथ हल कर दे। पुनर्जन्म का सिद्धान्त जहां स्वभाव-भेद का युक्तियुक्त कारण बताता है वहां अन्य भी कई प्रश्नों का समाधान कर देता है। इसलिए पैतृक संस्कार के सिद्धान्त से कई दर्जे अच्छा है। हरेक प्रकार की घटनाओं के लिये एक नया सिद्धान्त स्वीकार करना सिद्धान्तों की संख्या को अनावश्यक रूप से बढ़ाना है और इसलिये अनुचित है।

इसके इलावा पैतृक संस्कार का सिद्धान्त घटनाओं का ठीक कारण भी नहीं बता सकता। इसे मान कर भी कई बातें समझ नहीं आतीं। जैसे बच्चे विशेषताओं और गुणों में मां बाप से भिन्न भी होते हैं। मूर्ख मां बाप के घर विद्या प्रेमी और बुद्धिमान लड़के भी पैदा हो जाते हैं। इसके विपरीत शिक्षित और योग्य मां बाप के घर कई बार मूर्ख और मन्द बुद्धिवाले बच्चे पैदा हो जाते हैं। असाधारण योग्यता के लोगों के (Geniuses) मां बाप प्रायः असाधारण योग्यता के नहीं होते। न ही इनकी सन्तान असाधारण योग्यता की

होती है, अन्यथा ऐसे असाधारण लोगों का एक तांता बंध जाता और ये लोग असाधारण न रहते। अंग्रेज़ी में एक कहावत भी है—'Genius is sterility' अर्थात असाधारण बुद्धि के लोगों की सन्तान में वैसे गुण नहीं पाये जाते। विज्ञान स्वयं मानता है कि पैतृक संस्कार का सिद्धान्त बहुत दूर तक नहीं जाता। यदि यह बिल्कुल ठीक होता तो लड़के सर्वथा मां बाप की तरह के होते और हज़ारों सालों में भी कोई परिवर्त्तन मनुष्य जाति में न होता। परन्तु वस्तु स्थिति ऐसी नहीं है। देखा जाता है कि प्रत्येक प्राणी अपने मां बाप से किसी न किसी बात में ज़रूर भिन्न होता है। इसके अतिरिक्त यह भी पूछा जा सकता है कि पैतृक संस्कार के नियम का कारण क्या है। सन्तान क्यों मां बाप जैसी ही होती है? हरेक बच्चा डाक्टर फ़्लिण्ट (Flint) के शब्दों में। अपने मां बाप से इतना भिन्न क्यों नहीं होता जितना मेंढक का बच्चा शुरू शुरू में मेंढक से भिन्न होता है। पहले तो यही समझ नहीं आता कि मां बाप के साथ शारीरिक समता क्यों होती है। क्यों कि मां बाप से शरीर का जो भाग प्राप्त होता है। (अर्थात् Sperm और Egg) वह इतना छोटा होता है कि सूक्ष्म वीक्षण यन्त्र से ही देखा जा सकता है। इसलिये यह मान लेना बहुत कठिन है कि मां बाप के सब शारीरिक गुण, उनकी शारीरिक शक्ति या दुर्बलता, स्वास्थ्य या बीमारी, उनका रूप और आकृति आदि आदि सब उसमें छिपे हुये हैं, लेकिन स्वभाव, आचार आदि आत्मिक गुणों के विषय में तो पैतृक संस्कार का नियम बिल्कुल नहीं बता सकता कि मां बाप के साथ सादृश्य क्यों होता है। क्यों कि शारीरिक गुणों के बारे में तो शायद यह कहा जाये

कि मां बाप के शरीर का कुछ भाग सन्तान को मिलता है, परन्तु आत्मिक गुण तो शरीर के नहीं होते, इसलिए शरीर के किसी भाग के साथ नहीं जा सकते और यह तो कोई नहीं कह सकता कि मां वाप की आत्मा का भी कुछ भाग सन्तान को मिलता है। क्यों कि आत्मा तो विभाज्य नहीं, उसके भाग नहीं हो सकते। इस तरह विज्ञान पैतृक संस्कार के नियम का कोई सन्तोषप्रद कारण नहीं बता सकता, किन्तु इसके विपरीत पुनर्जन्म को मान लेने से वे सब घटनाएं ठीक समझ में आ जाती हैं जिन पर पैतृक संस्कार का नियम आश्रित है। पुनर्जन्म का सिद्धान्त बताता है कि मृत्यु के बाद आत्मा ऐसे मां बाप के घर जन्म लेती है जिनके गुण और स्वभाव उसकी अपनी तरह के होते हैं। जिस प्रकार विद्युत की धारा जो बैटरी के एक सिरे से चलती है, हजारों मीलों का चक्कर काट कर भी उसी बैटरी के दूसरे सिरे को—अर्थात् अपने साथी इलैक्ट्रोड को ढूंड लेती है। जिस तरह बेतार की विद्युत हजारों मीलों के अन्तर पर भी उस स्थान पर पहुंच जाती है जहां उसके अनुकूल विद्युत यन्त्र हो, जिस प्रकार एक आदमी का विचार अत्यन्त दुःख अथवा किसी अन्य असाधारण अवस्थामें हज़ारों मीलके अन्तर पर लाखों मनुष्यों में से किसी एक मित्र या प्रेमी को ढूंड लेता है और उसके दिल पर असर करता है जिसे आधुनिक वैज्ञानिक Telepathy कहते हैं) ऐसे ही एक स्वाभाविक आकर्षण से आत्मा अपने सदृश माँ बाप के यहां जन्म लेती है जिससे मां बाप और सन्तान एक दूसरे से मिलते जुलते होते हैं किन्तु बिल्कुल एक जैसे नहीं हो सकते। क्यों कि किन्हीं दो आत्माओं के अतीत जीवन एक दूसरे के सदृश तो

हो सकते हैं, लेकिन उनका बिल्कुल एक होना अत्यन्त कठिन है। इसलिये उनके संस्कारों, स्वभावों और गुणों में भी सादृश्य तो हो सकता है, परन्तु सर्वथा एकता लगभग असम्भव है।

तात्पर्य यह कि पुनर्जन्म का सिद्धान्त पैतृक संस्कार के सिद्धान्त का विरोधी नहीं, हम दोनों को एक साथ मान सकते हैं, बल्कि पुनर्जन्म को मानने से यह भी मालूम हो जाता है कि यह पैतृक संस्कार का नियम ही क्यों काम कर रहा है, और क्यों मां बाप और सन्तान में सादृश्य होता है परन्तु सर्वथा साम्य नहीं। पैतृक संस्कार का नियम पुनर्जन्म का एक परिणाम प्रतीत होता है और इसलिये यह नियम पुनर्जन्म के विरुद्ध कोई प्रमाण नहीं है।

नवां अध्याय
पुनर्जन्म की उपयोगिता
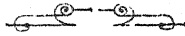
आजकल पाश्चात्य दर्शन में एक नया प्रवाह चला है जिसे 'प्रेग्मे-टिज्म' (Pragmatism) कहते हैं। इसके अनुसार किसी सिद्धान्त के सत्य होने की कसौटी यह है कि वह हमारे लिए कहां तक उपयोगी है, उसके मानने से हमारा जीवन कहां तक उन्नत हो जाता है। किसी विश्वास का महत्व इस बात में है कि वह हमारे जीवन और आचार पर क्या असर डालता है। इस वाद का प्रवर्तक प्रोफेसर जेम्स लिखता है:—

"The true is the name of whatever proves itself to be good in the way of belief and good, too, for definite and assignable reasons."

"The true is only the expedient in the way of thinking."

'To develop a thought's meaning we need, there fore, only determine what conduct it is fitted to produce."

इस दृष्टिकोण के अनुसार किसी सिद्धान्त को मानने से यदि हमें शान्ति प्राप्त होती है और विश्व-रचना को देखने से भय और आशंका के स्थान पर श्रद्धा और विश्वास उत्पन्न होते हैं, मनुष्य के सार्वजनिक गहरे विश्वासों और प्यारे सिद्धान्तों को ठेस नहीं लगती, अपितु सहायता मिलती है और हम अधिक उत्साह और वीरता के साथ पुण्य की ओर प्रवृत्त होते हैं, सारांश यह कि जीवन उन्नत होता है, मनुष्य ऊंचा उठता है और उसे आनन्द प्राप्त होता है तो ऐसी अवस्थामें वह सिद्धान्त मानने योग्य है। हम अब पुनर्जन्म को इस कसौटी पर उतारने का प्रयत्न करते हैं और देखते हैं कि वह कहां तक क्रियात्मक रूप से जीवन के लिये उपयोगी है।

(१)

पुनर्जन्म का सिद्धान्त मनुष्य के दिल को बड़ा सन्तोष देता है और मनुष्य की गहरी आकांक्षाओं और आवश्यकताओं को पूरा करता है। मनुष्य जीवन में कितनी दौड़ धूप करता है, कितनी कठिन तपस्या से सदाचारका निर्माण करता है, कितने कठोर परिश्रम से विद्या ग्रहण करता है और विविध कलाओं में चातुर्य प्राप्त करता है। कई आदमियों का समस्त जीवन ही इन्हीं कामों में व्यतीत हो जाता है, फिर किसका जी चाहता है कि इस उमर भर के परिश्रम का फल कुछ वर्षों में ही इस जीवन के साथ समाप्त हो जाये? ऐसी हालत में पुनर्जन्म का सिद्धान्त कितनी सान्त्वना और उत्साह प्रदान करता है। इसके अनुसार परिश्रम और प्रयत्न तथा उनसे प्राप्त की हुई प्यारी चीजें नष्ट नहीं होंगी, प्रत्युत अत्यन्त लाभकर और सूक्ष्म रूप में अर्थात् संस्कारों

के आकार में आगामी जन्म में भी हमारे पास होंगी। इसके विपरीत यह खयाल कि कठिनता से उपलब्ध चीजें चिरकाल तक हमारे पास नहीं रहेंगी; हमें हताश करके परिश्रम और प्रयत्न में बाधा उपस्थित करता है। मनुष्य पर एक निराशासी छा जाती है और वह विद्या कला आदि के लिये कशमकश करना निरर्थक समझने लगता है। दिल और दिमाग़ की इस हालत का नक्शा एक फारसी शायर ने इस प्रकार खींचा है—

गर शुदी सुल्ताने आलम बाज़ चे
गंजे कारूं जमा करदी बाज़ चे,
चूं तो मेदानी कि आख़िर मुर्दन अस्त
ताक़यामत जिन्दमानी बाज़ चे। १

ऐसी निराशा की अवस्था में पुनर्जन्म का सिद्धान्त एक संजीवन औषध का काम दे सकता है और परिश्रम तथा प्रयत्न के लिए एक प्रबल प्रेरक बन सकता है।

(२)

इस जन्म की गहरी से गहरी मित्रता और प्रेम मृत्यु से रुक जाते हैं लेकिन मित्रों और प्रेमियों की फिर मिलने की प्रबल इच्छा बनी

---

१ इसका अर्थ यह है—अगर तू दुनिया का बादशाह बन गया तो फिर क्या? अगर तूने कारूं का खजाना प्राप्त कर लिया तो फिर क्या? यह तो तू जानता ही है कि आख़िर मर जाना है। कयामत तक जिन्दगी रही तो फिर क्या?

रहती है। यह इच्छा हम नाटकों में प्रगट होती देखते हैं, जहां इस जन्म में अलग हुए हुए मित्रों को मृत्यु के पश्चात् किसी स्थान पर मिला हुआ दिखा दिया जाता है। ऐसी हालत में यह विश्वास कितना सान्त्वनाप्रद है कि बिछुड़े हुए मित्र और प्रेमी फिर हमसे मिल जांयगे।

(३)

मनुष्य के हृदय में अमर जीवन के लिये एक प्रबल आकांक्षा है, जीवन का सर्वथा नाश मनुष्य को पसन्द नहीं। एक उर्दू शायरने क्या ही अच्छा लिखा है—

'पूछा लुकमां से जिया तू कितने दिन,
दस्ते हसरत मल के बोला चन्द रोज़।'

परन्तु पुनर्जन्म के मानने वालों को इस तरह दस्ते हसरत मलने की ज़रूरत नहीं क्यों कि उनके लिए मृत्यु एक नये जीवन का द्वार है। इसी तरह मनुष्य के अन्दर पूर्णता प्राप्त करने की प्रबल इच्छा है। पूर्णता के बिना मनुष्य को सन्तोष नहीं होता। इसलिए हम देखते हैं कि मनुष्य चाहे कितनी भी उन्नति करले, वह उन्नति क्यों कि पूर्णता से कम होती है, अतः वह और उन्नति करना चाहता है। इस बारे में इंग्लैण्ड का प्रसिद्ध लेखक कार्लाइल लिखता है—

"क्या आजकल के सभ्य योरप के सब अर्थसचिव सब कलाकार तथा सब हलवाई मिलकर एक जूता साफ़ करने वाले को ख़ुश कर सकते हैं? एक या दो घण्टे से अधिक देरतक नहीं! क्योंकि जूता साफ़ करने वाले में आमाशय (stomach) के अतिरिक्त एक आत्मा भी है

और इस आत्मा को सदा के लिये ख़ुश करने के लिये इससे कम कोई चीज़ काफ़ी नहीं कि परमात्मा का अनन्त विश्व सर्वथा उसी के अधिकार में हो जाये और इसमें वह ज्यों ही कोई इच्छा उत्पन्न हो उसे पूरा कर ले" इसका अभिप्राय यह है कि पूर्णता से कम किसी अवस्था में मनुष्य ख़ुश रह ही नहीं सकता। किन्तु इस जन्म में तो यह पूर्णता प्राप्त होती नज़र नहीं आती और उस पर भी यह विचार कितना दुःख देने वाला है कि अपनी सम्पूर्ण शक्ति खर्च करने के बाद भी हमारे प्रयत्न अधूरे रह जांयगे और हम अपने उद्देश्य तक नहीं पहुंच सकेंगे, और फिर मृत्यु आकर जो कुछ प्राप्त किया है उसे भी नष्ट कर देगी। पुनर्जन्म का सिद्धान्त हमें तसल्ली देता है कि मृत्यु के बाद भी न केवल उद्देश्य पूर्ति के लिए प्रयत्नों को जारी रखनेका अवसर मिलेगा, बल्कि इस जन्म में जो कुछ प्राप्त किया है वह नष्ट भी नहीं होगा और जहां तक इस जन्म में पहुँच चुके हैं उससे आगे आगामी जन्म में प्रस्थान करेंगे।

(४)

नवयुवकों की कितनी महत्त्वाकांक्षाएँ होती हैं। वे उच्चकोटि के वक्ता भी बनना चाहते हैं और विजेता भी, बड़े विद्वान् और राजनीतिज्ञ भी बड़े योगी महात्मा भी और बड़े गायक और कवि भी। एक बुद्धिमान् विद्याव्यसनी विद्यार्थी गणित, इतिहास, राजनीति, दर्शन, रसायन, भौतिकी संस्कृत, हिन्दी, फ़ारसी, अरबी आदि आदि सब विषयोंमें कमाल हासिल करना चाहता है। एक शायर ने कहा है—

"हज़ारों ख़ाहिशें ऐसी कि हर ख़ाहिश पै दम निकले।
बहुत निकले मेरे अरमान लेकिन फिर भी कम निकले।"

हरेक चीज़ के लिए एक प्रबल इच्छा होती है, किसी को छोड़ने को जी नहीं चाहता। परन्तु मनुष्य निर्बल और अल्पशक्ति वाला है। इसके अतिरिक्त कुछ इच्छाएँ एक दूसरे की विरोधी होती हैं। इन्हें एक साथ पूरा करना असम्भव होता है और कुछ को पूरा करना इस जन्म में हमारी शक्ति से बाहर होता है, इसलिए मनुष्य कुछ इच्छाओं को पूरा कर सकता है और शेष को जवाब देना पड़ता है। किसी मनुष्य का इस जन्म में शरीर अच्छा नहीं है, किसी को कोई बीमारी लग गई है जो मृत्युपर्यन्त रहने वाली है। ऐसी सब हालतों में पुनर्जन्म का सिद्धान्त कहता है कि अच्छा चिन्ता की कोई बात नहीं, अब नहीं तो अगले जन्म में सही।

(५)

यदि कोई मृत्यु को ही जीवन की सर्वथा समाप्ति समझता हो, तो उसे सदाचारी, सज्जन और तपस्वी बननेकी क्या जरूरत है ? उसके दिल की वही हालत होगी जिसे बाबर बादशाह ने बड़ी अच्छी तरह बयान किया है:—

नौ रोज़ो नौ बहारो मए दिलरुबा ख़ुश अस्त।
बाबर बऐश कोश कि आलम दोबारा नेस्त।" (१)

पुराने भारतवर्ष के चार्वाकमतानुयायी मृत्यु के बाद कोई जन्म नहीं मानते थे। उन्होंने भी इसी प्रकार के भाव प्रकट किये हैं—मनुष्य को

---

१ इसका अभिप्राय यह है—नया दिन है, नई बहार है और शराब है और प्रियजन हैं। बाबर ! ऐश करने की कोशिश कर, दुनिया में फिर नहीं आना।

चाहिये कि जब तक जिये मज़े लूटे, उधार लेकर भी खूब घी पिये क्यों कि मनुष्य जब एक बार जला दिया गया तो फिर वापिस नहीं आ सकता। चार्वाकोंका प्रसिद्ध श्लोक यह हैः—

"यावज्जीवेत् सुखं जीवेद् ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत्
भस्मी भूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः?"

शायद यह कहा जाए कि मृत्युके बाद जीवन माननेका केवल यही तो उपाय नहीं कि पुनर्जन्मको स्वीकार कर लिया जाए। मृत्युके बाद एक अनन्त एक रस जीवनभी माना जासकता है, जैसे ईसाई और यहूदी बहिश्त या दोज़खमें अनन्त जीवन मानते हैं। परन्तु इस प्रकार का अनन्त जीवन मनुष्यको सन्तोष नहीं दे सकता। कहानी प्रसिद्ध है कि ख्वाज़ा ख़िज़रके पथप्रदर्शनसे सिकन्दर आवेहयात (अमृत) के स्रोत तक पहुंचा। अमृत पीने ही को था कि एक सामने बैठे हुए कौएने ऊँची आवाज़में कहा—खुदाके लिए इस पानीको न पीना। बादशाहने हैरान होकर पूछा—क्यों? कौएने जवाब दिया कि—मैंने एक बार दौर्भाग्यसे इस पानीकी एक बूंद पीली। अब मैं दुर्बल और अशक्त हूँ। जीनेसे मेरा दिल भर गया है। साथी सब अलग हो गए हैं, मैं अकेला भटकता फिरता हूं, परन्तु प्राण नहीं निकलते। यदि तुम इस पानीको पीलोगे तो तुम्हारा भी यही हाल होगा। सिकन्दर पानी पिए बिनाही वहांसे लौट गया।

एकही हालतमें हमेशा रहनेसे, चाहे वह कितनीही अच्छी क्यों न हो, जी उकता जाता है। एक शायरने इसी विचारको इस प्रकार प्रगट किया हैः—

"जिसमें लाखों बरसकी हूरें हों
ऐसी जिन्नतको क्या करे कोई।"

मृत्युके बाद एकही तरहके अनन्त जीवनकी दो ही सूरतें हो सकती हैं। पहली यह कि मृत्युके समय हमारी जैसी अवस्था होती है वैसीही अवस्थामें हम अगले अनन्त जीवनमें चले जाएं। दूसरी सूरत यह कि मृत्युसे किसी तरह हमारे अन्दर एक बड़ा भारी परिवर्त्तन आजाए और हम एक दमसे पूर्णता प्राप्त करलें या इसके विपरीत सर्वथा हीनतम अवस्थामें पहुँच जाएं। यदि पहली सूरत ठीकहो और मनुष्य मृत्यु-कालकी अवस्थामें ही अगले अनन्त जीवन-स्वर्ग या नरकमें प्रवेश करे, तो मृत्युके समय प्रायः उसकी बहुतसी इच्छाएं अपूर्ण होती हैं, उसमें संसारके प्रति मोह बाक़ी होता है। ज़ौक कविने कहा है:—

"सगे दुनियां पस अज़ मुर्दन भी दामनगीर दुनिया हो।
कि इस कुत्तेकी मिट्टी से भी कुत्ता घास पैदा हो॥"

लोगोंको मृत्युके समय संसारकी वस्तुओंसे बहुत राग होता है और उन्हें छोड़नेको जी नहीं चाहता। कहते हैं कि महमूद ग़ज़नवी जब रने लगा तो उसने उमर भरकी जमाकी हुई बहुमूल्य वस्तुएं और हाथी ड़े आदि बड़ी उत्तमतासे सजवाए, स्वयं पालकीमें लेटकर उन्हें देखने गया और उन्हें छोड़नेके ख़यालपर रोता था। यदि मनुष्य इस सांसारिक मोहकी अवस्थामें आगामी जीवन में चला जाए तो उसे हमेशाके लिये ऐसी हालत में रहना पड़ेगा कि उसकी विषय भोगकी वासनाएं अपूर्ण होंगी और उसे हमेशा सताती रहेंगी। यदि वह जीवन उन्नतिशील हो जिससे वह क्रमशः पूर्णता की ओर जा सके तब भी उसके अनन्त होने

से कई कठिनाइयाँ उपस्थित होंगी। इस जीवन में हमें कितनी बार खयाल आता है—क्या अच्छा होता कि मैं अपना जीवन फिरसे आरम्भ कर सकता। (If I could live again. If I could begin anew) अपनी गलतियों की याद और पश्चात्ताप बोझ बन कर हमारी गर्दन पर सवार होते हैं और हमें आगे काम करने से रोकते हैं। एक अनन्त जीवन में हमेशा के लिये यह हालत हो जाएगी और उसका कोई इलाज नहीं होगा। भूलें अनगिनत होंगी और उनकी संख्या बढ़ती जायेगी यहां तक कि वे हमेशा के लिए हमें निराश कर देंगी।

पुनर्जन्म के सिद्धान्त में यह दोष नहीं। इसके अनुसार प्रत्येक जन्म में उससे पहले जन्म की ग़लतियाँ और पश्चात्ताप भूल जाते हैं और हम हरबार नई शक्ति और प्रोत्साहन के साथ नया जीवन आरम्भ कर सकते हैं। अनेक जन्मों में उन्नति करते करते संसार के विषयभोग की इच्छा मिट जाती है और पूर्ण उन्नति की अवस्था में आकर आत्माका मोक्ष हो जाता है। यदि मृत्यु के बाद भी हमारा जीवन उन्नति की उसी सतह पर हो जिस पर मृत्यु से पूर्व था तो समझ में नहीं आता कि एक ही दीर्घ अनन्त जीवन क्यों हो। वर्त्तमान जीवन में जन्म और मृत्यु हमारे स्वभाव का अनिवार्य परिणाम हैं। फिर यदि हमारा स्वभाव उन्नति के उसी तल पर रहता है तो उसके अनिवार्य परिणाम कैसे अलग हो जाते हैं? इसलिए मानना चाहिये कि जैसे इस जीवन में जन्म और मृत्यु हुये हैं, ऐसे ही उसके बाद भी समय समय पर होते रहेंगे। दूसरे शब्दों में एक दीर्घ अनन्त जीवन के स्थान पर जन्म जन्मान्तर की श्रृङ्खला होगी।

यदि दूसरी सूरत ठीक हो और कहा जाये कि मृत्यु से मनुष्य के अन्दर पूर्ण उन्नति या पूर्ण अवनति समाविष्ट हो जाती है जिससे वह हमेशा के लिये अत्युच्च (स्वर्ग) या अतिनीच (नरक) जीवन में चला जाता है, तो पहले तो यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि ऐसा परिवर्तन क्यों होता है ? यह न्याय के बिलकुल विरुद्ध है कि अकारण ही कोई आदमी अत्युच्च या अतिनीच हो जाये। न्याय को अभीष्ट है कि उन्नति अथवा पतन कर्मों का ही फल हो। लेकिन हम देखते हैं कि प्रायः मनुष्य मृत्यु के समय साधारण कोटि के होते हैं, अत्युच्च या अतिनीच नहीं। वे इस पराकाष्ठा की उन्नति अथवा अवनति के अधिकारी नहीं होते। इसके अतिरिक्त यह विश्वास मनुष्य को बहुत संतोषप्रद नहीं हो सकता कि पूर्णता उसे बिना कर्म किये ही प्राप्त हो जाये अर्थात् वह उसका पात्र न हो। मनुष्य के लिए परिश्रम और प्रयत्न से प्राप्त की हुई वस्तु ही सच्चे सुख का कारण हो सकती है अंग्रेज़ी में कहा करते हैं–'The joys of conquest are the joys of man' अर्थात विजय का आनन्द ही मनुष्य का वास्तविक आनन्द है। इस विषय में ग़ालिब ने भी खूब लिखा है—

हक़्क़ा के ब अक़ूबते दोज़ख बराबर अस्त।
रफ़्तन बपाए मर्दिए हमसाया दरबहिश्त ॥ १

बिना प्रयत्न के मिली हुई पूर्णता मनुष्य को बिलकुल पसंद नहीं होगी। मौलाना हाली लिखते हैं—

---

१ अर्थ—खुदा की कसम, हमसाये की मदद से बहिश्त में जाना दोज़ख के कष्टके बराबर है।

फ़रिश्ते से बेहतर है इन्सान बनना।
मगर इसमें पड़ती है मेहनत ज़ियादा।

अर्थात् फ़रिश्ते को पूर्णता मिली हुई होती है। मनुष्य पूर्णता प्राप्त करता है, इसलिये वह फ़रिश्ते से बेहतर है। इसके विपरीत यह तो किसी को पसन्द न होगा कि वह अकारण ही अति नीचता की अवस्था में डाल दिया जाये। पुनर्जन्म के सिद्धान्त के अनुसार चरम उन्नति अथवा पतन मनुष्य के कर्मों का फल होंगे और उसके अपने परिश्रम से प्राप्त किये हुए होंगे। चरम पतन की अवस्था में भी उन्नति का द्वार मनुष्य के लिये खुला होगा। पुण्य कर्मों से फिर धीरे धीरे ऊंचा उठना और अन्त में पूर्णता प्राप्त करना उसके लिये सम्भव होगा। इसके इलावा मृत्यु के समय, क्योंकि बहुत से लोगों की विषयभोगकी कामना पूर्ण नहीं होती इसलिये, अधिकतर मनुष्यों को यह पसन्द नहीं हो सकता कि मृत्यु के एकदम बाद वे पूर्ण उन्नति की अवस्था में पहुँच जायें जिससे उनका जीवन बिलकुल आध्यात्मिक हो जाए और उनका विषयभोग से कोई सम्बन्ध न रहे। विषयभोग की कामना लोगों को प्रिय होती है, और वे अनेक जन्मोंकी क्रमिक उन्नति से ही ऐसी अवस्थामें पहुंच सकते हैं जिसमें उन्हें विषयभोग के प्रति घृणा हो जाए और वे आध्यात्मिक जीवन के लिए तैयार हो जाएं। यदि किसी को वैषयिक संसार से एकदम आध्यात्मिक संसार में ले जाया जाए तो उसे विषयभोग की तृष्णा सतायेगी और वह अपने आपको दुःखी अनुभव करेगा। इसलिये ऐसा सिद्धान्त, जो कहता है कि मृत्यु के बाद ही मनुष्य को अपनी प्रिय कामनाओं और उनके आनन्दका सर्वथा त्याग कर देना

पड़ेगा, सान्त्वना देने के स्थान पर असन्तोष पैदा करने वाला होगा। इसके विपरीत पुनर्जन्म का सिद्धान्त मनुष्यको विश्वास दिलाता है कि विषयभोग के सामान उसके पास मौजूद रहेंगे जब तक कि उसे स्वाभाविक रूप से इनके प्रति घृणा न उत्पन्न हो जाए, और वह आध्यात्मिक जीवन को स्वयं पसंद करने न लग जाए।

अभिप्राय यह है कि पुनर्जन्म का सिद्धांत मनुष्य को अत्यधिक सन्तोष और शांति देने वाला है, और मानव प्रकृति की सार्वत्रिक और गहरी आकांक्षाओं के सर्वथा अनुकूल है, और जैसा हम पहले कह चुके हैं किसी सिद्धान्त में अन्य ख़ूबियों के अतिरिक्त इस विशेषता का होना उसके पक्ष में एक प्रबल प्रमाण है।

दसवाँ अध्याय

पुनर्जन्म और आधुनिक दर्शन

आधुनिक दर्शन की कई समस्याएं हैं, जिन पर बहुत वाद-विवाद होने पर भी कोई सन्तोषजनक निर्णय नहीं हो सका। पुनर्जन्मका सिद्धान्त इन पर पर्याप्त प्रकाश डाल सकता है। नीचे कुछ दृष्टान्त देकर यह स्पष्ट करनेका प्रयत्न करेंगे :—

१

जबसे मनुष्यने दार्शनिक रीतिसे विचारना आरम्भ किया है तबसे यह प्रश्न विवादास्पद रहा है कि क्या मनुष्य कर्म करनेमें स्वतन्त्र है या परतन्त्र। विद्वत्समाज सदासे इस प्रश्नके बारेमें दो भागोंमें विभक्त रहा है। स्वातन्त्र्यके पोषक कहते हैं कि मनुष्यको प्रतिक्षण यह अनुभव होता रहता है कि मैं स्वतंत्र हूँ। किसी कामको चाहूँ तो इस तरह कर दूं, चाहूँ तो उस तरह। कविके शब्दोंमें—"खुशीका औलिया हूँ जो चाहूँ सो करूँ।" फ्रांसका राजा १४वां लुई अपने किसी कामके लिये प्रयोजन यह बताया करता "बस हमारी ऐसी इच्छा है।" ("Because such is our pleasure") प्रत्येक मनुष्यको प्रायः कर्म करते हुए स्वातन्त्र्य अनुभव होता है। इसलिये मानव स्वभावकी इस सार्वजनिक साक्षी पर विश्वास करना चाहिये।

इसके विपरीत परतन्त्रता (मजबूरी या Necessitarianism) के पोषक कहते हैं कि यह स्वातन्त्र्य की अनुभूति भ्रम है। मनुष्य हर तरहसे परतन्त्र और परिस्थितियोंके आधीन हैं। मनुष्यको शारीरिक शक्ति और स्वास्थ्य माँ-बापसे उत्तराधिकारमें मिलते हैं। उसका भरणपोषण उसके देशकी जलवायु तथा मां-बापकी अमीरी ग़रीबीपर आश्रित होता है। उसकी शिक्षा, धर्म और विचार उस समाजपर आश्रित हैं जिसमें वह पैदा हुआ है। उसके हर समयके कार्य परिस्थितियों और उसकी अपनी इच्छाओंपर आश्रित हैं। परिस्थितियाँ तो मनुष्यके वशमें हैं नहीं। इच्छायें भी स्वभाव, शिक्षा तथा सामाजिक प्रभावसे बनती हैं।

आज कलके वैज्ञानिक भी मनुष्यमें स्वतन्त्र-कर्तृत्व माननेके विरुद्ध हैं। ज्यों-ज्यों विज्ञान सफल होता जाता है, प्रकृति में कार्यकारणके असंख्यात नियम ज्ञात होते जाते हैं, और विज्ञानको यह अभीष्ट है कि प्रकृति हर जगह कार्यकारणके नियममें बँधी हुई सिद्ध हो जाए। परन्तु मनुष्यका स्वतन्त्र कर्त्तत्व विज्ञानकी इच्छापूर्तिमें बाधक है। क्योंकि मनुष्य जहां तक स्वतन्त्र है वहां तक वह कार्यकारणके आधीन नहीं कहा जा सकता। इस नियमके आधीन रह कर कोई वस्तु किसी समय एक ही तरह काम कर सकती है, लेकिन मनुष्य यदि स्वतन्त्र है तो जैसा चाहे कर सकता है अर्थात् कई तरह काम कर सकता है, इसलिये वैज्ञानिकोंको मनुष्यमें स्वतन्त्र कर्तृत्व मानना इष्ट नहीं। वह कहते हैं कि जब प्रकृति का कोना-कोना कार्यकारणके नियमके आधीन है तो मनुष्य भी प्रकृतिका अङ्ग होनेसे स्वतन्त्रकर्त्ता नहीं हो सकता। परन्तु यदि मनुष्यको स्वतन्त्र न माना

जाय तो वह यन्त्रकी तरह हो जाता है, ऐसी हालतमें वह कर्म करनेमें सर्वथा बाधित है और उसे किसी बातके लिये उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता। उसे अच्छा या बुरा भी नहीं कहा जा सकता। उसकी प्रशंसा करना या उसपर दोषारोप करना ऐसा ही अनुचित होगा जैसे बबूलपर यह दोष लगाना कि उसपर कांटे क्यों उगते हैं। उसे पुरस्कार या दण्ड देना भी न्यायके विरुद्ध होगा। सफलता पर अभिमान करना और असफलता पर पश्चात्ताप करना उचित न होगा, क्योंकि जो कुछ हुआ है उसके अतिरिक्त और कुछ हो ही नहीं सकता था। इस प्रकार की अवस्था मनुष्यके लिये असह्य है, इसलिये क्रियात्मक जीवन में वैज्ञानिक भी अपने सिद्धान्तको भूलकर मनुष्यके स्वतन्त्र कर्तृत्वको स्वीकार करते हैं।

तात्पर्य यह कि स्वतन्त्रता अथवा परतन्त्रता की समस्या दर्शनकी एक पुरानी समस्या है। इसपर अबतक भी कोई अन्तिम निर्णय नहीं हुआ। यह न केवल एक दार्शनिक समस्या है, अपितु क्रियात्मक जीवनपर भी इसका बहुत असर है। कुछ लोग दैव अथवा भाग्यको माननेवाले होते हैं। और कुछ उद्यम और पुरुषार्थ को पसन्द करते हैं। कवितामें भी इस विषय की गूंज सुनाई देती है :—

"चाकको तक़दीरके हरगिज़ नहीं होता रफ़ू।
सूज़ने तदबीर गर सारी उमर सीती रहे॥"

मिरज़ा ग़ालिब का शेर देखिये :—

"क़िस्मत किया क़साम अज़ल ने।
जो शख्स कि जिस चीज़के क़ाबिल नज़र आया॥

बुलबुलको दिया नाला तो परवानेको जलना।
ग़म हमको दिया सबसे जो मुश्किल नज़र आया ॥"

संस्कृत का प्रसिद्ध कवि भर्तृहरि लिखता है :—

मतिमताञ्च विलोक्य दरिद्रतां
विधिरहो बलवानिति मे मतिः।"

अर्थात् बुद्धिमानोंकी भी दरिद्रता देखकर मैं यही समझता हूं कि भाग्य बलवान् है।

दूसरी ओर उर्दूकी इस पंक्तिको देखिये :—

तक़दीर के पर जलते हैं तदबीरके आगे।

संस्कृतकी प्रसिद्ध पुस्तक पञ्चतन्त्र में लिखा है :—

"दैवं हि दैवमिति कापुरुषा वदन्ति।"

अर्थात् कुत्सित पुरुष "भाग्य ही भाग्य है" ऐसा कहते हैं।

इसी पुस्तक में अन्यत्र लिखा है :—

"न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः।"

अर्थात् सोये हुए शेर के मुंह में यूं ही हरिण नहीं घुस जाते।

और —

"कातरा इति जल्पन्ति यद्भाव्यं तद्भविष्यति।"

अर्थात् डरपोक लोग कहते हैं कि जो होना है वही होगा।

इस विषय पर पुनर्जन्मका सिद्धांत क्या प्रकाश डाल सकता है? पुनर्जन्मके अनुसार मनुष्य स्वतन्त्र भी है और परतन्त्र भी दैव भी ठीक है और पुरुषार्थ भी। मनुष्य वास्तवमें स्वतन्त्र है, स्वतन्त्रताके कारण उत्तरदायी भी है। अपनी स्वतन्त्रतासे जो कर्म करता है उनके फल

का पात्र भी है। अतः कर्म करने में स्वतन्त्र है पर फल भोगनेमें परतन्त्र। इस जन्ममें किसी मनुष्यकी परिस्थितियां—जन्मागत आरोग्य या अस्वस्थता, अमीरी या ग़रीबी, स्वतन्त्रता या परतन्त्रता, सौन्दर्य या कुरूपता, सौभाग्य-दौर्भाग्य, और मां-बाप समाज आदि, पिछले जन्मके कर्मोंका फल हैं। इसी तरह इस जन्ममें प्रारम्भसे ही पुण्य या पापकी ओर प्रवृत्ति, विशेष विद्याओं अथवा कलाओंके प्रति रुचि, आदि आदि पिछले जन्मोंके अभ्यास और आचारका परिणाम हैं जो आत्मापर असर या संस्कार छोड़ गये हैं। साधारणतया यह स्वीकार किया जायगा कि जीवनमें मनुष्यको परतन्त्र बनानेवाली दो ही चीजें हैं, एक परिस्थिति दूसरे अपने जन्मका स्वभाविक आचार। परिस्थितियां और स्वभाविक आचार ही मनुष्यका भाग्य हैं। उन्हींके क्षेत्रमें मनुष्य परतत्र है। इसलिये बहुय हदतक मनुष्य परतंत्र तो है परन्तु यह परतन्त्रता उसके अपने स्वतन्त्रतासे किये हुए कर्मोंका परिणाम है और इसके लिये वह स्वयं उत्तरदायी है। इस जन्ममें मनुष्यका भाग्य अवश्य है, पर अपना बनाया हुआ। मनुष्य परतन्त्र है परन्तु यह परतन्त्रता उसकी स्वतन्त्रतापर आश्रित है। और चूंकि वास्तवमें मनुष्य स्वतन्त्र है इसलिये प्रयत्न करके अपनें भाग्यको बदल भी सकता है। परतन्त्रताके होते हुए भी उसकी स्वतन्त्रताका एक विस्तृत क्षेत्र है, अर्थात् वह कर्म करनेमें सर्वथा स्वतन्त्र है। इसलिये अपनी परतन्त्रताको समाप्त करनेका प्रयत्न कर सकता है। उदाहरणके लिये जन्मका रोगी प्रयत्न करनेसे कुछ अंशमें स्वास्थ्य और बल प्राप्त कर सकता है। और मंदबुद्धि पुरुष परिश्रम करके अपने मस्तिष्कके दोषको दूर कर सकता है। रोग आदि

प्रयत्नमें बाधा डाल सकते हैं पर उसे बिलकुल रोक नहीं सकते। इस जन्मका परिश्रम न केवल अभी उपयोगी होगा प्रत्युत आगामी जन्ममें भी स्वभाविक स्वास्थ्य शक्ति और बुद्धिका कारण होगा। इस प्रकार कई जन्मोंका निरन्तर परिश्रम आश्चर्यजनक परिणाम पैदा कर सकता है। जो लोग मनुष्यकी स्वतन्त्रताका निषेध करते हैं वे अनेक प्रकारकी घटनाओंको जिनसे स्वतन्त्रता सिद्ध होती है, दृष्टिसे ओझल कर देते हैं। जो लोग परतन्त्रताका निषेध करते हैं वे दूसरे प्रकारकी घटनाओंकी ओर जिनसे परयन्त्रता सिद्ध होती है आंखें बन्द करलेते हैं। परन्तु पुनर्जन्म दोनों प्रकारकी घटनाओंको सामने रखता है, इसके अनुसार स्वतन्त्रता और परतन्त्रता विरोधी नहीं, बल्कि इकठ्ठी रहनेवाली चीजें हैं। इस तरह विरोधी पक्षोंमें समन्वय सम्भव हो जाता है।

स्वतन्त्रता और परतन्त्रताको मिलानेका एक प्रयत्न आजकलके पाश्चात्य दर्शनमें भी किया जाता है। पुराने स्वतन्त्र कर्त्तृत्व (Free-Willism) और परतन्त्र कर्त्तृत्व (Necessitarianism) के स्थान पर कई लोग आजकल 'निश्चिततावाद (Determinism)' को मानने लगे हैं। इसके अनुसार मनुष्य मजबूर तो है लेकिन अपनेसे बाहिर किसी शक्तिसे मजबूर न होकर केवल अपने स्वभाविक आचारसे मजबूर है। परन्तु अपने स्वभाविक आचारकी मजबूरी कोई मजबूरी नहीं। इसलिये मनुष्य स्वतंत्र है। इस सिद्धांतमें दो दोष हैं।

(१) यह सिद्धांत परिस्थितियोंकी परतंत्रताकी उपेक्षा कर देता है। ऐसा करना ग़लती है। एक आदमी उत्तरी या दक्षिणी ध्रुवमें पैदा होता है वहां हर समय बर्फ़के सिवा कुछ नहीं होता। किसी प्रकारकी वनस्पति

का उगना असम्भव है। झौंपड़ी बनाई जा सकती है तो बर्फ़की। इसमें आग भी नहीं जगाई जा सकती, कि कहीं झौंपड़ी पिघलकर ऊपर न गिर जाए। खाद्य वस्तुओंमें मांसके अतिरिक्त कुछ उपलभ्य नहीं,। वह भी कच्चा, और जब मिल जाये तो बीस बीस सेर खा लेना पड़ता है। क्योंकि मालूम नहीं फिर कब मिले और बाहिरकी सर्दीका मुकाबिला करनेके लिये हर समय शरीरमें बहुतसी गर्मी चाहिये। इसी तरह भूमध्य रेखापर किसी मरुभूमिका निवासी दोपहरके सूर्यके नीचे गरम रेतपर पड़ा है, शायद पास कोई नदी बह रही है परंतु वह भी गरम पानी की। क्या इस प्रकारकी परिस्थितिमें मनुष्य सभ्यताकी उन्नति करनेमें स्वतंत्र है ? इस तरहकी मजबूरीको केवल अपने आचारकी मजबूरी क्योंकर कहा जा सकता है ? क्योंकि यह सब प्रकारके आचारके मनुष्योंके लिये एक समान मजबूरी है।

(२) यह सिद्धांत स्वभाव और आचार (Character) की मजबूरी को कोई मजबूरी नहीं समझता, लेकिन यह भी ग़लती मालूम होती है। कई लोग शुरूसे ही बहुत कम बुद्धि और मस्तिष्क रखते हैं जिन्हें अंग्रेज़ी में Idiots और Imbeciles कहते हैं। इनके बारेमें क़ानून भी स्वीकार करता है कि ये जुर्म आदि करनेमें मजबूर हैं। प्रोफेसर जेम्स एक आदमीका दृष्टांत देता है जो एक घृणित स्थान पर जानेसे अपने आपको रोकनेके लिये अपने कपड़ोंके नीचे रस्सोंसे अपने शरीरको कुर्सी से बांधकर बैठा करता था। कवि लोग मानव प्रकृति से खूब परिचित होते हैं इनकी कविताओं में इस मजबूरीका उल्लेख स्थान स्थान पर पाया जाता है। उदाहरणके लिये :—

मुझसा न दे ज़मानेको परवरदिगार दिल।
आशुफ़्ता दिल, फ़रेफ़्ता दिल, बेक़रार दिल ॥

प्रायः मनुष्य स्वयं अनुभव करता है कि मैं अपनी उच्चआकांक्षाओं और आदर्शोंको विषयभोगकी तृष्णाके कारण पूरा नहीं कर सकता। इसलिये इस जन्ममें तो आचारकी मजबूरी भी वास्तव में एक मजबूरी है। अतः मनुष्य केवल आचारसे भी मजबूर होनेमें स्वतंत्र नहीं कहा जा सकता। यदि पुनर्जन्मको मान लिया जाय तो आचारकी मजबूरी वस्तुतः मजबूरी नहीं रहती क्योंकि जन्मसे प्राप्त हुआ आचार पिछले जन्मके संस्कार ही हैं जो पिछले प्रयत्नों और अभ्यासोंका परिणाम है। इसलिये हम स्वयं उसके बनानेवाले और उसके लिये उत्तरदायी हैं। लेकिन यदि पुनर्जन्म को न माना जाय तो जन्मागत आचार अर्थात् स्वभाव और प्रवृत्तियां हमारी बनाई हुई नहीं हैं और ठीक अर्थोंमें हमें मजबूर करनेवाली हैं। पुनर्जन्मको माननेसे तो निश्चिततावाद—(Determinism) को भी सही माना जा सकता है। क्योंकि तब परिस्थितियां और जन्मागत आचार स्वतंत्रतासे किये हुए कर्मोंपर आश्रित होंगे और इसलिये इनकी मजबूरी वस्तुतः मजबूरी न होगी। परन्तु पुनर्जन्म को न मान कर निश्चिततावाद (Determisnism) मानने योग्य नहीं।

सारांश कह कि पुनर्जन्मके दृष्टिकोणसे मनुष्य सिद्धांत रूपसे स्वतंत्र है परंतु क्रियात्मक रूपसे स्वतंत्र और परतंत्र दोनों हैं। भाग्य और पुरुषार्थ दोनों ही ठीक हैं। लेकिन परतंत्रता और भाग्य मनुष्यने स्वयं पैदा किये हैं और उनका इलाज भी उसके वशमें है। भाग्यको इस तरह

माननेसे इसमें निराशाकी वह झलक नहीं रहती जो साधारणतया दिखाई देती है। रिंद के इन पद्योंको देखिये :—

जो जिसके हक़में समझा वह बेहतर बना दिया।
दारा कोई किसीको सिकंदर बना दिया॥
ख़ालिक़ने एक एकसे बेहतर किया ख़लक़।
मुझको फ़क़ीर तुझको तवङ्गर बना दिया॥
ग़ाफ़िल मुक़ाम रश्क नहीं जाये शुकर है।
सौसे बुरा तो एकसे बेहतर बना दिया॥

पुनर्जन्मको न मानकर भाग्यवादका यह बहुत अच्छा चित्रण है। इन पद्योंमें संतोष और कृतज्ञताका तो उपदेश दिया है, परंतु साथ ही मनुष्यकी विवशता और लाचारी भी स्पष्ट है उसका न तो दारा बननेमें और न सिकन्दर बननेमें कोई हाथ है और यदि वह सौसे बुरा है तो उसके पास कोई चारा नहीं हैं। परंतु पुनर्जन्मके अनुसार बनाता तो परमेश्वर ही है, (इसलिये कर्मफलके लिये उसका शुकर है आवश्यक) लेकिन कर्मफलके अनुसार। इसलिये एक तरहसे अपने आपको दारा या सिकंदर बनानेवाला मनुष्य स्वयं हैं और यदि सौसे बुरा है तो निराश होनेका कोई कारण नहीं। सबसे श्रेष्ठ बननेका मार्ग उसके लिये खुला है, ऐसा वि[illegible] होनेसे निराशा पास नहीं फटक सकती। जो कुछ मनुष्य है [illegible] दो लिये उसे अभिमान होगा और आगे प्रयत्न करनेके [illegible]रण- हिम्मत बंधेगी। एवं पुनर्जन्मके अनुसार भाग्यको माननेसे [illegible]कत्वों- पर भी अच्छा प्रभाव पड़ सकता है।

२

आधुनिक मनोविज्ञान के अनुसार मनुष्य की साधारण चेतना या विचार प्रवाह के अतिरिक्त एक और चेतना होती है जिसे उपचेतना Sub-conscious self, subliminal self, secondary consciousness आदि नाम दिये जाते हैं। जिस तरह नदी का बहुत सा पानी ज़मीन की सतह पर बह रहा होता है मगर कुछ पानी सतह से नीचे भी बहता है जिससे किनारे पर ज़रा सा खोदने से पानी निकल आता है, इसी तरह उपचेतना सामान्यतः छिपी रहती है। परन्तु विशेष अवसरों पर प्रकट होती है, या इसका असर अनुभव होता है। आजकल पाश्चात्य संसार को इस उपचेतना का विषय बहुत प्रिय है। कई प्रकार की घटनाओंकी व्याख्या के लिये इसे माना जाता है। हम नीचे उदाहरण के लिए कुछ प्रकार की ऐसी घटनाओं का वर्णन करते हैं।

(i) सम्मोहन (Hypnotism)—यह एक निद्रा की अवस्था है जो प्रायः एक आदेशकर्ता (Operator) के आदेश से आती है। इसमें मनुष्य आदेशकर्ता की इच्छा के वशीभूत हो जाता है और जो कुछ वह कहे वही करता है। इस अवस्था में मनुष्यमें विशेष शक्तियां प्रकट होती हैं। उदाहरण के लिए आदेशकर्ता के आदेश देने पर कई प्रकारके रोग दूर हो जाते हैं। उसके आदेशानुसार दर्द का अनुभव बन्द हो जाता है और बिना क्लोरोफ़ार्म सुंघाये बड़े बड़े आपरेशन किये जा सकते है। आदेशकर्ता छिपकर भी इशारा करे या बहुत दूर से धीमी आवाज़ में बोले तो भी उसका आदेश पूरा किया जाता है, हालांकि और बड़ी-बड़ी चीजें दिखाई नहीं देती, और ऊंचे शोर भी

सुनाई नहीं देते। कई सूक्ष्म शक्तियों वाले आदमी इस हालतमें बन्द सन्दूकों और बन्द कमरोंकी वस्तुओंको तथा सैकड़ों मील दूर-की चीजोंको देख सकते हैं (clairvoyance) और सैकड़ों मील दूर की आवाज़ें सुन सकते हैं (clairaudience) ये दोनों शक्तियां कई आदमियों में हिपनाटिज़्म के बिना स्वाभाविकरूप से भी होती हैं। उस अवस्था में भी इनका कारण 'उपचेतना' समझी जाती है। इस प्रकार के बहुत से काम जो साधारण अवस्था में मनुष्यकी शक्तिसे बाहर होते हैं और सम्मोहनकी हालत में ही हो सकते हैं उनका आधार उपचेतना समझी जाती है।

(ii) सौमनैम्बूलिज़्म (Somnambulism) यह एक हालत है जो हिपनाटिज़्म द्वारा लाई जा सकती है परन्तु कुछ लोगों में स्वाभाविक रूप से आती है। इसमें मनुष्य निद्राकी अवस्था में चलना फिरना तथा अन्य काम करना शुरू करता है और कई असाधारण कार्य करता है, जो जागते हुए उसकी शक्ति से बिलकुल बाहर होते हैं। जागने पर इस हालतकी सब बातें भूल जाती हैं। इस हालतकी असाधारण शक्तियां भी 'उपचेतना' पर आश्रित समझी जाती हैं।

(iii) कई मनुष्योंमें एकसे अधिक 'व्यक्तित्व' होते हैं। ये बारी-बारीसे प्रगट होते रहते हैं। इसे अंग्रेज़ी में Alternate, Double या Multiple Personality कहते हैं। अमरीकाके पादरीके दो व्यक्तित्वोंको जिनका हम छठे अध्यायमें ज़िकर कर आये हैं, उदाहरण-के तौर पर पेश किया जा सकता है। इन हालतोंमें असाधारण व्यक्तित्वों-का कारण 'उपचेतना' समझी जाती है।

(iv) कई लोगों के व्यक्तित्वमें कोई विशेष दोष होता है, जैसे बहुत अधिक क्रोध, अपने आपको अत्यधिक हीन समझना, या शर्मीलापन, अथवा मामूली चीज़ों से फ़िजूल डरते रहना आदि। ऐसे दोषोंका आधार भी उपचेतनाको माना जाता है। हिस्टीरिया (Hysteria), टैलिपेथी (Telepathy) अर्थात प्रियजनों और सम्बन्धियोंसे केवल विचार द्वारा सन्देश प्राप्त करना, दूर दूरांतर की घटनाओं का मालूम हो जाना (Telaesthesia) आदि कई प्रकार की बातें जिनको विस्तार भय से यहां नहीं लिखा जा सकता। 'उपचेतना' का परिणाम समझी जाती हैं।

आशय यह कि मनुष्यकी कई असाधारण शक्तियों की व्याख्या 'उपचेतना' से की जाती है। लेकिन इस उपचेतना के विषयमें प्रश्न उत्पन्न होता है कि यह क्या चीज़ है और इसका क्या कारण है? प्रकृतिवाद और उसपर आश्रित आधुनिक भौतिक विज्ञान इस प्रश्न का कोई संतोषजनक उत्तर नहीं दे सकता। प्रकृतिवाद के अनुसार चेतना का आधार मस्तिष्क है, तो फिर उपचेतना का आधार क्या होगा? क्या मस्तिष्क के दो अलग टुकड़े हैं जो पृथक पृथक काम करते हैं? मस्तिष्क के बारे में आधुनिक विज्ञान का अनुसंधान ऐसे किसी सिद्धांत का प्रतिपादन नहीं करता। यदि एक ही मस्तिष्क पर दोनों चेतनाएँ आश्रित हों तो ये दोनों अलग अलग क्यों हैं। प्रायः ऐसा क्यों होता है कि जब एक चेतना व्यक्त होती है तो दूसरी अव्यक्त रहती है और जब दूसरी प्रगट होती है तो पहली छिपी रहती है, जैसे हिपनॉटिज़्म, सौमनैम्बूलिज़्म और दोहरे व्यक्तित्व की हालत में ऐसा क्यों नहीं होता कि दोनों एक

ही समय इकट्ठी प्रगट हों, बल्कि दोनों एक ही हों और उनमें कोई अन्तर ही न हो।

पुनर्जन्मका सिद्धांत इस विषय पर क्या प्रकाश डाल सकता है? आत्मा और पुनर्जन्म को मानने से उपचेतना तथा उसकी शक्तियोंकी सुन्दर व्याख्या हो सकती है:—मनुष्य वस्तुतः आत्मा है, शरीर आत्मा के ऊपर आवरण अथवा उसका साधनमात्र है। शरीर द्वारा आत्मा की शक्तियां प्रगट होती रहती हैं और शरीर की शक्तियों का नेतृत्व भी होता रहता है। लेकिन सामान्यतः शरीर आत्मा की सम्पूर्ण शक्तियों को व्यक्त करने के योग्य नहीं। इसलिये आत्मा की बहुतसी शक्तियां साधारणतया अव्यक्त रहती हैं। परन्तु असाधारण अवस्थाओं में कभी-कभी प्रगट हो जाती हैं। सब शक्तियों को एक ही समय शरीर प्रगट नहीं कर सकता। इसलिए जब गुप्त शक्तियां प्रकट हो रही होती हैं तब साधारण शक्तियाँ स्थगित होती हैं और जब साधारण शक्तियाँ काम कर रही होती हैं तो गुप्त शक्तियाँ प्रकट नहीं हो सकतीं। इसलिये हिपनॉटिज्म सौमनैम्बूलिज़्म तथा दोहरे व्यक्तित्व आदि में साधारण और असाधारण अवस्थाएँ एक साथ नहीं रहतीं, बल्कि एक हालत में दूसरी हालत याद भी नहीं रहती।

बहुत दूर से देखना या सुनना, बन्द कमरों आदि के अन्दर देख लेना, दूसरों के विचारों को जान लेना (Thought Reading) विचार द्वारा सन्देश प्राप्त करना, (Telepathy) आदि असाधारण शक्तियां तभी तक आश्चर्यजनक प्रतीत होती हैं, जब तक इन्हें शरीरकी शक्तियां समझा जाये। यदि आत्मा को मान

कर इन्हें आत्मा की शक्तियां समझा जाये तो ये बिलकुल स्वाभाविक मालूम होती हैं, और अचम्भा इनके प्रगट होने पर नहीं होता, बल्कि इस बात पर होता है कि ये सामान्यतः क्यों नहीं प्रगट होतीं। उदाहरण के लिए बन्द कमरे, अल्मारी आदि शारीरिक चक्षु के लिये तो बाधक हो सकते हैं लेकिन कोई कारण नहीं कि ये सूक्ष्म और अभौतिक आत्मा के लिये भी कोई रुकावट पैदा करें जब कि प्रकाश की स्थूल और भौतिक किरणें (ऐक्सरेज़ Rays) इनमें से गुज़र सकती हैं। इसी तरह दूरी शरीर के लिये बाधा हो सकती है क्यों कि शरीर स्थान घेरने वाली चीज़ है। लेकिन आत्मा जैसी सूक्ष्म चीज़ के लिये दूरी के बाधक होने का कोई अभिप्राय नहीं। आत्मा स्वयं विचार का स्रोत है, इसलिये किसी दूसरे व्यक्ति के विचार को जान लेना आत्मा का दूसरे आत्मा के साथ सम्बन्ध का सर्वथा स्वाभाविक परिणाम प्रतीत होता है। ऐसा ही स्वाभाविक जैसा हवाका हवाके साथ और विद्युत्का विद्युतके साथ मिलजाना स्वाभाविक है। इसी तरह विचार द्वारा सन्देशकी भी कल्पना की जा सकती है। सौम्नैम्बूलिज़्म में एसी विद्याओं और कलाओं से जानकारी, जिनसे साधारण अवस्था में आदमी अपरिचित होता है, एक ही आदमी में बारी बारी से कई व्यक्तियों का प्रगट होना, मनुष्यों में कई प्रकारके उपर्युक्त दोष आदि बहुतसी बातों की पुनर्जन्म व्याख्या कर देता है। विद्याओं और कलाओं से जानकारी इसलिये प्रगट होती है कि वह पूर्वजन्मों से संचित ज्ञान है जिसकी स्मृति सौम्नैम्बूलिज़्म की असाधारण अवस्था में लौट आती है, जिस तरह बीमारी की हलात में एक अनपढ़ लड़की में बचपन में सुने हुये

लातिनी और यूनानी वाक्यों की स्मृति लौट आती थी* । इसी तरह एकसे अधिक व्यक्तित्व भिन्न-भिन्न जन्मोंकी स्मृति है। पुनर्जन्मके चक्करमें मनुष्य विविध प्रकारके जन्मों में से गुज़र चुका है। साधारणतया जब इस जन्म की घटनाओं की स्मृति प्रबल रहती है तो पूर्वजन्मों की स्मृति संस्कारोंके रूपमें होती है। परन्तु असाधारण अवस्थाओंमें जब इस जन्मकी स्मृति स्थगित हो जाती है तो किसी पूर्वजन्मकी स्मृति लौट आती है। (यह हम पहले ही दिखा चुके हैं कि प्रगट रूपसे किसी चीज़का याद न होना इस बातका प्रमाण नहीं कि वह चीज़ वस्तुतः भूली हुई है।) इस जन्मकी स्मृति लुप्त होनेपर किसी पूर्वजन्मकी स्मृति वापिस आ जाती है, और स्वाभाविक रूपसे मनुष्य ऐसी बात-चीत और कार्य करने लगता है मानो वह अभी तक उस पूर्वजन्ममें ही हो। इस बात-चीतका इस जन्मकी बातों से कोई सम्बन्ध नहीं होता, इसलिये ऐसा प्रतीत होता है जैसे कोई नया व्यक्तित्व हो। इसी तरह एक ही मनुष्यमें बारी-बारीसे कई व्यक्तित्व भी प्रगट हो सकते हैं।

व्यक्तित्वके दोषोंका कारण पूर्वजन्मोंके संस्कार हो सकते है। जन्मागत आचार पूर्वजन्मोंके कर्मों और अभ्यासका परिणाम होता है, उदाहरणार्थ किसी जन्ममें एक आदमी शासक है, इससे उसे दूसरोंके साथ घमण्डसे पेश आनेकी आदत हो गई। यह आदत आत्मा पर संस्कार के रूपमें किसी आगामी जन्ममें भी जा सकती है, लेकिन यदि उस जन्ममें उस आदमी की स्थिति ऐसी नहीं कि उसे घमण्ड से पेश आना उचित हो तो यह आदत व्यक्तित्व का दोष प्रतीत होगी।

---

* देखो छठा अध्याय।

एवं पुनर्जन्मके अनुसार उपचेतना तथा उसकी शक्तियोंका कारण आत्माकी शक्तियां और विविध जन्मोंमें सञ्चित उसके संस्कार हैं। उपचेतनाकी कुछ बातें मनुष्यकी आध्यात्मिक शक्तियों तथा भूतपूर्व अनुभवका परिणाम हैं। आधुनिक विज्ञान के अनुसार भी उपचेतनाकी कुछ बातें मनुष्यके इसी जीवनके पूर्वानुभवपर आश्रित हैं। उदाहरण के लिये आजकलके मानसिक विश्लेषण (Psycho-analysis) के ज्ञाता मानते हैं कि आचार और व्यक्तित्वके कई दोषोंका कारण बचपनके कई अनुभव हैं जो प्रगटरूपसे बिल्कुल भूले हुए हैं, लेकिन वस्तुतः भूले नहीं, बल्कि उपचेतना के क्षेत्रमें पहुँच गए हैं। इन्हें हिपनाटिज़्म और क्रिस्टल विज़न (Crystal Vision अर्थात् ध्यानको ढीला छोड़कर शीशेको देखते रहना, विशेषकर जबकि डाक्टर बचपनके बारेमें कई प्रकारके सवाल पूछता है) आदि कई उपायोंसे फिर याद किया जा सकता है। इनके याद आने पर दोष दूर हो जाते हैं। इसी तरह मौर्टन प्रिन्स (Morton Prince) ने यह सिद्ध करनेका प्रयत्न किया है कि इस जीवनके अनुभवका एक भाग उपचेतनामें परिवर्त्तित हो सकता है और इससे दोहरे व्यक्तित्व आदि (Double Personality) बन सकते हैं। इससे स्पष्ट है कि उपचेतनाकी बहुत सी बातोंको पूर्वानुभवपर आश्रित मानने में पुनर्जन्म और विज्ञान परस्पर सिद्धान्त रूपसे एकमत हैं। लेकिन विज्ञान अनुभवको केवल इसी जन्मतक सीमित मानता है और इसलिये उपचेतनाकी कई बातोंकी व्याख्या करनेमें असमर्थ है। जिसे पुनर्जन्म कई जन्मोंके अनुभवके आधार पर सुगमतासे कर सकता है उदाहरणार्थ कई लड़के और

लड़कियोंमें पन्द्रह-बीस व्यक्तित्व प्रगट होने लगते हैं उनके इस जन्मके थोड़ेसे वर्षों के अनुभवके आधार पर इतने विचित्र और भिन्न-भिन्न प्रकारके व्यक्तित्वोंकी व्याख्या असम्भव है। परन्तु यदि पुनर्जन्मको मान लिया जाए तो कोई मुश्किल नहीं रहती, क्योंकि तब असङ्ख्यात जन्मोंके विस्तृत और नाना प्रकारके अनुभवके आधार पर व्याख्या हो सकती है। निद्राकी अवस्थामें भी उपचेतना का अधिकार माना जाता है। कई जन्मके अन्धोंको स्वप्नमें रङ्ग दिखाई देते हैं। असाधारण योग्यता (genius) का कारण भी वैज्ञानिक लोग उपचेतनाको मानते हैं। इस जन्मके अनुभव से उक्त प्रकारकी बातोंको समझने में कोई मदद नहीं मिलती। परन्तु पुनर्जन्म को मानकर स्पष्टतया पूर्वानुभवके आधार पर ही व्याख्या हो सकती है।

तात्पर्य यह कि पुनर्जन्म और आत्माको माननेसे उन सब घटनाओंकी व्याख्या बड़ी अच्छी तरहसे होजाती है जिनके आधारपर उपचेतनाको माना जाता है। पुनर्जन्म का सिद्धान्त उपचेतनाके सिद्धान्त के प्रतिकूल नहीं, प्रत्युत उसका पोषक है। क्योंकि पुनर्जन्म और आत्मा को मान लेने से यह बखूबी समझमें आ जाता है कि उपचेतना और उसकी असाधारण शक्तियोंका कारण क्या है। ये शक्तियां आत्माको न मानने से और केवल इस जन्मके अनुभवको दृष्टिमें रखनेसे समझमें नहीं आसकतीं। आधुनिक विज्ञान और पुनर्जन्म इस बातपर सिद्धान्त रूपसे सहमत हैं, कि उपचेतना की बहुत-सी घटनाओंका आधार पूर्वानुभव है। लेकिन पुनर्जन्म बड़े विस्तृत अनुभवको दृष्टिमें रखता हुआ घटनाओं की व्याख्या अधिक अच्छी तरह कर सकता है। विज्ञान

अपनी दृष्टि को इसी जन्म तक सीमित रखनेके कारण कई हालतोंमें अपर्यांप्त सिद्ध होता है। पुनर्जन्म और आत्माको न माननेसे उपचेतना बहुत हद तक एक समस्या बनी रहती है इस लिये उपचेतनाकी घटनाएँ भी आत्मा और पुनर्जन्मके पक्षमें प्रबल प्रमाण हैं। यदि उपचेतनाके सिद्धान्तको आत्मा और पुनर्जन्मको न मानकर आधुनिक विज्ञानकी तरह मानें तो आत्मा और पुनर्जन्मका सिद्धान्त उसका एक प्रतिद्वन्दी सिद्धान्त होगा। ऐसी हालतमें आत्मा और पुनर्जन्म उन सब घटनाओंकी व्याख्या कर सकते हैं जिनके आधार पर उपचेतनाको माना जाता है। लेकिन उपचेतना सब घटनाओंकी व्याख्या नहीं कर सकती जिनके आधारपर आत्मा और पुनर्जन्मको माना जाता है, जैसे संसारमें इतनी विषमताका होना। इसके अतिरिक्त आत्मा और पुनर्जन्म के बिना यह भी समझमें नहीं आता कि उपचेतना का कारण क्या है। इसमें इस प्रकारकी शक्तियां क्यों हैं? और यह साधारण चेतनासे अलग क्यों है? इसलिये इन दोनों सिद्धान्तोंमें से आत्मा और पुनर्जन्म का सिद्धान्त अधिक ग्राह्य और युक्तियुक्त है।

(३)

वर्त्तमान आचारशास्त्र (Ethics) में एक बड़ा जटिल विषय है जिस पर बहुत विवाद होनेपर भी कोई निर्णय होता दिखाई नहीं देता। मनुष्य अच्छे और बुरेमें भेद कर सकता है। प्रश्न यह है कि वह किस तरह ऐसा भेद करनेमें समर्थ है? दार्शनिकोंका एक पक्ष कहता है कि मनुष्यमें स्वभावतः एक शक्ति (अन्तरात्मा) है जिसके कारण वह अच्छे बुरेमें भेद कर लेता है। जिस तरह किसी चीज़के सामने आते

ही मनुष्य निर्णय कर लेता है कि यह सुन्दर है अथवा कुरूप, इसी तरह किसी कर्मके बारेमें भी वह स्वाभाविक रूप से जान लेता है कि यह पुण्य है अथवा पाप (Intuitionism)। दूसरा पक्ष कहता है कि स्वभावतः पुण्य और पापमें भेद करनेकी शक्ति मनुष्यमें नहीं है। पुण्य और पापका निर्णय कर्मोंके परिणामपर सोचनेसे ही हो सकता है। उदाहरणके लिये जो कर्म मनुष्य के सुखमें वृद्धि करनेवाले हैं उन्हें अच्छा कहा जाता है और इससे विपरीत कर्मोंको बुरा (Utilitarianism)। वस्तुस्थिति किसी अंशमें दोनों पक्षोंकी पुष्टि करती है। कई बार मनुष्य परिणामोंपर सोचकर निर्णय करता है। जैसे फ़ज़ूलखर्ची और मितव्यताके परिणामोंके कारण ही एकको बुरा और दूसरीको अच्छा कहा जाता है। लेकिन प्रायः किसी कर्मको देखकर ही मनुष्यका हृदय स्वयं साक्षी दे देता है कि यह अच्छा है या बुरा। कई बार ऐसा भी होता है कि परिणामोंपर सोचनेसे कोई कर्म अच्छा प्रतीत होता है, परन्तु मनुष्यकी तबीयत कहती है कि यह बुरा है और वह इसे बुरा ही समझता है। कई लोग इस कवितासे सहमत होंगे :—

"सदाक़तके लिये गर जान जाती है तो जाने दो।
मुसीबतपर मुसीबत सर पै आती है तो आने दो ॥"

झूठ बोलकर अथवा अन्यायसे कोई फ़ायदा उठानेसे प्रायः मनुष्यकी तबीयत हिचकिचाती है, चाहे पोल खुलनेकी कोई भी सम्भावना न हो। इसमें सन्देह नहीं कि बहुतसे लोग ऐसा फ़ायदा उठा लेते हैं लेकिन जबतक उनकी पाप करनेकी आदत न बन गई हो, उनके दिल पर एक ठेस ज़रूर लगती है। परिणामोंके दृष्टिविन्दुसे पोल खुलनेकी सम्भावना

न होनेपर अन्यायसे फ़ायदा उठा लेना लाभकर प्रतीत होता है परन्तु मनुष्यकी तबीअत अपने फ़ायदेकी उपेक्षा करके भी इस कर्मको बुरा समझती है। केवल बुरा सोचनेसे मनुष्यको प्रसन्नता प्राप्त हो सकती है और प्रायः प्रकट रूपसे कोई बुरे परिणाम भी उत्पन्न नहीं होते, परन्तु फिर भी मनुष्यका अन्तरात्मा कहता है :—"Whoever lusteth after a woman, has already commited adultery with her"—Bible अर्थात् जो कोई किसी स्त्रीको कुदृष्टिसे देखता है वह व्यभिचारका अपराधी है। और :—

मातृवत्परदारेषु परद्रव्येषु लोष्टवत् ।
आत्मवत्सर्वभूतेषु यः पश्यति स पण्डितः ॥"

अर्थात् दूसरेकी स्त्रियोंको माताकी तरह, दूसरेकी सम्पत्तिको मिट्टीके ढेलेकी तरह और सब प्राणियोंको अपने समान जो समझता है वह पण्डित है।

तात्पर्य यह कि पुण्य और पापकी कसौटीका प्रश्न अभीतक विवादास्पद है। क्या पुनर्जन्मका सिद्धान्त इसपर कोई प्रकाश डाल सकता है ? पुनर्जन्मको मान लेनेसे दोनों पक्षोंका समन्वय सम्भव हो जाता है। मनोविज्ञानका एक सिद्धान्त है कि किसी स्थान पर या किसी मनुष्यसे हमें कई बार दुःख हुआ हो तो उस स्थान या मनुष्यको भी हम बुरा समझने लगते हैं। इसी तरह किसी कर्मका परिणाम प्रायः बुरा हो तो वह कर्म भी बुरा लगने लगता है और ऐसे ही कुछ वस्तुएं और कुछ कर्म अच्छे मालूम होने लगते हैं, उदाहरणार्थ किसी मकानमें किसी मनुष्यपर मुसीबतें आई हों तो वह उस

मकानको ही मनहूस समझने लगता है । किसी स्त्रीने कोई विशेष आभूषण पहना हुआ हो और वह विधवा हो जाय तो सारे खान्दानमें उस आभूषणको छोड़ दिया जाता है। इस तरह लड़कोंको अपना अध्यापक और मज़दूरोंको कारखानेका मालिक बुरा मालूम होने लगता है। एवं जो वस्तु पहले अपने परिणामोंके कारण अच्छी या बुरी समझी जाती है, बादमें परिणामोंको दृष्टिमें न रखकर भी अपने आपमें अच्छी या बुरी मालूम होने लगती है । पुनर्जन्मके अनुसार आत्मा अनेक जन्मोंमें घूमती रही है। कर्मोंके परिणामोंका उसे निरन्तर अनुभव प्राप्त होता रहा है इसका फल यह हुआ कि जो कर्म पहले अपने परिणामोंके कारण अच्छे या बुरे मालूम होते थे, अब अपने आपमें अच्छे या बुरे मालूम होने लगे हैं। इसलिये वर्त्तमान जन्ममें बहुतसे कर्म जो अपने आपमें अच्छे या बुरे प्रतीत होते हैं, वे पहले परिणामोंके कारण ऐसे मालूम होते थे। अब भी जिन कर्मोंके बारेमें आत्माका पर्याप्त अनुभव नहीं, उनके पुण्य और पाप होनेका निर्णय परिणामोंके आधारपर किया जाता है। इसीलिये हम देखते हैं कि बहुतसे लोग जो कई कर्मोंको अपने आपमें अच्छा या बुरा समझते हैं कई अन्य कर्मोंको परिणामोंके आधारपर ही पुण्य या पाप समझते हैं। उदाहरण के लिये कई मनुष्य न्यायको अपने आपमें अच्छा और अन्यायको अपने आपमें बुरा समझते हैं। साधारण अवस्थाओंमें सत्यको अच्छा और असत्यको बुरा समझते हैं, लेकिन यदि उनसे पूछा जाय कि असत्य किसी भी हालतमें जैसे किसी निष्पाप महात्माके प्राणोंकी रक्षा करनेमें भी उचित है या नहीं, तो उन्हें परिणामोंपर विचार करके ही उत्तर

देना पड़ेगा। कई लोगोंसे यदि यह पूछा जाय कि बुराईके बदले भलाई करनी चाहिये या बुराई, तो वे परिणामोंपर विचार किये विना उत्तर नहीं दे सकेंगे, यद्यपि कई कर्म उन्हें अपने आपमें अच्छे या बुरे मालूम होते हैं। पूर्वजन्मोंका अनुभव सब आत्माओंका एकसा नहीं होता। इसलिये वर्त्तमान जन्ममें कई लोगोंको कुछ कर्म अपने आपमें अच्छे या बुरे मालूम होने चाहिएं जो दूसरोंको ऐसे मालूम न हों और कुछ लोगोंको कुछ काम अच्छे या बुरे मालूम होने चाहिएं जो अन्यों को ठीक विपरीत प्रतीत हों। वर्त्तमान जन्मका अनुभव इन बातोंकी भी पुष्टि करता है। कई लोगोंकी अन्तरात्मा विशेष रूपसे जाग्रत होती है जिन्हें अंग्रेज़ीमें 'मौरल जीनियस (Moral Genius)' कहते हैं, जैसे महात्मा बुद्धको अथवा महात्मा गांधीको सब प्रकारकी हिंसा बुरी मालूम होती है, यद्यपि साधारण लोगोंको नहीं। इसी तरह पुण्य और पापके विषयमें विरोधी सम्मति भी दिखाई देती है। रस्किन कहता है किसी मनुष्यका अन्तरात्मा गधेकासा अन्तरात्मा भी हो सकता है। अरस्तू दास-प्रथाको उचित समझता था, जबकि लगभग उसी ज़मानेमें महात्मा बुद्ध शूद्रों और दूसरे लोगोंमें भेदभावको सहन न कर सकता था। ठग लोग मनुष्यकी हत्या करके उसकी बलि चढ़ाना पुण्य कार्य समझते थे, लेकिन दूसरे लोगोंको यह हत्या पाप मालूम होती थी।

सारांश यह कि पुनर्जन्मको मान लेनेसे दोनों विरोधी पक्षों (Intuitionism और Utilitarionism) का समन्वय हो सकता है। और बहुतसी हालतोंमें अन्तरात्माओंके जो भेद प्रतीत होते हैं उन की भी व्याख्या की जा सकती है—अर्थात् इस जन्ममें कई कर्म

आत्माको अपने आपमें अच्छे या बुरे मालूम होते हैं परन्तु पूर्वजन्मों में इनके अच्छे या बुरे होनेका निर्णय परिणामोंके दृष्टिकोणसे किया जाता था, यहांतक कि क्रमशः बहुत अभ्यास होनेपर आत्माका स्वभाव सा बन गया जिसे लेकर इसका वर्त्तमान जन्म में प्रवेश हुआ। और क्योंकि भिन्न भिन्न आत्माओंका पूर्वजन्मोंका अनुभव भिन्न-भिन्न है, इसलिये अन्तरात्माओंमें कुछ भेद पाये जाते हैं।

इंग्लैण्डका प्रसिद्ध दार्शनिक हर्बर्ट स्पैन्सर उपर्युक्त परस्पर विरोधी पक्षोंके विरोधको दूर करनेका प्रयत्न एक और तरहसे करता है। उसका कहना है कि प्राचीन युगमें मनुष्य जाति हज़ारों बरस तक पुण्य और पापमें अन्तर परिणामों के आधार पर करती रही, लेकिन फिर अनुभवके बढ़नेसे उन कर्मोंके सम्बन्धमें इसका एक स्वभाव या अन्तरात्मा (Conscience) बन गया जिससे अब मनुष्य कर्मोंको अपने आपमें अच्छा या बुरा समझते हैं।

इस बात पर तो पुनर्जन्म और स्पैन्सर सहमत हैं कि इस जन्मकी अन्तरात्मा या स्वभाव (conscience) जिससे कर्म अपने आपमें अच्छे या बुरे मालूम होते हैं पूर्वानुभवका परिणाम है और अनुभव इस जन्मका भी नहीं है। असहमति इस बातमें है कि पुनर्जन्मके अनुसार यह पूर्वानुभव पूर्वजन्मोंका है अर्थात् मनुष्यका अपना है और स्पैन्सरके अनुसार यह पूर्वानुभव मनुष्य जातिका अर्थात् औरोंका है। इस असहमतिमें पुनर्जन्म अधिक युक्तियुक्त मालूम होता है। अपने पूर्वानुभवसे किसीके स्वभावका बनना तो स्वाभाविक बात प्रतीत होती है, जिसके बहुतसे उदाहरण हमें अपने आपमें और दूसरोंमें इस जन्म में भी मिलते हैं।

लेकिन यह एक पहेली है कि दूसरोंका अनुभव किसी आदमीके स्वभाव वा अंतरात्मा को कैसे बना सकता है। यह प्रसिद्ध है कि लोग दूसरोंके अनुभवसे लाभ नहीं उठाते। अंग्रेज़ीका उपन्यासकार लॉर्ड लिटन लिखता है:—"Disappointment must await the endeavour to gain knowledge without labour and experience without trial." कहा जाता है कि प्रत्येक पीढ़ी और प्रत्येक मनुष्य कए ही ग़लतियोंको दुहराते हैं। दूसरोंके अनुभवसे हमें ज्ञान तो हो सकता है लेकिन यह कठिन है कि हम पर उसका इतना गहरा असर हो कि उसके अनुकूल हमारा स्वभाव बन जाय। यदि कहा जाय कि पैतृक संस्कार के द्वारा मनुष्य जातिका अनुभव किसी मनुष्यमें चला जाता है। तो जैसा हम पहले कह चुके हैं (देखिये सातवां अध्याय) पुनर्जन्म को मानने से ही समझमें आता है कि पैतृक-संस्कारका नियम क्यों काम करता है। इसके अतिरिक्त वैज्ञानिक भी स्वयं स्वीकार करते हैं कि अभीतक यह प्रमाणित नहीं हो सका कि स्वयं प्राप्त की हुई विशेषताएँ (Acquired characters) उत्तराधिकारमें सन्तान को दी जा सकती है।

परन्तु अनुभव और उससे बना हुआ स्वभाव तो स्वयं प्राप्तकी हुई चीज़ है, इसलिये विज्ञान इस बातकी पुष्टि नहीं करता कि मनुष्य जातिका अनुभव पैतृक संस्कार द्वारा मनुष्यके अन्तरात्मा या स्वभाव (Conscience) को बना सकता है। इस तरह पैतृक संस्कारका नियम इस बातकी व्याख्या नहीं कर सकता कि मनुष्य जातिका पूर्वानुभव अब किसी मनुष्यमें कैसे पहुंच गया। परन्तु यदि इस बातको

मान भी लिया जाय कि मनुष्य-जातिका पूर्वानुभव प्रत्येक मनुष्यमें पहुंच जाता है और उसके स्वभाव या अन्तरात्माको बना देता है तो स्पष्ट है कि सब मनुष्योंका अन्तरात्मा एकसा होना चाहिये, लेकिन जैसा हम ऊपर देख चुके हैं अन्तरात्माओंमें भेद भी उपलब्ध होते हैं। पुनर्जन्मके अनुसार अन्तरात्मा एकसे हैं, क्योंकि प्रत्येक आत्मा हर ज़मानेमें विद्यमान थी इसलिये वह असङ्ख्यात जन्मोंमें घूम चुकी है, विविध प्रदेशों और जातियोंमें नाना प्रकारके जीवनोंमें से गुज़र चुकी है। अतः प्रत्येक आत्माका अनेक प्रकारका अनुभव है। परन्तु यह सब होते हुए भी अनुभव सर्वथा सदृश नहीं हैं और किसी आत्माका दूसरी आत्माओं-से बहुत भिन्न हो सकता है। इसलिये अन्तरात्माओंमें भेद भी हैं। यदि मान भी लिया जाए कि स्पैन्सरके सिद्धान्तसे अन्तरात्माओंके सादृश्यकी व्याख्या हो सकती है तो भी इनके भेद की बिलकुल नहीं हो सकती और इसलिये पुनर्जन्मका सिद्धान्त स्पैन्सरके सिद्धान्तसे अधिक युक्तियुक्त है।

ग्यारहवां अध्याय

पुनर्जन्म और आधुनिक पाश्चात्य संसार
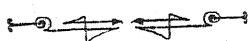
हम पहले दिखा चुके हैं कि प्राचीन काल की बड़ी-बड़ी जातियां पुनर्जन्मके सिद्धान्त को मानती थीं। पूर्वकी बहुतसी जातियां जैसे हिन्दू और बौद्ध अब तक भी इसे मानती चली आती हैं। वर्त्तमान कालमें पाश्चात्य जातियां उन्नति के मार्ग में सबसे आगे बढ़ी हुई हैं। हम अब दिखानेका प्रयत्न करेंगे कि आधुनिक पाश्चात्य संसार में भी पुनर्जन्म बहुतसे विद्वानों लेखकों और कवियों का एक प्रिय और विश्वसनीय सिद्धान्त है।

पश्चिमी ऐतिहासिकों की परिभाषामें वर्त्तमान युगका प्रारम्भ लगभग १६ वीं सदी से होता है। इस युगमें पैरेसिलसस (Paracelsus) बोहम (Bochme) स्वीडन बर्ग (Swedenberg) इमर्सन (Emerson) जैसे आध्यात्मिक लोग, ब्रूनो (Bruno) कैम्पैनैला (Campanella) लीबनिज़ (Liebnitz) लैसिंग (Lessing) हर्डर (Herder) कान्ट (Kant) फ़िश्टे (Fichte) हेगल (Hegel) शपनहायर (Schopenhauer) हेनरी मोर (Henry More) कडवर्थ (Cudworth) ह्यूम

(Hume) जैसे दार्शनिक, फ़ॉरियर (Fourier) फ़्लैमेरियन (Flammarion) बोड (Bode) जैसे वैज्ञानिक, ऐराड्री पेज़ानी (Andre Pezani) सोअम जैनिन्स (Soame Jenyns) जूलियस मुलर (Julius Muller) और राम्ज़े (Ramsay) जैसे धार्मिक लोग, विलियम नाईट (William knight) और फ़्रैन्सिस बोवन (Francis Bowen) जैसे प्रोफ़ेसरोंने अपना विश्वास इस सिद्धान्तमें प्रगट किया है अथवा इसके पक्षमें लिखा है। हेन (Hayne) ह्विटियर (Whittier) टेलर (Taylor) ऐल्ड्रिच (Aldrich) लौङ्ग फ़ैलो (Longfellow) वाल्ट ह्विटमैन (Walt Whitman) वड्र्ज़वर्थ (Wordsworth) टैनिसन (Tennyson) ऐवलिन होप (Evelyn Hope) ऐमा टैथम (Emma Tatham) जैसे कवियोंने अपने पद्यों में इस सिद्धान्तकी पुष्टि की है। हमने थोड़ेसे नाम नमूने के लिए पेश कर दिये हैं। पुनर्जन्म पर विश्वास रखनेवाले और इसका समर्थन करने वाले समस्त प्रामाणिक पुरुषोंके नामों का उल्लेख करना इस छोटी-सी पुस्तकमें सम्भव नहीं।

केवल विद्वान् ही इस सिद्धान्तके पक्षपोषक नहीं, प्रत्युत जनसाधारणमें भी इसका बहुत हद तक प्रचार है। बहुतसी धार्मिक और गुप्त सोसाइटियां हैं जिनके सिद्धन्तोंमें पुनर्जन्मका प्रमुख स्थान है। थियोसॉफ़िकल सोसाइटी (Theosophical society) जिसकी शाखाए योरोप और अमरीकाके बहुतसे प्रदेशोंमें फैली हुई हैं इस सिद्धान्तपर विश्वास रखती हैं। पश्चिमकी योगी फ़िलासफ़ी (Yogi Philosophy) जिसके योरप और अमरीकामें बहुतसे अनुयायी हैं, इस सिद्धान्तकी

शिक्षा देती है। इन दोनों सोसाइटियोंके लोगोंने अपने बहुतसे सिद्धान्त हिन्दू दर्शनसे लिये हैं। एक और सोसाइटी जो स्पिरिटिस्ट (spiritist) के नामसे प्रसिद्ध है, इस सिद्धान्तको मानती है। इन लोगोंने इस सिद्धान्तको यूनानी दर्शनसे लिया है। पश्चिममें बहुतसी सोसाइटियां हैं जो अपने सिद्धान्तोंको गुप्त रखती हैं, चुने हुए कुछ लोगोंको ही अपना सदस्य बनाती हैं और जनसाधारणमें अपने सिद्धान्तोंका बिल्कुल प्रचार नहीं करतीं। बल्कि कई तो अपने सदस्योंसे भी सिद्धान्तोंको गुप्त रखनेकी शपथ लेती हैं। इनके सिद्धान्तोंका स्रोत नीओप्लेटोनिज़्म (Neo-Platonism) है। इनमें सिद्धान्तोंके बारेमें परस्पर कुछ विरोध भी हैं, लेकिन पुनर्जन्मपर सब विश्वास रखती हैं। अभिप्राय यह है कि इस सिद्धान्तके प्रत्येक प्रचीन रूपके प्रतिनिधि आजकल योरप और विशेषकर अमरीकामें विद्यमान हैं। इसके अतिरिक्त कई ईसाई लोग ईसाई रहते हुए भी पुनर्जन्मको मानने लगे हैं। इनका विचार है कि ईसाइयत और पुनर्जन्ममें आपसमें कोई प्रतिकूलता नहीं। दोनोंको इकट्ठा माना जासकता है। इन लोगोंका विश्वास है कि भिन्न-भिन्न जन्मोंमें घूमनेसे जो आत्मा पर्याप्त उन्नति कर लेती है, वह स्वर्गमें चली जाती है। लेकिन जबतक उन्नतिकी विशेष सीमा तक न पहुंचे, लौटकर जन्म लेती रहती है। इन लोगोंमेंसे कुछ तो मानते हैं कि स्वर्गमें भी आत्मा निरन्तर एक ही अवस्थामें नहीं रहती, बल्कि विविध जन्मोंमेंसे गुज़रती रहती है और अधिकाधिक उन्नति करती रहती है। विलियम बाकर ऐट्किंसन लिखता है कि ऐसे ईसाई लोगोंकी संख्या पर्याप्त है जो पुनर्जन्मको मानते हैं, परन्तु ये अपने सिद्धा-

न्तोंको गुप्त रखते हैं जिससे इनके दूसरे ईसाई भाई इनपर सन्देह नहीं करते। ये लोग पुनर्जन्मके लिये (Reincarnation) के स्थानपर Rebirth शब्दका प्रयोग करते हैं।

उपर्युक्त वर्णनसे स्पष्ट है कि पुनर्जन्म आजकल पश्चिममें कितना प्रचलित है। अब हम नमूनेके तौरपर कुछ पाश्चात्य विद्वानोंकी सम्मतियां उद्धृत करेंगे जिससे ज्ञात होसके कि वे लोग इस सिद्धान्तको कितनी प्रतिष्ठाकी दृष्टिसे देखते हैं।

जर्मनीका प्रसिद्ध दार्शनिक शौपनहॉर अपनी पुस्तक 'The World as will and Idea' में लिखता है:—

"What sleep is for the individual, death is for the will......and through this sleep of death it reappears refreshed and fitted out with another intellect........These constant new births, then, constitute the succession of the life-dreams of a will which in itself is indestructible, until instructed and improved by so much and such various successive knowledge in a constantly new form, it abolishes or abrogates itself."

अर्थात् संकल्पशक्ति (आत्मा) के लिये मृत्यु वैसी ही है जैसी किसी मनुष्यके लिये निद्रा और इस निद्रा अर्थात् मृत्युके द्वारा यह संकल्पशक्ति अभिनव स्फूर्तिके साथ नूतन बुद्धिसे युक्त होती है। यह जन्मोंकी शृङ्खला उस संकल्पशक्तिके जन्म हैं। जब तक संकल्पशक्ति

ज्ञान प्राप्त करके उन्नति न करले तब तक इसकी समाप्ति नहीं हो सकती।

लिचटनबर्ग (Lichtenberg) अपने विषयमें लिखता है कि—मैं इस विचारको दूर नहीं कर सकता कि मैं पैदा होनेसे पहले मर चुका हूँ ("I can not get rid of the thought that I died before I was born)"

एक और प्रसिद्ध जर्मन दार्शनिक लैसिंग (Lessing) लिखता है—"कोई कारण नहीं कि मैं बार-बार जन्ममें लौटकर न आऊँ, जबतक कि मैं नवीन ज्ञान और सामर्थ्य प्राप्त कर सकता हूं। क्या मैं एक ही जन्मसे इतना प्राप्तकर सकता हूँ कि दोबारा जन्म ग्रहणके कष्टका मुझे कुछ मुआवज़ा न मिले ?" लैसिंगका समकालीन हर्डर (Herder) भी पुनर्जन्मपर विश्वास रखता था। वह पशु शरीरोंमें भी आत्माका जन्म लेना मानता था। उसने पुनर्जन्मपर बहुत कुछ लिखा है और इसके पक्षमें बहुतसी युक्तियां पेशकी हैं, जिनमेंसे कुछ उदाहरणके लिए हम यहां देते हैं:—

"कई मनुष्योंको किसी नये स्थानपर मालूम होता है कि इसे पहले देखा हुआ है (The Already seen)। जो लोग विषयभोगसे विरक्त होकर पवित्र जीवन व्यतीत करते हैं, जैसे पाइथेगोरस (Pythagoras) ऐपोलोनियस (Appollonius) और इयारकस (Iarchus), उन्हें अपने बहुतसे पूर्वजन्म याद होते हैं। कई बार छोटे बच्चे ऐसे विचार प्रगट करते हैं कि हमें आश्चर्य होता है कि इनमें ये कहांसे आ गये।"

सोअम जीनिन्स (Soame Jenyns) ने पुनर्जन्मपर पुस्तक लिखी है। इसमेंसे निम्न वाक्य ध्यान योग्य हैं—

"That mankind has existed in some state previous to the present was the opinion of the wisest sages of the most remote antiquity. It was held by the Gymnosophists of Egypt, the Brahmans of India, the Magi of Persia, and the greatest philosophers of Greece and Rome; it was likwise adopted by the fathers of the Christian Church, and frequently enforced by her primitive writers. Why it has been so little noticed, so overlooked rather than rejected, by the divines and metaphysicians of later ages, I am at a loss to account for, as it is undoubtedly confirmed by reason, by all the appearance of nature, and the doctrines of revelation."

अर्थात् "प्राचीन कालके बड़े-बड़े विद्वान् मानते थे कि मनुष्य इस जन्मसे पहलेभी किसी हालतमें विद्यमान था। मिस्रके दिगम्बर तपस्वी, भारतवर्षके ब्राह्मण, फ़ारसके मैजाई और यूनान और रोमके बड़े-से-बड़े दार्शनिक इस सिद्धान्तको मानते थे। इसके अतिरिक्त ईसाई गुरु और ईसाई लेखकभी इसमें विश्वास रखते थे। अर्वाचीन कालमें धार्मिक और दार्शनिक व्यक्तियोंने इसकी ओर इतना कम ध्यान क्यों दिया, यह मेरी समझमें नहीं आता, क्योंकि युक्तिसे, प्राकृतिक

घटनाओंसे और ईश्वरीय ज्ञानसे निःसन्देह इस सिद्धान्तकी पुष्टि होती है।"

इंग्लैण्डके विख्यात कवि शैले (Shelley) के बारेमें एक कहानी प्रसिद्ध है कि एक दिन वो और उसका मित्र हौग (Hogg) मिलकर अफ़लातून (Plato) के अध्ययनमें इतने मग्न थे कि व्यायामका समय गुज़र गया, इस लिये वे भोजनसे पहले वायु सेवनके लिये निकल गये। मैकडालिन नामक पुलके ठीक बीचमें उन्होंने एक स्त्रीको देखा जो अपने बच्चेको उठाये हुए थी। शैले उस समय अतीत और आगामी जन्मोंके विचारमें ऐसा मग्न था कि वह साधारण शिष्टाचारको भी भूल गया। और उसने बच्चेको पकड़ लिया। माँको डर लगा कि वह बच्चेको नीचे पानीमें फेंकने लगा है, इसलिये उसने बच्चेके वस्त्रको ज़ोरसे पकड़े रखा। शैलेने स्त्रीसे ऊँची आवाज़ और ललचाई हुई नज़रसे पूछा कि—ऐ देवी! क्या तेरा बच्चा हमें पूर्वजन्मोंके सम्बन्धमें कुछ बतायेगा? उसने फिर अपने प्रश्नको दुहराया। इस पर स्त्रीका डर जाता रहा और वह बोली—श्रीमान्! बच्चा बोल नहीं सकता। शैलेके चेहरेसे निराशा टपकने लगी और उसने अपने लम्बे बालोंको हिला कर कहा—यह और भी बुरा है। लेकिन निश्चय ही बच्चा यदि चाहे तो बोल सकता है। क्योंकि इसे पैदा हुए अभी कुछ ही सप्ताह हुए हैं, शायद इसका खयाल हो कि मैं नहीं बोल सकता, लेकिन यह उसका वहम है। असम्भव है कि इतने थोड़े अरसेमें यह बोलना भूल जाय। स्त्रीने नम्रतासे उत्तर दिया—"भद्र पुरुषो! मुझे आपके साथ विवाद करना शोभा नहीं देता। लेकिन इतना मैं अवश्य कह सकती हूँ कि मैंने

इसे बोलते कभी नहीं सुना और नहीं इस उमरके किसी दूसरे बच्चेको।" बच्चा बड़ा विनीत मालूम होता था, वह मुस्कराया। शैलेने उसकी उभरी हुई गालोंको अँगुलियोंसे दबाया और दोनों मित्रोंने उसके रूप और विनयकी प्रशंसा की, और आगे बढ़े। शैलेने आह भर कर कहा—"ये छोटे बच्चे कितने मौन होते हैं! इस सत्यको छिपानेका कितना भी प्रयत्न किया जाए परन्तु यह स्पष्ट है कि सम्पूर्ण ज्ञान (पूर्वजन्मोंकी) स्मृति पर आश्रित है। यह सिद्धान्त अफ़लातूनके समयसे भी बहुत पुराना है।"

ह्यूम (Hume) आधुनिक पाश्चात्य जगत्का सबसे प्रमुख सन्देहवादी हुआ है। लेकिन पुनर्जन्मके विषयमें वो लिखता है:—

"The metempsychosis is the only system of this kind that philosophy hearken to."

अर्थात्—"इस प्रकारके सब सिद्धान्तोंमेंसे आवागमन ही एक ऐसा सिद्धान्त है जिसकी बात दर्शन सुन सकता है।"

कवि वर्ड्स्वर्थकी ये पंक्तियाँ प्रत्येक अंग्रेज़ी जानने वालेके मुँहपर हैं—

"Our birth is but a sleep and a forgetting;
The soul that rises with us our life's star,
Hath had elsewhere its setting,
And cometh from afar.

अर्थात्—"हमारा जन्म एक निद्रा और विस्मृति है, हमारी आत्मा जो जीवन नक्षत्रके रूपमें हमारे साथ उदित हुई है, पहले कहीं अन्यत्र अस्त हो चुकी है और दूरसे आती है।"

अमरीकाके प्रसिद्ध आध्यात्मिक कवि वॉल्ट ह्विटमैनने कई पद्य पुनर्जन्म पर लिखे हैं। कुछ पंक्तियाँ हम यहाँ देते हैं :—

"I know I am deathless,

As to you, life, I reckon you are the leavings of many deaths,

No doubt I have died myself ten thousand times before."

अर्थात्—"मैं जानता हूँ मैं अमर हूँ। हे जीवन ! मैं समझता हूँ कि तुम अनेक मृत्युओंका प्रसाद हो। निःस्सन्देह मैं स्वयं इससे पहले दस हज़ार बार मर चुका हूँ।"

"Believing I shall come again upon the earth after five thousand yeers."

"मुझे विश्वास है कि मैं पाँच हज़ार बरस बाद फिर पृथिवी पर आऊँगा।"

"Births have brought us richness and variety, and other births have brought us richness and variety."

"विविध जन्मोंसे हमें भिन्न-भिन्न प्रकारका अनुभव और योग्यता प्राप्त हुई है।"

महारानी विक्टोरियाके दरबारी कवि टैनिसन (Tennyson) का एक पद्य इस प्रकार है :—

"As when with dowancast eyes we muse and brood

And eble into a former life, or seem
To lapse far back in a confused dream
To states of mystical similitude,
If one but speaks or hems or stirs a chair,
Ever the wender waxeth more and more
So that we say, all this hath been before,
All this hath been, I know not whene and where;
So, friend, when first I looked upon your face
Our thoughts gave answer each to each, so true,
Opposed mirrors each reflecting each —
Although I knnw not in what time or place,
We thought that I had often met with you,
And each had lived in other's mind and speech."

अत्यन्त संक्षेपसे इसका अभिप्राय यह है कि—"कभी कभी हम ऐसी हालतमें आजाते हैं कि हम जो कुछभी करते या देखते हैं, हमें अनुभव होता है कि यह पहलेभी होचुका है, लेकिन मालूम नहीं कहां और कब। इसी तरह हे मित्र, जब मैंने पहले पहल तुम्हारा चेहरा देखा तो मुझे अनुभव होने लगा कि मैं तुमसे कई बार मिल चुका हूँ और हमारी परस्पर गहरी मित्रता रह चुकी है परन्तु मालूम नहीं कहां और कब।"

डी० जी० रोज़ैट्टी (D. G. Rosetti , के निम्न पद्य देखियेः—

1. I have been before,

But where or how I cannot tell;
I know the grass beyond the door
The sweet keen smell,
The singing sound, the lights around the shore

2. You have been mine before,
How long ago I may not know
But just when at that swallow's soar
Your neck turned so,
Seme veil did fall,—I knew it all of yore,

3. Then, now, perchance again !
Around mine eyes your tresses shake !
Shall we not lie as we have lain
Thus for love's sake,
And sleep, and wake, yet never break the chain ?

संक्षेपसे इसका आशय यह है कि "इस जन्मसे पहले भी मैं था क्योंकि मैं आसपासकी सब चीज़ोंको पहिचानता हूँ, यद्यपि मै नहीं बता सकता कि मैं कब और क्योंकर था।" अपनी प्रेमिकाकी ओर निर्देश करके कवि कहता है, "इस जन्मसे पहलेभी तुम मेरी थीं, क्योंकि इस पक्षीके उड़नेपर तुमने अपनी गर्दन फेरी तो मैंने इसे पहिचान लिया। क्या हमारे प्रेमकी शृङ्खला इसी तरह आगेभी स्थिर न रहेगी ?"

स्कॉटलैण्डका प्रसिद्ध प्रोफ़ेसर विलियम नाईढ पुनर्जन्मके विषयमें लिखता है :—
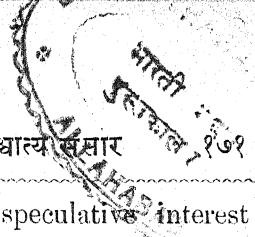
"The theory has immense speculative interest and great ethical value."

अर्थात्—"यह सिद्धान्त दार्शनिक दृष्टिसे अत्यन्त रुचिकर और नैतिक दृष्टिसे बहुत उपयोगी है।"

जेम्स फ्रीमैन क्लार्क लिखता है :—

"डार्विनका विकासवाद कहता है कि मनुष्य पशुओंसे धीमे-धीमे उन्नति करके अपनी वर्त्तमान अवस्था तक पहुंचा है। यदि इसके साथ आत्माके विकास अर्थात् आत्माका शनैः शनैः पशुओंके शरीरोंमेंसे गुज़रकर उन्नति करनेका सिद्धान्त भी जोड़ लिया जाय तो विकासवाद की बहुतसी कठिनाइयाँ हल हो जाएंगी। यदि हमको विकासवादको मानना है तो आत्मासे सहायता लेनी चाहिये। इस तरह विज्ञान, दर्शन और कवितामें समन्वय हो जायगा।"

विलियम डब्लू० आर० एलगर (W. R. Alger) एक पादरी था जिसने सन् १८६० में एक बहुत प्रसिद्ध पुस्तक 'A Critical History of the Doctrine of a future life' का प्रथम संस्करण छपवाया। इसमें उसने पुनर्जन्मका खण्डन किया और इसे एक धोका बताया। इसके बाद पन्द्रह वर्ष तक वह निरन्तर इस विषय पर विचार करता रहा और अपनी पुस्तकके अन्तिम संस्करणमें उसने पुनर्जन्मका बलपूर्वक समर्थन किया।

हार्वर्ड यूनिवर्सिटीके प्रोफ़ेसर बोवनने पुनर्जन्मके पक्षमें लगभग पचास वर्ष हुए एक लाजवाब लेख लिखा था। उस लेखकी दो-एक युक्तियां नमूनेके तौरपर नीचे दी जाती हैं :—

"इस संसारमें हमारा जीवन एक उच्च और नित्य जीवनके लिये तय्यारी समझा जाता है। परन्तु यदि यह जीवन एक ही हो तो इतने उच्च उद्देश्यके लिये अपर्याप्त है एक सत्तर वर्षका जीवन हमेशाके लिये तय्यारी क्योंकर हो सकता है? यदि मान लिया जाय कि एक ही छोटेसे जीवनके बाद स्वर्ग आदिमें नित्य जीवन प्राप्त हो जाता है तो शॉपन-हॉरके शब्दों में क्योंकि प्रयत्न और उन्नति इसी जीवनमें सम्भव है और दुख और कष्ट केवल पाप का ही परिणाम हो सकते हैं जो स्वर्गमें सम्भव नहीं इसलिये स्वर्गमें बेकारीके कारण थकावटके सिवा कुछ नहीं हो सकता। एक छोटेसे जीवनके परिणामस्वरूप नित्य दण्ड या पुरस्कार न्यायके प्रतिकूल है। यदि प्रत्येक मनुष्य जन्मके समय ही उत्पन्न हुआ है अर्थात् इस जन्मसे पहले उसकी सत्ता नहीं थी तो यह समझमें नहीं आता कि संसारमें इतनी विषमता क्यों है। एक आदमी अफ्रीकाके उष्ण और असह्य जलवायुमें पैदा होता है, दूसरा सभ्य योरपकी उत्तम परिस्थितिमें; एक मनुष्यकी ऐसी परिस्थितियाँ हैं कि उसे आरम्भसे ही सदाचारकी शिक्षा दी जाती है, दूसरेको दुराचारकी; एक आरम्भसे ही बुद्धिमान् होता है दूसरा मन्दबुद्धि संसारमें इस प्रकारका वैषम्य न्यायके प्रतिकूल है। पुनर्जन्मको मान लेनेसे यह विषमता भी न्यायानुकूल हो जाती है क्योंक तब यह पूर्वजन्मोके कर्मोंका परिणाम है। मनुष्यका आचार दो तरहका होता है। एक वह जो इस जन्ममें परिस्थितियोंसे बनता है दूसरा वह जो जन्मागत विशेषताओं और प्रवृत्तियोंका परिणाम हो। ये जन्मागत विशेषताएँ आदि पूर्वजन्मोंका ही परिणाम हो सकती हैं, और इस जन्मकी परिस्थितियाँ भी इन्हींके अनुसार आचारका

निर्माण कर सकती हैं। उदाहरणके लिये धनोपार्जनकी इच्छा एक आदमीको चोर बना सकती है, दूसरेको कृपण; एकको ईर्षालु दूसरेको परिश्रमी बना देती है। यह आवश्यक नहीं कि आत्माको अपने पूर्व-जन्म याद रहें क्योंकि उनका असर आत्मामें जन्मागत संस्कारोंके रूपमें विद्यमान है। पूर्वजन्म के कर्मोंके भूलनेसे आत्माका उत्तरदायित्व हट नहीं जाता, इसी प्रकार जैसे वर्तमान जन्मकी बहुतसी बातें तो भूल चुकी हैं लेकिन उनसे हमारा हृदय और मस्तिष्क बन चुका है। इस जन्ममें भी यदि हमने समयका दुरुपयोग किया है तो हम उसके लिये उत्तरदायी हैं, चाहे हमें भूल चुका हो कि हमने किस तरह या किन बातोंमें इसे नष्ट किया। इस जन्मके बहुतसे पाप और अपराध हम भूल चुके हैं, लेकिन असदिच्छाओं और क्षीण शक्तियोंके रूपमें उनके परिणाम अब भी हमें भुगतने पड़ते हैं। फिर पूर्वजन्मांके भूले हुए कर्मोंका फल क्यों न मिले? दुनियामें बुराई क्यों है, यह एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण प्रश्न है जिस पर दार्शनिक सदासे विचार करते आये हैं। पुनर्जन्मका सिद्धान्त इसका सन्तोषजनक समाधान कर देता है। संसारमें दुःख और सङ्कट पूर्वजन्मोंके कुकर्मोंका दुष्फल हैं। इससे भी परमात्माका प्रेम प्रगट होता है, जैसे मां-बाप बच्चेकी उन्नतिके लिये उसे उसके अपराधोंका दण्ड देते हैं। मनुष्यकी भलाई इतनी आराममें नहीं है जितनी सदाचारमें है। इस लिये विपत्ति तथा संकट, ऐश्वर्य और सुखके समानही मनुष्यके लिये उपकारक हैं क्योंकि वे मनुष्यके सदाचारी बननेमें सहायता देते हैं। संसारमें विविध प्रकारकी विषमता एक बड़ी बुराई समझी जाती है, परन्तु पुनर्जन्मके अनुसार वह पूर्वजन्मके कर्मों-

का फल है और इस लिये लाभकर है। जो इस जन्ममें दुःखी है अगले जन्ममें सुखी हो सकता है। इस जन्मका किसान किसी आगामी जन्ममें अपने कर्मोंके अनुसार राजकुमार बन सकता है। प्रत्येकके लिये मैदान खुला है। इस जन्ममें प्रत्येकके लिये सब प्रकारकी उन्नतिका अवसर नहीं, लेकिन भिन्न-भिन्न जन्मोंको दृष्टिमें रखते हुए प्रत्येकके लिये समान अवसर हैं। पुनर्जन्मको मान लेनेसे मृत्यु भी कोई बुराई नहीं रहती क्योंकि मृत्यु इस संसारमें एक नये जन्मकी भूमिका है और यदि यह नया जन्म इस जन्मसे अच्छा नहीं तो अपराध मनुष्यका अपना ही है। ईसा मसीह पुनर्जन्म को मानता था क्योंकि यहूदियों में प्रसिद्ध था कि मसीहसे पहले ऐलिजाह (Elijah) या इलियास (Elias) फिर पृथिवी पर आएगा। और ईसा मसीहने दो बार ऐलान किया कि 'मेरा समकालीन जौन दी बैप्टिस्ट (John the Baptist) वही इलियास है।'

सर हम्फ्री डेवी (Sir Humphry Davy) के निम्नलिखित वाक्य ध्यान देने योग्य हैं—

"I sometimes imagine that many of those powers which have been called instinctive belong to the more refined clothing of the spirit. Conscience, indeed seems to have some indefined source, and may have relations to a former state of being."

अर्थात्—"मैं कई बार सोचता हूँ कि हमारी जन्मागत स्वाभाविक शक्तियाँ आत्माके एक सूक्ष्म आवरणसे सम्बन्ध रखती हैं (जन्मसे

पहले उपार्जित की हुई हैं) सम्भव है कि अन्तरात्माका आधार हमारे अस्तित्वकी कोई अतीत अवस्था हो।"

फ्रांसके प्रसिद्ध वैज्ञानिक और दर्शनवेत्ता फ्लैमेरियनने आत्मा और उसके मृत्युके पश्चात् जन्मके सम्बन्धमें आधी सदीसे अधिक वैज्ञानिक अनुसन्धान किया है। उसके कुछ शब्द हम पाठकोंको भेंट करते हैं—

"Eternal life can be understood only according to the principle of renicarnation laid down by Pytha goras, Origen. Gean Reynand, and so many other philosophers.........The doctrine of reincarnation is the only one which remains admissible after we have pondered all metaphysical considerations. and it is the oldest of definite religious beliefs. There must be both a previous existence and an after life.........

Our life after death will vary according to our preparations for it. We are what we make ourselves. The Theosophist's Karma is real."

(Flamnarion's Death and its Mystery (iii) Vol. Page 338.)

संक्षेपसे इस उद्धरण का अभिप्राय यह है कि "नित्य जीवन समझमें नहीं आसकता जब तक कि पुनर्जन्मको न माना जाए। सब दार्शनिक बातोंपर विचार किया जाए तो केवल पुनर्जन्मका सिद्धान्त ही मानने योग्य रह जाता है।"

इस प्रसिद्ध वैज्ञानिककी कुछ युक्तियां नमूनेके तौरपर हम नीचे लिखते हैं जो इसने पुनर्जन्मके पक्षमेंदी हैं:—

"पुनर्जन्मके पक्षमें बड़ी युक्ति यह है कि लोग जन्मसेही एकजैसे नहीं होते। बचपनसेही बुद्धि विद्याओं और कलाओंकी ओर प्रवृत्ति तथा रुचिकी विभिन्नता होती है। इसका कारण न तो मां बाप और न परिस्थितियां ही होसकती हैं। एक और युक्ति यह है कि कई लोगोंको इस जन्ममें पहली बार होने वाले अनुभवों दृश्यों और शब्दों आदिके विषयमें ऐसा मालूम होता है कि इनको पहलेभी देखा या सुना हुआ है। इसका कारण पुनर्जन्मके अतिरिक्त कुछ नहीं हो सकता। प्रत्येक मनुष्यकी जन्मसेही कुछ विशेषताएं होती हैं, इनका कारण मां बाप नहीं होसकते। मैं एक खान्दानको जानता हूँ जिसमें एकही मां बापके पाँच लड़के हैं जो आपसमें इतने भिन्न हैं मानो वे अलग-अलग जातियोंके हों। इस प्रकारके हज़ारों दृष्टान्त दिये जासकते हैं। मेरे एक मित्रकी पत्नी है जो हमेशा ख़ुश रहनेवाली है, लेकिन उसके स्वप्न इतने दुःखभरे होते हैं कि प्रायः वह रोपड़ती है। हमारे शौक़ व मज़ाक़पर, प्रेम और घृणापर, स्वप्न और अन्तर्दृष्टिपर (Intuition) पूर्वजन्मकी स्मृतिका असर होता है, जो हमारी उपचेतना (Subconscious self) अथवा स्मृतिकी गहराइयोंमें विद्यमान होती है। हमारे अन्दर स्मृतिकी दो धाराएं होती हैं जो प्रायः मिली हुई होती हैं, लेकिन कभी-कभी अलगभी होजाती हैं। यदि प्रश्न किया किया जाए कि हमें पूर्वजन्मोंकी स्मृति क्यों नहीं होती तो इसका उत्तर यह है कि इस जन्ममेंभी हमें सब घटनाओंके हज़ारवें हिस्सेकी भी स्मृति

शेष नहीं रहती। इसके अतिरिक्त उपचेतनामें पूर्वजन्मोंकी स्मृति होतीभी है। असाधारण योग्यताके व्यक्ति पुनर्जन्मका एक और प्रमाण हैं।"

उपर्युक्त उद्धरणोंसे स्पष्ट है कि आधुनिक युगके सभ्य पाश्चात्य जगत्‌मेंभी पुनर्जन्म, दर्शनके सर्वश्रेष्ठ सिद्धान्तोंमेंसे एक माना जाता है, उच्चतम बुद्धिके विद्वानोंमें से कई इसमें विश्वास रखते हैं और बहुतसे जो इसे स्वीकार नहीं करते, इसे एक मान्य सिद्धान्त अवश्य समझते हैं और उनमेंसे कई तो कहते हैं कि यदि आत्मा और नित्य जीवन आदिके सम्बन्धमें कोई सिद्धान्त मानना हो तो पुनर्जन्म ही एक सिद्धान्त है जो माना जासकता है।

बारहवां अध्याय

आत्मा का पशु-पक्षियों के शरीर में जाना (१)

आजकल पुनर्जन्मके सम्बन्धमें यह प्रश्न भी विवादास्पद और आवश्यक हो गया है कि क्या पुनर्जन्मके चक्करमें आत्मा एक दूसरे के बाद भिन्न-भिन्न मनुष्य शरीरोंमें ही जन्म लेती रहती है, अथवा पशु-पक्षियोंके शरीरोंमें भी जाती है। आजकलके कई पाश्चात्य विद्वान् यहतो मानने लगे हैं कि आत्मा मृत्युके बाद भिन्न-भिन्न मनुष्य शरीरोंमें जन्म लेती रहती है परन्तु उनमेंसे कुछ इसका पशु-पक्षियोंके शरीरोंमें जन्म लेना नहीं मानते। प्राचीन कालमें तो लगभग वे सब जातियां जो पुनर्जन्मको मानती थीं आत्माका मनुष्य शरीरके अतिरिक्त पशु-पक्षियोंके शरीरोंमें भी (बल्कि उनमेंसे कई तो बानस्पतिक शरीरोंमें भी) जन्म लेना मानती थीं। उदाहरणके लिए हिन्दू लोग हमेशासे यह मानते चले आये हैं कि आत्मा मृत्युके बाद अपने कर्मोंके अनुसार मनुष्य या पशु-पक्षीके शरीरमें जाती है। उनका फलित ज्योतिष सही या ग़लत तौरपर न केवल मनुष्यके अतीत और आगामी जीवनको बतानेका दावा करता है, अपितु यहभी कि इस जन्म से पहले मनुष्यकी आत्मा मनुष्य शरीरमें थी अथवा पशु शरीरमें, यदि मनुष्य शरीरमें थी तो उसके जीवनमें क्या

क्या घटनाएं हुई थीं, और यदि पशु शरीरमें थी तो किस प्रकारके पशुके शरीरमें थी, बन्दर रीछ या किसी और शरीरमें, इस जन्मके बाद आत्मा किस प्रकारके पशु या मनुष्यके शरीरमें आएगी और उसका जीवन कैसा होगा इत्यादि। हिन्दुओंकी धार्मिक पुस्तकोंमें भी इस बातका स्थान-स्थानपर उल्लेख है। मनुस्मृतिमें लिखा है कि जो पुरोहित शराब पीता है वह मरकर कीड़ा पतङ्गा या कोई हिंस्र पशु बनता है। छिलके समेत अनाज चुरानेवाला आदमी चूहा बनता है, दूध चुरानेवाला कौआ और रस चुरानेवाला कुत्ता बनता है। वेद तथा अन्य धार्मिक पुस्तकोंमें भी इसका ज़िकर है। इसी तरह जैन और बौद्धभी आत्माका पशु शरीरमें जन्म लेना मानते हैं। बौद्ध लोग बुद्धके बारेमें ही मानते है कि उसकी आत्मा बुद्धके शरीरमें आनेसे पहले कई बार मनुष्य और पशुके शरीरमें जन्म लेचुकी थी।

प्राचीन मिस्रके लोग भी मनुष्यका पशु शरीरोंमें जन्म लेना मानते थे, इसीलिये वे पशुओंको पवित्र समझ कर उनकी पूजा करते थे। पारसी लोगभी इस सिद्धान्तको मानते थे और उनके धार्मिक गुरु ज़रथुश्थ् (Zoroaster) के द्वारा यह सिद्धान्त यूनान और इटलीमें भी फैल गया। क्रोढोना (इटली) के विख्यात दार्शनिक पाइथेगोरसके विषयमें प्रसिद्ध है कि उसने एक पीटे गये कुत्तेकी चीखको सुनकर पहिचान लिया कि यह मेरे एक मरे हुए दोस्तकी आवाज़ है। यूनानका दार्शनिक ऐम्पिडोक्लीस (Empedocles) अपने विषयमें कहा करता था कि मैं एक लड़के, लड़की, झाड़ी, पक्षी और मछलीके जन्मोंमेंसे गुज़र चुका हूँ।

अफ़लातून और उसका शिष्य प्लाटिनस (Platinus) जो संसारके ख्यातनामा विद्वानोंमें से हैं, इस प्रकारके पुनर्जन्मको मानते थे। प्राचीन जर्मनीके लोग और ड्रूइड लोग भी जो ब्रिटन (पुराना इंग्लैएड) आदि देशोंके पुरोहित थे, इस सिद्धान्तको ठीक समझते थे। मैक्सिकोके मूल निवासी अब तक मानते हैं कि उच्च लोगोंकी आत्माएं मृत्युके बाद गाने वाले सुन्दर पक्षियों और बड़े चतुष्पाद् पशुओंके शरीरमें प्रविष्ट होती हैं और नीच लोगोंकी आत्माएं कीड़े आदि तुच्छ प्रकार के प्राणियोंके शरीरोंमें जाती हैं। इसी तरह हवशी लोग, सैन्डविच द्वीप और तस्मानियाके निवासी तथा अफ्रीका अमरीका आदि महाद्वीपोंके मूल निवासियोंकी कई जातियाँ इस सिद्धान्तमें विश्वास रखती हैं। बहुत से प्रदेशोंमें ऐसे जानवरोंके सम्बन्धमें कहानियाँ प्रचलित हैं जो आधे मनुष्य और आधे जानवर समझे जाते हैं। इससे मालूम होता है कि वहाँके लोग पशुओं और मनुष्योंकी आत्माओंको एकही प्रकारका समझते हैं।

उपर्युक्त उदाहरणोंसे स्पष्ट है कि जो लोग पुनर्जन्मको मानते रहे हैं वे प्रायः आत्माका, मनुष्य पशु-पक्षी इत्यादि सब प्रकारके शरीरोंमें से गुज़रनाभी मानते रहे हैं। वे मनुष्य और पशुमें इस तरहका भेद नहीं करते थे कि एककी आत्मा दूसरेमें जाही नहीं सकती। तब कुछ आधुनिक पाश्चात्य लेखक इस प्रकारका भेद क्यों करते हैं? उनका विचार है कि मनुष्य परमात्माकी सर्वोत्कृष्ट कृति है, मनुष्य और पशुमें इतना अन्तर है कि दोनोंकी आत्माओंका एक दूसरेमें चले जाना सम्भव नहीं। लेकिन इन लोगोंका विचार ग़लत मालूम होता है। इस सिद्धान्तके पक्षमें

अनेक युक्तियाँ दीजा सकती हैं कि आत्मा मनुष्य और पशु दोनों प्रकारके शरीरोंमें से गुज़रती है।

इसमें सन्देह नहीं कि मनुष्यों और पशुओंमें अन्तर है परन्तु यह अन्तर इस तरहका नहीं कि इसके कारण मनुष्यों और पशुओंको सर्वथा भिन्न-भिन्न प्रकारकी सृष्टि समझा जाए। दोनोंमें एकही प्रकारके गुण विद्यमान हैं, केवल उनकी मात्राका अन्तर है। शारीरिक बातोंको देखा जाए तो उनमें आपसमें अत्यन्त सादृश्य है। पशु-शरीर भी वैसेही मांस, अस्थि, त्वचा, केश, नख आदिसे बना हुआ है जैसे मनुष्यका शरीर। पशुके शरीरको भी भोजनकी आवश्यकता है जो उसी तरह शरीरका अङ्ग बन जाता है जैसे मनुष्यमें। बहुतसे खाद्य पदार्थभी एक ही हैं। बहुतसे पशु लगभग वे सब वस्तुएं खाते हैं जो मनुष्य खाते हैं, जैसे अनाज शाक इत्यादि। पशु इनके अतिरिक्तभी कुछ पदार्थ खाते हैं, जिन्हें मनुष्य साधारणतया नहीं खाते जैसे पत्ते। परन्तु अकाल या आपत्कालमें मनुष्य भी इन चीज़ोंको खालेते हैं। बहुतसे पशुओंमें मनुष्योंकी तरह से भोजन पचकर रक्तमें परिणत होजाता है और भोजनका अनावश्यक भाग मूत्र और मल बनकर बाहर निकल जाता है। पशु और मनुष्यके शरीरकी रचना एकसीही है। दोनोंके शरीरके अवयव परस्पर आश्रित होते हैं। सारा शरीर प्रत्येक अङ्गपर और प्रत्येक अङ्ग सारे शरीरपर आश्रित होता है। विविध कार्योंको करनेके लिये पृथक्-पृथक् अङ्ग होते हैं जो केवल उन्हीं कार्योंको कर सकते हैं। शरीरके बड़े-बड़े आन्तरिक अवयवभी प्रायः पशुओं और मनुष्योंमें एक जैसे होते हैं। उदाहरणके लिए हृदय, फेफड़े, मस्तिष्क, आमाशय, गुर्दे जिगर आदि

इन अवयवोंके कार्य भी दोनोंमें सदृश होते हैं । बाह्य अवयवोंमें भी वैसी ही समानता है । आँख, नाक, कान, दांत, जीभ मनुष्यों और प्रायः करके बहुतसे पशुओंमें बराबर हैं । कई पशुओंके हाथ मनुष्यसे भिन्न हैं परन्तु रीछ बन्दर आदिके बहुत मिलते जुलते हैं । मनुष्य और पशु दोनोंके शरीरमें चोट लग जानेपर अन्दर ही से क्षतिपूर्ति होजाती है । चलना फिरना और सन्तानोत्पादन करना मनुष्यों और पशुओंमें एकसा है । इसलिए शारीरिक दृष्टिसे तो मनुष्यों और पशुओंमें ऐसा वैषम्य नहीं दिखाई देता जिससे उन्हें परस्पर इतना भिन्न समझा जाए कि दोनोंकी आत्माएं एक प्रकारकी न होसकें ।

अब हम भावनाओंकी दृष्टिसे देखते हैं । क्रोध मनुष्यमें भी है और पशुमें भी । क्रोधके आवेशमें दोनों लड़ते हैं और अपने प्राणों तककी परवा नहीं करते । मुर्गों, मेढ़ों, बटेरों और सांडोंकी लड़ाईको उदाहरणके लिये पेश किया जा सकता है । अंग्रेज़ीमें कहावत है कि लाल रंगको देखनेसे सांड गुस्सेमें आ जाता है । भय भी मनुष्य और पशुमें बराबर है । पशुओंका डर कर भागना, छिपना, काँपना इत्यादि इसके प्रमाण हैं । प्रेम भी पशुमें मनुष्यकी तरह है । क्या पशुओंका अपने बच्चोंकी तरफ़ रवैया ऐसा नहीं है जैसा मनुष्यों का ? गायका दूध दुहा जाता है तो वह अपने बच्चेके लिये कुछ दूध छिपा लेती है । हमने स्वयं एक गायको देखा है जिसका बछड़ा उस की आँखोंके सामने मार दिया गया था । वह रात और अगले दिन भर बहुत दुखी और बेचैन रही । निरन्तर चिल्लाती थी । वस्तुतः उसकी आंखों से आंसू बह रहे थे और एक बहुत बड़ी मात्रा गीदकी

उसकी आंखोंमें जमा होगई जो सामान्यतः—नहीं होती थी। मुर्ग़ और मुर्ग़ियां इकट्ठे फिर रहे हों और कोई आदमी मुर्ग़ीको पकड़ ले और बन्द करदे तो मुर्ग़ बहुत व्याकुल हो जाता है, जब तक मुर्ग़ीको छोड़ न दिया जाय वह शांत नहीं होता, निरन्तर ऊँची आवाज़में चिल्लाता रहता है। साधारण निरीक्षणकी बात है कि यदि कोई कौआ मार दिया जाए तो सब कौए उस जगह इकट्ठे हो जाते हैं और देर तक कांय-कांय करते रहते हैं। प्रेमकी स्पर्द्धा का भाव तो पशुओं में पर्याप्त प्रबलरूप में पाया जाता है।

सूक्ष्म भावों को देखा जाए तो वे भी मनुष्यकी तरह पशुओंमें पाए जाते हैं, मात्राका अन्तर अवश्य होता हैं। कुत्ता यदि रोटी चुरा ले या और कोई अपराध करदे तो अपने स्वामीके सामने विशेष रूपसे दुम हिलाता और पेट दिखाता है। ऐसा मालूम होता है कि मानो वह जानता हो कि मैंने अपराध किया है, अथवा यदि बाज़ारी कुत्ता हो तो ऐसी हालतमें एक छोटेसे बच्चेसे भी डरकर भागता हैं जिससे वह सामान्यतः नहीं डरता। साधारणतया देखा जाता है कि कोई कुत्ता यदि बहुत छोटे कुत्तेको सताए या कुतियासे रोटी छीन लेता हो तो दूसरे कुत्ते मिलकर उसे मारते हैं, जहां वह दीखे वहीं उसपर हमला करते हैं और वह छिपता फिरता है। बाज़ आदि शिकारी पक्षी कबूतरीके घौंसलेसे बच्चे खारहे हों तो कबूतरीके आने पर डर कर भाग जाते हैं यद्यपि साधारणतया कबूतरीको मार कर खा जाते हैं। बन्दरोंमें देखा जाता है कि वे दल बनाकर रहते हैं जिनमें से हरेकका मुखिया होता है। भिन्न-भिन्न दलोंकी आपसमें लड़ाईयां होती हैं। अकेले

मिलनेपर भी एक दलका बन्दर दूसरे दलके बन्दरको मारता है। कुत्तेकी स्वामि-भक्ति तो संसार भरमें प्रसिद्ध है। उसका स्वामी उसे मार भी डाले परन्तु वह उसे कभी नहीं काटेगा। अरबी घोड़ोंके विषयमें स्वामीके लिये अपने प्राण देनेकी कई कहानियाँ सुनी जाती हैं, जैसे यह कि एक अरबी और उसके घोड़ेको डाकू ले गये। रातको घोड़ा स्वामीको मुँह में पकड़कर भागा और अपने डेरे पर आकर ठहरा, मगर पहुँचते ही वह गिर पड़ा और उसका दम टूट गया। उसने अपनी जान गंवा दी परन्तु स्वामीको बचा लाया। कहानी ठीक हो या ग़लत लेकिन इस प्रकार की घटनाएं ज़रूर होती होंगी, अन्यथा ऐसी कहानियों का बनना भी असम्भव होता। हाथीके बारेमें प्रसिद्ध है कि यदि कोई विशेष स्वादु और घी वाला पदार्थ उसे खिलाया जाए तो वह उसका कुछ भाग बचा कर मुँहमें रख छोड़ता है और पीछे महावतको दे देता है। विशेषतया यदि खाते समय महावत इशारा करदे तो ज़रूर ऐसा करता है। ऊँटकी बदला लेनेकी आदत प्रसिद्ध है। कई लोगोंका खयाल है कि कुत्ते आदि पशुओं की नज़र से सहानुभूति और कई बार दया की प्रार्थना टपक रही होती है, मानो वे हमारे भाई होने का दावा करते हैं। कहते हैं कि कविसम्राट् कालिदासको किसी पशुकी इस प्रकारकी नज़रसे पुनर्जन्मके सिद्धान्त पर विश्वास हो गया था। उपर्युक्त उदाहरणोंसे स्पष्ट है कि मनुष्यकी तरह पशुओंमें भी किसी हद तक सूक्ष्म भावनाएं पाई जाती हैं।

ज्ञानके क्षेत्रमें भी मनुष्यों और पशुओंमें बहुत समानता है। अनेक पशुओंकी ज्ञानेन्द्रियां मनुष्य जैसी हैं। कईयोंकी इन्द्रियां तो

मनुष्य से भी बहुत तेज हैं। जैसे चील, बाज़ आदि शिकारी पक्षियों की आंख बहुत दूरसे छोटी-छोटी चीज़ोंको भी देख लेती हैं। बिल्ली तथा कई अन्य जानवर रातको अन्धकारमें भी और दिनमें भी बड़ी अच्छी तरह देख सकते हैं। कुत्ता पांव के निशान सूंघता हुआ जङ्गल में शिकारके पीछे भागा जाता है। मनुष्यकी इन्द्रियोंमें इतनी शक्ति नहीं। इसी तरह पशुमें स्मृतिशक्ति भी विद्यमान हैं। घोड़ा, अपने घर को नहीं भूलता और स्वामी को देखकर हिनहिनाता है। ऊँट को यदि कोई सताए तो ज़रूर उससे बदला लेता है। यह तभी हो सकता है यदि उसे पहिचाने। ऐसे ही हाथी अपने महावत को पहिचानता है। कुत्ता मुहल्लेके लोगोंके प्रति कभी नहीं भौंकता। वस्तुओं-का श्रेणियोंमें विभाग करनाभी पशुओंमें पाया जाता है। जैसे बिल्ली हरेक चूहेके पीछे भागती है और हरेक कुत्तेसे या तो डरकर भागती है या घिर जानेपर उसके सामने पांव कुरेदती है। इससे मालूम होता है कि वह सब चूहोंको एक जैसा, और सब कुत्तोंको भी एक जैसा लेकिन सब चूहों से भिन्न समझती है, यद्यपि मनुष्यकी तरह उसने उनके अलग-अलग नाम नहीं रखे हुए। फ़ासले आदिका अन्दाज़ा जानवर बहुत अच्छा लगाते हैं। कभी किसीने देखा है कि बन्दर एक शाखासे दूसरी शाखा तक उछलते हुए बीच हीमें गिर पड़े? मनष्य तो ऐसी हालतमें कईबार गिर जाता है। कौआ ऐसी जगह नहीं जाता जहां वह घिर जाए।

बहुत बड़ा भेद जो मनुष्य और पशुमें समझा जाता है वह यह है कि मनुष्यकी सी बुद्धि विचार और सीखनेकी शक्ति पशुमें नहीं है। लेकिन आजकल कई परीक्षण किए गए हैं जिनसे सिद्ध होता है कि

यह भेद भी इतना बड़ा नहीं है जितना साधारणतया समझा जाता है। प्रसिद्ध लेखक मैटरलिंक (Materlink) अपनी पुस्तक (The Unknown Guest) के १८२ और १८३ पृष्ठ पर जर्मनीमें घोड़ों पर किये गये परीक्षणोंके विषयमें इस प्रकार लिखता है:—

"पहले पहल जर्मनीमें घोड़ोंपर परीक्षण किया गया। वैलियन आस्टन नामक एक आदमीका यह विचार था कि पशुओंमें भी बुद्धि होती है। इसलिये उसने अलबर फील्ड नामके घोड़ेपर निम्नलिखित परीक्षण किया। पहले उसे खुर या सुमके दांए बांए की पहिचान करवाई गई। फिर उसे हिसाब सिखाना शुरू किया गया। एक मेज़पर पहले एक पिन रखा जाता था, फिर दो फिर तीन और इसी तरह बढ़ाते २ कई छोटे छोटे पिन रखे जाते थे। घोड़ेके सुमोंसे एक-एक करके इन पिनों पर ठोकर मारी जाती थी और साथही साथ जितनी बार ठोकर मारी जाती थी वह संख्या भी बोल दी जाती थी। उदाहरण के लिये उसने तीनबार ठोकर मारी तो साथही तीन बोल भी दिया जाता था। फिर इन पिनों के स्थानपर घोड़ेके सामने तख्तीपर लिखी हुई संख्या रखी जाती थी और साथ ही इस संख्याका नाम भी बोला जाता था। इस तरह घोड़ेको कुछ अरसेतक पढ़ाया जाता रहा। परिणाम बहुत विचित्र निकला। घोड़ा सुम मारकर गणना करने लगा और छोटे छोटे प्रश्नभी निकालने लगा। खुर आदि मारकर पढ़ना भी सीख गया और रागके स्वर भी पहिचानने लगा। प्रत्येक सप्ताह की प्रत्येक तिथि उसे याद रहती थी। अभिप्राय यह कि वे सब बातें जो एक १४ वर्षका लड़का करता है वहभी करता था।"

आस्टनका लोगोंने बड़ा विरोध किया, क्योंकि वह पशुओंको मनुष्य जैसा सिद्ध करना चाहता था। उसकी मृत्युके बाद कराल नामक एक और अन्वेषकने ऐसाही परीक्षण किया। उसने दो अरबी घोड़ोंको लेकर सिखाया जो उपर्युक्त घोड़ोंसे भी अधिक सीख गए क्योंकि उसकी पढ़ानेकी विधि अधिक अच्छी थी। पन्द्रह ही दिनमें ये घोड़े योग और ऋण करना सीखगए। योग और ऋणके चिह्न और इकाई दहाई समझने लगे। फिर चार दिनमें गुणा और भाग भी सीख गए। फिर कुछ महीनोंमें वर्गमूल-घनमूल तथा पढ़ना और शब्दोंके हिज्जे करनाभी सीख गये। इन घोड़ोंके लिए एक विशेष प्रकारकी वर्णमालाका निर्माण किया गया।

सारांश यह कि मनुष्यों और पशुओंमें बहुत समानता है। इसमें कुछ सन्देह नहीं कि विषमताएं भी है, परन्तु ऐसी नहीं कि हम कह सकें कि पशुओंकी आत्माका मनुष्यमें और मनुष्योंकी आतमाका पशुमें जाना असम्भव हैं। सूक्ष्म भावनाएं बुद्धि और तर्क मनुष्यमें पशुकी अपेक्षा बहुत अधिक हैं, और धार्मिक अनुभूति शायद मनुष्यमें ही है, परन्तु इस प्रकारकी विषमताएं मनुष्योंमें आपसमें भी हैं। कई मनुष्य सूक्ष्म भावनाओंकी दृष्टिसे पशुओंकी अपेक्षा भी अधिक पतित होते हैं, कई मनुष्योंमें कुछ इस प्रकारकी सूक्ष्म शक्तियां होती हैं जो दूसरोंमें नहीं होतीं; जैसे कई मनुष्य दूसरोंके विचार जान लेते हैं (Thought Transference or Thought Reading) और कई हज़ार मील दूरसे या बन्द कमरों और सन्दूकों आदिकी वस्तुएं देख लेते हैं (Clairvoyance) और सैंकड़ों हज़ारों मीलसे आवाज़ें सुन सकते हैं

(Clairaudience)। कई मनुष्योंमें परमात्माका साक्षात्कार करनेकी विशेष शक्ति होती है जो और लोगोंमें नहीं होती; जैसे भारतवर्षके योगियों, फ़ारसके सूफ़ियों और ईसाई सेण्टोंमें। लेकिन क्या ऐसी विषमताओंके कारण कोई कहता है कि इनकी और जन साधारणकी आत्माएं भिन्न-भिन्न प्रकारकी हैं? सब लोग स्वीकार करते हैं कि सब मनुष्योंकी आत्माएँ एक प्रकारकी हैं। भेद केवल इतनाही है कि कुछ अधिक उन्नत होती हैं और कुछ कम। फिर पशुओं और मनुष्योंमें भी वैसे ही भेद होते हुए क्यों नहीं माना जाता कि उनकी आत्माएं एक जैसी ही हैं और केवल उन्नतिकी मात्राका भेद है? इस जन्ममें ही कोई मनुष्य अपने अभ्यास और उच्च कर्मोंके कारण योगी बन सकता है, और इसके विपरीत योगीसे गिरकर साधारण आदमी बन सकता है। ऐसी हालतोंमें यह माना जायगा कि भेद एकही आत्माकी उन्नति अथवा अवनतिका है, एकके स्थानपर दूसरे प्रकारकी आत्मा नहीं आगई। योगी और साधारण पुरुषमें उससे कहीं बढ़कर अन्तर होता है, जितना साधारण पुरुष और पशुमें होता है। ऐसी अवस्थामें पशु और मनुष्यमें विषमताके आधारपर यह कहना बिल्कुल अनुचित है कि मनुष्यों और पशुओंकी आत्माएं भिन्न-भिन्न प्रकारकी हैं जिससे वे आपसमें एक दूसरेके शरीरमें नहीं जासकतीं।

आजकलके पाश्चात्य वैज्ञानिक आत्मा या पुनर्जन्म आदिको नहीं मानते परन्तु इस बातको स्वीकार करते हैं कि मनुष्य और पशु एकही प्रकारके हैं। उनके विकासवादके सिद्धान्तके अनुसार समस्त संसार एक निरन्तर शृङ्खला है जिसमें चीजोंमें भेद केवल गुणोंकी मात्राका है, प्रकार

का नहीं। वनस्पतियोंसे पशु और पशुओंसे मनुष्य बने हैं—अर्थात् वही गुण जो पशुओंमें हैं विशेष हदतक बढ़ जानेसे मनुष्यके गुण बन गए हैं। मनुष्यमें कोई नए प्रकारका गुण या विशेषता नहीं पाई जाती। एवं हम इस परिणामपर पहुँचते हैं कि मनुष्य और पशु इतने भिन्न प्रकारके प्राणी नहीं हैं कि हम उनकी आत्माओंका एक दूसरेमें जाना असम्भव समझें।

किसी सिद्धान्तका एक बड़ा प्रमाण यह होता है कि उसे मान लेनेसे बहुतसी बातें सुगमतासे समझमें आजाएं जिन सबका कोई और एक युक्तियुक्त कारण न मिलता हो। इस कसौटीसे परखनेपर इस प्रकारका पुनर्जन्म जो आत्माओंका मनुष्य और पशु दोनोंके शरीरमें गुज़रना मानता है, बहुत ठीक मालूम होता है। संक्षेपके लिये इस प्रकारके पुनर्जन्मके लिये आगे इस पुस्तकमें हम 'आवागमन' शब्दका प्रयोग करेंगे। मनुष्योंमें कई गुण पशुओंसे इतने मिलते हैं कि उनके नामभी पशुओंसेही लेने पड़ते हैं। कई मनुष्योंके स्वभावमें जंगलीपनकी पराकाष्ठा होती है। रोमका सम्राट् नीरो (Nero) रोममें आग लगी हुई देखकर खुश होता था और बांसुरी बजाता था। रोमका एक और सम्राट् दासों युद्धके क़ैदियोंकी आंखपर पट्टी बांधकर उन्हें जहाज़के तख्तेपर दौड़ाया करता था ताकि वे दौड़ते हुए सहसा समुद्रमें गिरपड़ें। उनकी जान चली जाती थी वह और उनके गिरनेका दृश्य देखकर मज़े लिया करता था। कई आदमी ऐसे होते हैं कि मनुष्यके गरम-गरम खूनमें हाथ मारनेसे उन्हें विचित्र प्रकारका आनन्द आता है। इसलिये वे मनुष्योंको बिशेषकर बच्चोंको बहकाकर निर्जन प्रदेशमें लेजाते हैं और उनकी हत्या

करते फिरते हैं। एक जर्मन लेखक क्रैफ़्ट ऐबिंग (Craft Ebbing) अपनी पुस्तक (Psychopathia Sexualis) में ऐसे कई लोगोंका ज़िकर करता है। इस प्रकारकी मनोवृत्तियोंमें मनुष्यताकी अपेक्षा पशुता अधिक प्रतीत होती है। इरैस्मस (Erasmeus) लिखता है कि—"राजाओंका व्यवहार और चाल-ढाल बिल्कुल उक़ाब और शेरकी तरह होता है। राजाओंकी इन पशुओंसे उपमा देना बहुत ठीक है और उनकी आत्माओंमें बहुत कुछ सादृश्य अवश्य होता होगा।" रणजीतसिंह जैसे मनुष्यको शेर कहना प्रत्येक व्यक्ति उचित समझता है। कई कृतघ्न और कुटिल चाल चलनेवाले मनुष्योंको सांप कहे बिना नहीं रहा जाता। इसी तरह कइयोंकी मक्कारी लोमड़ीकी, निष्कपटता और भोलापन चिड़िया, कबूतर या मेमनेका, निर्दयता भेड़ियेकी और मूर्खता गधेकी याद दिलाती है। कई मनुष्योंकी आकृति पशुओं जैसी होती है। फ्राँसका प्रसिद्ध वैज्ञानिक फ़्लैमेरियन प्रसिद्ध विद्वान् लिट्र (Littre) के बारेमें लिखता है कि उसे देखकर याद आजाता था कि मनुष्य बन्दरसे बना है। कई लोग सांड या किसी और पशुके सदृश होते हैं।

इसके विपरीत कई पशुओंमें मनुष्योंके गुण पाये जाते में; जैसे कुत्ते या घोड़ेमें स्वामि-भक्ति, कौएमें धृष्टता, बन्दरमें कपट, शेरमें उदारता और उत्साह इत्यादि। अब प्रश्न यह है कि पशुओंमें और मनुष्योंमें इस प्रकारके सादृश्यका कारण क्या है ? यदि हम मानलें कि आत्मा पशु और मनुष्य दोनोंमें जन्म लेती रहती है तो इसका कारण स्पष्टरूपसे समझमें आजाता है। मनुष्योंकी पाशविकता उनकी आत्माओंमें पशु जीवनके संस्कार हैं। इसी तरह पशुओंमें मनुष्यता उनके मनुष्य जीवनके संस्कारोंका परिणाम है।

कहा जाता है कि पशुओंके साथ निर्दयताका व्यहार न करके प्रेमपूर्ण व्यवहार करना चाहिये। लेकिन यदि पूछाजाए कि ऐसा क्यों होना चाहिये, तो आवागमन माननेवालों के सिवाय दूसरोंके पास कोई युक्तियुक्त उत्तर नहीं मिलेगा। कुछ पाश्चात्य दार्शनिक कहते हैं कि पशुओंके साथ क्रूरता इसलिये नहीं करनी चाहिये क्योंकि उससे मनुष्य के स्वभाव में क्रूरता आजाती है जिससे वह अन्य मनुष्योंके प्रति भी क्रूर हो जाता है। यह युक्ति क्रूरताके विरुद्ध तो हो सकती है पर प्रेमपूर्ण व्यवहार के पक्षमें नहीं। इसके अतिरिक्त इस युक्तिके अनुसार पशुओंको कष्ट दिये बिना हानि पहुँचाने में क्या हर्ज है? जैसे क्लोरोफार्म सुंघाकर अंग आदि काटने में या परीक्षण करने के लिए जीवित प्राणीको काटनेमें (Vivisection) या कोई और ऐसे दुःख देनेमें क्या हर्ज है, जिनका प्रत्यक्ष प्रमाण न हो जैसे कम भोजन देना। इस युक्ति से तो केवल पशुओंको बेतहाशा बिना किसी प्रयोजनके मारना अनुचित सिद्ध हो सकता है। यह ऐसे लोगोंकी युक्ति है जिनके दिलमें स्वयं पशुओंके लिये सहानुभूति नहीं, परन्तु जो पशुओंको केवलमात्र मनुष्यके लिये समझते हैं और उन पर प्रेमभी इसलिए करते हैं कि इससे मनुष्य को लाभ हो। पशुओंके खानेके विरोधमें यह युक्ति क्या कह सकती है? अधिकसे अधिक इतना ही कि उन्हें ऐसे उपायों से मारना चाहिये जिससे उन्हें कष्ट न हो। ऐसी अवस्थामें जो स्वयं नहीं मारते उन्हें पशुओं को खाने में क्या हानि है? अमरीका आदि देशोंमें पशुओं को मशीन से और कमसे कम कष्ट देकर मारा जाता है। सैंकड़ों पशु पंक्तिमें खड़े कर दिये जाते हैं और मशीनका आरा एक ही बार गिर

कर आधे सैकण्ड में सबकी गर्दनें अलग कर देता है। इस युक्ति के अनुसार ऐसी रीतिसे इन्हें मारने में क्या हर्ज है?

कई अन्य पाश्चात्य विचारक कहते हैं कि पशुओंके साथ निर्दयता संसार में बुद्धिके शासनके विपरीत है। परन्तु वे बता नहीं सकते कि क्यों? रस्किन(Ruskin) लिखता है कि बनस्पतियोंको भी अनावश्यक-रूपसे खराब न करना चाहिये, पर वह इसका कोई सन्तोषप्रद कारण नहीं बता सकता। कई धर्म पशुओंके साथ प्रेम और दया का उपदेश देते हैं, और कहते हैं पशु भी परमात्मा की सृष्टि हैं, इसलिये परमात्मा के नामपर उनपर तरस खाना चाहिये। लेकिन इसके विरुद्ध कहा जाता है कि परमात्माने तो कई पशुओं को अन्य पशुओं का भोजन बनाया है। इसी प्रकार पशु भी मनुष्यों के भोजन और सेवाके लिये बनाए गए हैं। ऐसे पशु यदि मनुष्यके लिये लाभकर नहीं तो उनका जीनेका भी अधिकार नहीं है।

इस प्रकार, सब लोग स्वभावतः अनुभव करते हैं कि पशुओंके साथ निर्दयता नहीं होनी चाहिये। परन्तु इसका कोई युक्तियुक्त कारण नहीं बता सकते, आवागमनका सिद्धांत इस प्रश्नपर क्या प्रकाश डालता है? पशुओं मेंभी वैसी ही आत्माएं हैं जैसी मनुष्योंमें हैं। इसलिये पशु भी उसी तरह हमारे भाई और हमारी सहानुभूतिके अधिकारी हैं जैसे मनुष्य। पशुओं के साथ क्रूरता के विरूद्ध भी वही युक्तियां हैं जो मनुष्योंके साथ क्रूरता के विरूद्ध हैं। मनुष्य समाजमें हम कोई महान् अपराध या क्रूरता होती देखते हैं तो प्रत्येक को खतरा पैदा हो जाता है कि आज यह व्यवहार उसके साथ हो रहा है कल यही मेरे साथभी हो सकता है इसलिये

इसे रोकना चाहिये। आवागमनको मानने से पशुओंपर अत्याचार करते हुये भी इसी खतरेको अनुभव किया जाएगा। क्योंकि जो आज मनुष्य है, फिर कभी पशु हो सकता है और तब वह भी उसी अत्याचारका शिकार होगा जिसके आज पशु होते हैं। पशुओंका जीनेका अधिकार इसलिये नहीं कि वे मनुष्यका प्रयोजन सिद्ध करते हैं बल्कि इसलिये है कि उनमेंभी ऐसी ही आत्मा है जैसी मनुष्यमें। इसीलिये उनका भी जीनेका उसी प्रकारका अधिकार है जिस प्रकारका मनुष्यका। मनुष्य पशुओंसे तभी काम ले सकता है यदि उसके बदलेमें उनकी सेवा करे। अर्थात् दोनों एक दूसरेके लिए लाभकर हों। मनुष्यका अपना लाभ भी इसमें है कि वह मनुष्यों और पशुओं दोनोंके साथ प्रेम करे। क्रूरता करनेसे उसकी अपनी आत्मापर कुसंस्कार पड़ते हैं जिससे उसे इस जन्ममें या आगामी किसी जन्ममें उसका दंड भुगतना पड़ेगा। आगामी जन्ममें उसका स्वभाव और उसके गुण इस जन्ममें किये हुए कर्मोंके अनुसार होंगे। इस तरह छोटीसे छोटी निर्दयताभी उसे चिपट जाएगी और उसका पीछा न छोड़ेगी जब तक कि वह दयासे उसका प्रतिकार न करदे अथवा इसके लिये कष्ट न उठाले। इस तरह आवागमन हमें पशुओंके साथ प्रेम करने के लिये एक युक्तियुक्त कारण बताता है और प्रेमका एक ऊँचा आदर्श हमारे सामने रखता है।

किसी सिद्धान्तकी उत्कृष्टताकी प्रमाण यह भी है कि वह मनुष्यके जीवनपर कहांतक और क्या प्रभाव डालता है। आवागमनका प्रभाव हिन्दुओंके जीवनपर देखिए। उनके लिये यह न केवल एक दार्शनिक सिद्धान्त है अपितु क्रियात्मक-रूपसे जीवनका पथप्रदर्शक है। इसका

एक परिणाम यह है कि हिन्दू मांस खाना पाप समझते हैं। कुछ हिन्दू मांस खाते हैं परन्तु इस तरहसे जैसे कुछ हिन्दू शराब पीते हैं, अर्थात् उसे निषिद्ध मानते हुए एक वैयक्तिक कमज़ोरीके तौर पर। उनकी स्त्रियां प्रायः मांस नहीं खातीं। उनके त्यौहारों, पवित्र स्थानों और धार्मिक पद्धतियोंमें इससे परहेज़ किया जाता है। ऐसे ही जैन और बौद्ध भी किसी जीवित वस्तुको मन वचन अथवा कर्मसे क्षति पहुंचाना पाप समझते हैं। बहुत-सा व्यय करके भी पकड़े हुए पक्षियोंको स्वतन्त्र कराना, वृद्ध निर्बल और अस्वस्थ पशुओंके लिए भी आश्रम बनाना, पौधे तकको, बिना प्रयोजनके बनस्पति तकको भी उखाड़ने या खराब करनेसे हिचकिचाना इसी विश्वासके क्रियात्मक परिणामोंमेंसे हैं। अहिंसा (non-violence) के इस सिद्धान्तमें हिन्दू अबभी दूसरी जातियोंको शिक्षा दे सकते हैं। इस प्राचीन सिद्धान्तका इस युगमें प्रचार करनेके कारण महात्मा गांधी आज संसारके सर्वश्रेष्ठ पुरुष समझे जा रहे हैं।

तेरहवां अध्याय

आत्मा का पशु-पक्षियों के शरीर में जाना (२)

जानवरोंकी सहजात क्रियाओं (Instincts) परभी आवागमन के सिद्धान्तसे विशेष प्रकाश पड़ता है। जानवरोंमें विचित्र प्रकारकी सहजात क्रियायें करनेकी शक्ति होती है। उदाहरणके लिए पक्षी बड़े विचित्र घोंसले बनाते हैं। मधु-मक्खियाँ बहुत सुन्दर और विचित्र छत्ता बनाती हैं। एक भिड़ होती है जिसे अंग्रेजीमें मेसन वास्प (mason wasp) कहते हैं, वह अपने अण्डे गोबरकी गोलीमें देती है, वहीं भोजनभी रख देती है जिससे जब बच्चे निकलें तो उन्हें समुचित भोजन मिल सके। फिर गोलीको सब तरफ़से बन्द करके चली जाती है और उसके बाद कभी अपने अण्डों या बच्चोंको देखती भी नहीं। इस प्रकारकी अनगिनत शक्तियाँ भिन्न-भिन्न जानवरों में पाई जाती हैं। आश्चर्यकी बात यह है कि ये शक्तियां बिना सीखनेके स्वभावतः ही जानवरोंमें विद्यमान होती हैं। मनुष्य यदि चाहे तो बड़े परिश्रमसे ही ऐसी बातें सीख सकता है। उदाहरणके लिए तैरना कई जानवरोंमें स्वाभाविक होता है परन्तु मनुष्यको सीखनेसे ही आता है। ऐसे ही गृहनिर्माण तथा अन्य कई कार्य हैं। अब प्रश्न यह है कि जानवरोंकी इन शक्तियोंका क्या कारण है? आजकलके पाश्चात्य वैज्ञानिक कहते

हैं कि जानवरों के शरीरकी रचना ही ऐसी है कि वे अनिवार्यरूपमें इसी प्रकारकी चेष्टाएं कर सकते हैं, जैसे घड़ीकी रचना ही ऐसी है कि उसे चाबी देनेपर उसकी सुइयां विशेषगतिसे ही चलती हैं, इसके विपरीत हो ही नहीं सकता। इसी तरह तैरनेवाले जानवरके शरीरके साथ पानी के लगते ही वह ऐसी चेष्टाएं अवश्य करेगा जिन्हें तैरना कहते हैं। परन्तु जानवरोंकी इस प्रकारकी चेष्टाओंकी यन्त्र से उपमा वही पाश्चात्य विद्वान् दे सकते हैं जो मनुष्यमें भी आत्मा नहीं मानते, जो मनुष्यके शरीरको भी यन्त्र समझते हैं और उसकी बुद्धि तथा सूक्ष्म मनोभावों को थूक और पसीनेकी तरह केवलमात्र शरीरकी क्रियाओंका अनिवार्य परिणाम मानते हैं। यन्त्रके समस्त कार्य निरुद्देश्य होते हैं। घड़ीका पुर्ज़ा यदि ख़राब हो जाए तो वह ग़लत चलती रहती है। उसे इस बातकी परवा नहीं कि वह ठीक चल रही है या ग़लत। परन्तु मकड़ीका जाला अथवा जानवर का घोंसला बनाते समय बिगड़ जाय तो जानवर फ़ौरन् ठीक कर लेता है। घड़ीको चाबी देनेपर वह चाबी समाप्त होनेतक एक ही काम करती रहती है। किन्तु पक्षी घोंसला बनाना आरम्भ करदे तो क्या घोंसला ही बनाता जाता है? समयपर खाता-पीता तथा सोता है और समयपर घोंसला भी बनाता है। यदि घोंसला बनाना शरीरकी रचनाका आवश्यक परिणाम हो तो जानवरोंको हमेशा घोंसला ही बनाते रहनाचाहिये। वे एक विशेष ऋतु और कालमें (जब मादा अण्डे देनेको होती है) क्यों घोंसला बनाते हैं? यदि यह कहा जाए कि मादाके शरीरमें उस समय विशेष परिवर्त्तन पैदा होता है तो प्रश्न उत्पन्न होगा कि नर पक्षियोंके शरीरमें कौनसे परिवर्त्तन पैदा होते हैं जिससे वे घोंसला

बनानेमें मादाके साथ सम्मिलित होते हैं ? यदि मान भी लिया जाय कि घोंसला बनाना नर और मादाकी सामयिक शारीरिक अवस्थाका अनिवार्य परिणाम ही है तो उन्हें एकके बाद एक कई घोंसले बना डालने चाहियें और बनाते जाना चाहिये जब तक मादा अण्डे न दे दे, और अण्डे देनेके बाद यदि अचानक घोंसला टूट जाँए तो फिर बिल्कुल न बना सकना चाहिये क्योंकि शरीर की वह विशेष अवस्था अब विद्यमान नहीं है। परन्तु वस्तु स्थिति ऐसी नहीं है।

यदि आवागमनके सिद्धान्तको मान लिया जाए तो इस प्रकार की सहजात क्रियाओं और शक्तियोंका एक युक्तियुक्त कारण मिल जाता है। इस जन्मकी सहजात शक्तियां और क्रियाएं (Instincts) पूर्वजन्मोंकी सीखी हुई बातें हैं। अभ्यास से सीखा जाता है, इसमें तो आश्चर्यकी कोई बातही नहीं। हम रोज़ ऐसा होता देखते हैं। सीखी हुई बात याद भी रहती है जिससे ज़रूरत पड़ने पर हम उसे आसानीसे कर सकते है। जिस प्रकार इस जन्मकी सीखी हुई बातें याद रह सकती हैं वैसे ही पूर्वजन्मों की सीखी हुई बातें (जैसी हम पहले छठे अध्यायमें विवेचना कर चुके हैं) संस्कारों के रूपमें याद रह सकती हैं, अर्थात् इन अर्थोंमें याद रह सकती हैं कि ज़रूरत पड़नेपर हम उन्हें आसानीसे कर सकें। एक ही आत्मा भिन्न-भिन्न जन्मोंमेंसे गुज़रती है और जिस तरह इस जन्मके कर्मोंके संस्कार और इन कर्मोंसे बनी हुई आदतें और योग्यतायें आत्मामें रह सकती हैं, इसी तरह पूर्वजन्मकी भी रह सकती हैं। इसलिये जानवरोंकी विचित्र शक्तियां और सहजात क्रियायें पूर्वजन्मोंके अभ्यासका परिणाम हैं। उन्हें

कोई नई और रहस्यमय चीजें समझकर उनपर आश्चर्य करनेकी आवश्यकता नहीं, क्योंकि वे शिक्षण और अभ्यासके उस सामान्य नियमका परिणाम हैं जो इस जन्ममें सब प्राणियोंमें काम करता दिखाई देता है। इस जन्ममें हम देखते हैं कि यदि कोई आदमी कुछ सीखने लगे, जैसे बाजा बजाना या बाइसिकल चलाना, तो शुरू शुरूमें उसमें सारा ध्यान लगाना पड़ता है और बहुत प्रयत्न करना पड़ता है। इस सबके होते हुए भी वह बार-बार ग़लतियां करता है। परन्तु उस चीज़को अच्छी तरह सीख जानेपर विशेष ध्यान देनेकी कोई आवश्यकता नहीं रहती और वह चीज़ बड़ी आसानीसे स्वयंही होती जाती है। एक मनुष्य तैरना सीखता है तो वह पहले बहुत ग़लतियां करता है। कभी हाथ चलाना भूल जाता है और कभी पाँव चलाना, और बड़े ध्यानसे दोनों को इकट्ठा चलाता है। पर जब तैरना ख़ूब सीख जाता है तो सोचता या बातें करता हुआ भी ठीक प्रकारसे गति करता जाता है। ऐसा मालूम होता है कि उसके शरीरके साथ पानी लगतेही उसका तैरनेकी क्रियाएं करना स्वाभाविक है और अन्य किसी प्रकारकी क्रियाएं असम्भव हैं। उसे स्वयंभी नहीं मालूम होता कि मैं कैसे तैर रहा हूँ। बिल्कुल यही हाल जानवरोंकी सहजात क्रियाओं (Instincts) का है। वे भी बिना ध्यान दिये बहुत आसानीसे काम करते जाते हैं। प्रतीत होता है मानों उनका शरीर वही क्रियाँएं करनेके लिए बना हो। इससे बड़ी आसानीसे खयाल पैदा होसकता है, जैसे पाश्चात्य अन्वेषकों को हुआ है, कि ये क्रियाएं शारीरिक रचनाका अनिवार्य परिणाम हैं। एक सर्कसमें बाइसिकल चलाने वालाहो, जो लकड़ीके छोटेसे ढलवान

घेरेके अन्दर या पतली रस्सीपर सुगमतासे बाइसिकल चलाए और दूसरा आदमी बाइसिकल चलाना सीख रहा हो, यदि कोई मनुष्य जिसे यह न मालूम होकि कोई मनुष्य स्वभावतः साइकिल नहीं चला सकता इन दोनोंके अन्तरपर ध्यान दें तो क्या उसके दिलमें यह खयाल पैदा न होगा कि सर्कस वालेका शरीरही ऐसा बना है कि साइकल चलाना उसकी शारीरिक रचनाका स्वाभाविक और अनिवार्य परिणाम है ? आँख में कुछ पड़ जाय तो आँख बन्दहो जाती है (Reflex Action) और मनुष्य गिरने लगेतो हाथ स्वयं पहले नीचे जाते हैं (Secondary Automatism) क्या इन दोनों क्रियांओंमें कोई अन्तर मालूम होता है ? दोनोंही बिना सोचे जल्दी और अपने आप होने वाली हैं, परन्तु आँखके बन्द होनेको वैज्ञानिक शारीरिक रचनाका अनिवार्य परिणाम मानते हैं और हाथके पहले नीचे जानेको सीखा हुआ मानते हैं। उनमें अन्तर केवल यह है कि दूसरा काम वैज्ञानिकोंको बहुत छोटे बच्चोंमें दिखाई नहीं देता, अन्यथा अपने आपसमें येदोनों क्रियाएं एक जैसी हैं। एक युवापुरुषमें ये दोनों क्रियाएं देखकर भेद नहीं किया जासकता। इससे स्पष्ट है कि अच्छी तरह सीखी हुई और सहजात क्रियाओंमें देखनेपर कोई अन्तर नहीं प्रतीत होता। इसलिये इस जन्मकी सहजात क्रियाओंका पूर्वजन्मकी सीखी हुई क्रियाएं होना कोई असम्भव बात नहीं जिसे मानना कठिन हो।

आई० ऐस० कूपर (I S. Cooper) अपनी पुस्तक (Reincarnation) में लिखता है:—"एक मुर्गी का बच्चा जो अभी अण्डे से निकला हो वह भी बाज़की छायाको ज़मीनपर चलता देखकर छिपनेके लिये क्यों भागताहै ? इसे हम सहजात क्रिया (Instinct) कहते हैं

लेकिन किसी चीज़को कोई नाम दे देनेसे उसका कारण मालूम नहीं हो जाता। यदि हम मानलें कि मुर्गीके बच्चेको कई बार बाज़से मारे जानेकी स्मृतिहै जो संस्कारों (Memory Summary) में परिणतहो चुकी है और वर्तमान सहजात क्रिया उन संस्कारोंका एक परिणाम हैं, तो समझमें आजाएगा कि मुर्गीका बच्चा बाज़की छायासे डरकर क्यों भागता है। इसी तरहसे अन्य सहजात क्रियाएँ भी समझमें आसकती हैं, जैसे छोटी लड़कियोंमें और कभी-कभी लड़कोंमें भी मातृभाव पाया जाता है। जो बच्चा गुड़ियोंके साथ खेल रहाहै, क्या वह पूर्वजन्मोंके अनुभवको दुहरा नहीं रहा। जबकि वस्तुत: उसने प्रेमसे बच्चोंको पाला था। इसी तरह सब सहजात क्रियाओंकी व्याख्या पुनर्जन्मसे हो सकती है।"

सारांश यह कि आवागमनके सिद्धान्तके अनुसार सहजात क्रियाओं का कारण यह है कि आत्मा भिन्न भिन्न जन्मोंमें फिरती रहती हैं। जीवनके लिये आवश्यक कार्यों को बार-बार करनेसे उनका बहुत अभ्यास होजाता है, और फिर इस अभ्यास या संस्कारको आत्मा आगामी जन्ममें भी लेजाती है जिससे मनुष्य और जानवर कई जीवन-उपयोगी क्रियाएं बिना सीखे इस तरह कर सकते हैं जैसे कोई अभ्यस्त और कुशल व्यक्ति करता है। ऐसा मान लेनेसे जानवरोंकी सहजात क्रियाएँ बड़ी अच्छी तरह समझमें आजाती हैं। यदि इन्हें शारीरिक रचनाका अनिवार्य परिणाम माना जाय तो ज्ञान (Perception) उन क्रियाओंका आवश्यक अंग न होना चाहिए, जैसे हमारी आंखकी पुतली कई बार फैलती और सिकुड़ती रहती है किन्तु हमें इसका ज्ञान नहीं होता। प्रसिद्ध दार्शनिक मैक्डूगल

(Mcdougall) का विचार है और यह विचार सर्वमान्य हो रहा है कि ज्ञान और भाव (Emotion) सहजात क्रिया के आवश्यक अंग हैं; जैसे इससे पहले कि बिल्ली चूहेके पीछे दौड़े, उसे चूहेको देखना और पहिचानना तथा उसमें पीछे दौड़नेकी इच्छा पैदा होना आवश्यक है। आवागमनके अनुसार ये सहजात क्रियाएं इस जन्ममें अपेक्षाकृत बिना ध्यान दिये हो जाती हैं, पहले कभी इनके लिये पूरा ध्यान देनेकी जरूरत थी। परन्तु पूरे अभ्यासकी हालतमें भी कुछ न कुछ ध्यान रह जाना स्वाभाविक है चाहे वह बहुत थोड़ा हो। इस प्रकार आवागमन सहजात क्रियाओंकी जो व्याख्या करता है वह आजकलके प्रिय सिद्धान्तके भी अनुकूल है।

हर्बर्ट स्पैन्सर आदि कई विकासवादी कहते हैं कि जानवरोंकी सहजात क्रियाएं उनके पूर्वजोंके अभ्यासका परिणाम हैं। अभ्याससे जो शक्ति पहली नस्लोंमें आई वह उनकी सन्तान या अगली नस्लोंमें पैतृक संस्कारके नियमके अनुसार पहुँच गई (Like produces like) लेकिन जैसा हम पहले कह चुके हैं इस समस्याकी भी पुनर्जन्मके अतिरिक्त कोई युक्ति-युक्त व्याख्या नहीं हो सकती कि बच्चे क्यों अपने मां बाप की तरह होते हैं। एक और कठिनाई यह है कि कई वैज्ञानिक मानते हैं कि जानवरके अपने जीवनमें प्राप्त किए हुए गुण (Acquired characters) सन्तानमें नहीं जा सकते। एवं सहजात क्रियाओंको अभ्यासका परिणाम माननेमें विकासवाद भी आवागमनकी पुष्टि करता है। भेद केवल इतना है कि आवागमनके अनुसार ये क्रियाएं अपने अभ्यासका परिणाम हैं और विकासवादके अनुसार दूसरोंके अभ्यासका।

अपने अभ्याससे इस प्रकारके परिणामोंका पैदा होना हम रोज़ देखते हैं (जैसा हम पहले दिखा चुके हैं) परन्तु दूसरोंके अभ्याससे किसीमें कोई योग्यता कैसे उत्पन्न हो सकती है यह एक पहेली है।

(२) कई मनुष्योंमें इस प्रकारके परिवर्तन हो जाते हैं कि वे अपने आपको जानवर समझने लग जाते हैं। जगत् प्रसिद्ध प्रोफ़ेसर जेम्सने अपनी पुस्तक (Principles of Psychology) में एक ऐसी स्त्री का ज़िकर किया है :—

"एक स्त्री जिसका नाम ब्रिजेट (Bridget F.) था कई सालसे पागल थी। वह अपने आपको हमेशा चूहा कहा करती थी और अपने चिकित्सकसे कहती थी कि—मुझ छोटेसे चूहेको दफ़न कर दो। अपने आपको वह समझती थी कि यह कोई और स्त्री है, इसे वह भद्र स्त्री (Good Woman) कह कर पुकारती थी। वह कहती थी कि—'भद्र स्त्री डाक्टर एफ़को जानती थी और उसका काम किया करती थी'। वह कभी कभी पूछती थी—क्या तुम्हारे ख़यालमें वह भद्र स्त्री कभी वापिस आ जाएगी? वह सुईका काम, बुनना, कपड़े धोना तथा इसी तरहके दूसरे काम करती और अपना काम करके पूछती थी—क्या चूहेका यह काम अच्छा नहीं है? कई बार उसकी तबियत गिर जाती थी तो वह चूहेकी तरह इमारतोंके नीचे छिपती फिरती थी। रेंग कर सूराखों और सन्दूकोंके नीचे चली जाती थी। जब उसे ढूंढ लिया जाता तो वह कहती थी—'मैं सिर्फ़ चूहा हूं और मरना चाहती हूं।'

अब प्रश्न यह है कि इस प्रकार परिवर्तन क्यों हो गया? इसे मस्तिष्कका दोष या पागलपन कह देना प्रश्नको टालना होगा।

किसी चीज़का कोई नाम रख देनेसे उसका कारण मालूम नहीं हो जाता। देखना यह है कि उसके पागलपन या मस्तिष्क-दोषने यह विशेष रूप क्यों धारण कर लिया। आवागमनको मान लेनेसे इसका कारण स्पष्ट मालूम हो जाता है—अर्थात् उसकी आत्मा चूहेकी योनि-मेंसे गुजर चुकी है जिसकी स्मृति इस जीवनमें अब भी विद्यमान है, यद्यपि यह स्मृति साधारण अवस्थामें इस जन्मकी बातोंकी यादके कारण दबी रहती है। बीमारीसे इस जन्मकी स्मृति शिथिल हो गई, इसलिये पूर्व-जन्मकी स्मृतिने ज़ोर पकड़ लिया।

एक ही मनुष्यमें एकसे अधिक व्यक्तित्व (Multiple Personality) होनेका उल्लेख हम पहले भी कर चुके हैं। कई मनुष्योंमें दो व्यक्तित्व होते हैं। कभी एक प्रकट होता है कभी दूसरा। एकके समय दूसरेकी कोई बात याद नहीं होती और दूसरेके होने पर पहलेकी बातें याद नहीं होतीं। ऐसा मालूम होता है कि एक ही शरीरमें दो मनुष्य निवास करते हैं। कभी एक आ जाता है कभी दूसरा। इसी तरह कई लोगों में अनेकानेक व्यक्तित्व होते हैं। हम पहले कह चुके हैं कि इन भिन्न भिन्न व्यक्तित्वोंको विविध जन्मोंकी स्मृति कहा जा सकता है। यहां उल्लेख-योग्य बात यह है कि कई लोगोंमें ऐसे भी व्यक्तित्व आ जाते हैं जिनमें वे अपने आपको मनुष्य नहीं अपितु पशु या कोई और चीज़ समझते हैं।

१५ अगस्त सन् १९३२ के लीडर अखबार में निम्न समाचार प्रकाशित हुआ था:—"एक १६ वर्षकी लड़कीमें समय समयपर अनेक व्यक्तित्व प्रकट होते थे। डाक्टर ऐलेग्जैण्डर कैनन [Alexandar

Cannon] जो कौलनी हैच मेन्टल हौस्पिटलके ऐसिस्टैन्ट मैडिकल आफ़िसर हैं। इस लड़कीके बारेमें लैंसैट अखबारमें इस प्रकार लिखते हैं—'इस लड़की को १३ वर्षकी उमरमें मस्तिष्क में सूजन (Meningitis) का रोग होगया। इसके बाद उसमें एक दूसरा व्यक्तित्व प्रकट होने लगा। इस हालतमें वह पीछेकी तरफ़ लिखा करती थी। कुछ महीनोंके बाद साधारण व्यक्तित्वका समय कम होतागया और दूसरे एक व्यक्तित्वके स्थानपर नाना व्यक्तित्व समय समयपर प्रकट होने लगे। सब मिलाकर १६ थे जिनमेंसे बहुतोंके नाम लड़की स्वयं रखती थी। हम इन्हें नीचे देते हैं:—

(१) इस हालतमें वह अपने आपको 'वस्तु' कहा करती थी। उस की इन्द्रियाँ काम न करती थीं। वह खड़ी न हो सकती थी।

(२) इसमें वह अपने आपको 'वृद्ध निक' (Old Nick) कहती थी और उसकी तबीयत आवेशपूर्ण (Passionate)और शरारती होती थी।

(३) इस अवस्थामें उसके शरीर के अवयव कठोर हो जाते थे, और वह गूंगी बहरी होती थी।

(४) इस हालतमें वह पीछेकी तरफ़ हिज्जे किया करती थी। [Spelt backwards]।

(५) इस हालतमें वह अपने आपको 'अच्छी चीज़' कहा करती थी। वह बड़ी शरीफ़ मालूम होती थी, पर उसके हाथ पांवमें सामर्थ्य नहीं होता था।

(६) इस हालतमें वह अपने आपको 'प्रिय सुन्दरी' [Pretty dear] कहा करती थी। परन्तु न लिख सकती थी, न हिज्जे कर सकती थी।

(७) इस हालतमें वह अपने आपको मैमीवुड [Mamil Wud] कहती थी और बचपनकी घटनाओंको याद करती थी।

(८) इस हालतमें वह कुछ नहीं जानती थी और समझती थी कि मैं अभी पैदा हुई हूँ।

(९) इस हालतके बारेमें कुछ नहीं लिखा गया।

(१०) इस हालतमें अपने आपको 'वृद्ध प्रेरिका' (Old persuader) कहा करती थी और लोग यदि उसकी प्रेरणाके अनुसार आचरण न करें तो उन्हें मारनेके लिये छड़ी मांगती थी।

(११) इस हालतमें अपने आपको 'टोमकी प्रिया' Tom's darling कहा करती थी और उसका व्यवहार एक छोटेसे बच्चेका सा होता था।

(१२) इस हालतमें वह कहती थी कि मेरा कोई नाम नहीं, और वह तुन्द तथा निर्दयी होती थी।

(१३) इस हालतमें अपने आपको भयंकर बहरी चीज़ कहती थी। एक बार क्रोधमें आकर उसने अपने स्लिपर आगमें फेंक दिए।

(१४) इस हालतमें अपने आपको टौमीका मेमना [Tommy's-lamb] कहती थी और अन्धी तथा बिल्कुल मूर्ख होती थी।

(१५) इस हालतमें सुन्दर आकृतियाँ और चित्र बना सकती थी। यद्यपि साधारण अवस्थामें उसमें यह योग्यता बिल्कुल न थी।

अन्तमें वह सातवीं हालतमें हमेशा रहने लगी और एक सुशील स्वस्थ सुडौल लड़की थी जो घरके काम काजमें सहायता देती थी और अपनी रोटी कमानेके लिए टाइप राइटिंग सीखनेकी फिक्रमें थी।

अब प्रश्न यह है कि व्यक्तित्वके इतने परिवर्तनों का क्या कारण है ? और इतनी विचित्र विचित्र अवस्थाएं कैसे आ जाती हैं ? यदि यह मान लिया जाए कि ये भिन्न भिन्न पूर्वजन्मोंकी स्मृतियां हैं तो स्पष्ट समझमें आ जाता है कि ऐसी विचित्र विचित्र अवस्थाएं क्यों आजाती हैं। यहाँपर ध्यान देने योग्य बात यह है कि एक हालतमें वह अपने आप को मेमना कहती थी। इसे अलंकार न समझना चाहिये क्योंकि उस समय वह पशुकी तरह अन्धी और मूर्ख होती थी। एक और हालतमें वह अपने आपको 'वस्तु' कहा करती थी और निर्जीव वस्तुकी तरह उसकी इन्द्रियां काम करना बन्द कर देती थीं और वह चल न सकती थी। आवागमनके सिद्धान्तके अनुसार इसका कारण उसके पशु और बनस्पतिके शरीरोंके जन्मकी स्मृति थी जो कभी कभी आर्विभूत हो जाती थी।

इंगलैण्डके प्रसिद्ध अन्वेषक मायर्ज़ (Myers) ने अपनी पुस्तक [Human Personality vol 1] में अमरीकाकी एक १८ वर्षकी लड़की ऐना विन्सर (Miss Anna Winsor) का ज़िकर किया है जो ढाई बरस तक डाक्टर आयरा बैरोज़के (Dr. Ira Barrows) निरीक्षणमें रही। इसके विषयमें प्रोफेसर जेम्सने भी खोज की थी। ढाई बरसके अन्तरमें उस लड़कीकी अनेक अवस्थाएं परिवर्त्तित हुईं। इस छोटीसी पुस्तकमें उन सब अवस्थाओंका पूरा उल्लेख करना कठिन है। इस लिये हम नमूनेके तौर पर कुछ एक अवस्थाओंके बारेमें कुछ अपने सम्बन्धकी बातें संक्षेपसे नीचे लिखते हैं :—

(१) इस अवस्थामें वह बता सकती थी कि पास वाले कमरेमें क्या हो रहा है, और एक दूसरे कमरेमें रखी हुई घड़ीसे समय बताती थी।

(२) इस अवस्थामें वह अपने आपको क्वेकर सम्प्रदायका अनुयायी समझती थी और एक ऐसे अनुयायीकी तरह ही काम भी करती थी। उसने एक मनोरंजक भाषण भी दिया।

(३) कई हालतोंमें वह अपने आपको कुछ ऐसे मनुष्य समझती थी जो बहुत समय पहले मर चुके थे। उन्हीं मनुष्योंकी तरह सब काम भी करती थी। एक हालतमें वह अपने आपको इङ्गलैण्डकी रानी ऐन (Queen Anne) समझती थी।

(४) इस हालतमें वह कविता किया करती थी। उसे कभी चित्र-कला नहीं सिखाई गई थी और न ही उसने इसमें कभी रुचि प्रकट की थी परन्तु एक हालतमें वह चित्र भी बना सकती थी।

(५) इस हालतमें वह आंखें बन्द करके देख और पढ़ सकती थी। ऐसी ही एक और हालतमें डाक्टरने कमरेमें अन्धेरा कर दिया और उससे कहा कि—अपना सूईका काम शुरू करो। वह इस बात पर ध्यान देती न मालूम होती थी कि कमरेमें अन्धेरा है। डाक्टर लिखता है कि उसने एक बहुत बारीक सूईमें इतनी आसानीसे धागा पिरो लिया जितनी आसानीसे मैं एक अँगूठीमेंसे धागा गुजार लेता। इसके बाद वह आंखें बन्द करके सुईका काम करने लगी। एक बार १८ महीनों तक ऐसी हालत रही कि वह आंखें बन्द करके उलटी किताब पढ़ा करती थी और समझती थी कि मुझे पेशानी और सिरकी चोटीमेंसे दिखाई देता है।

(६) इस हालतमें उसने अपने सिरको झुका कर घुटनों पर रख दिया। फिर एक दम सिरके बल खड़ी हो गई। फिर दांए हाथ और बांए पांवके दांए हिस्सेके बल इस तरह खड़ी हो गई कि उसका शरीर एक मेहराब (Arch) बनाता था, आध घंटे तक वह इसी हालतमें खड़ी रही। इसके बाद नीचे लेट गई और कुछ बोलने लगी। उसने एक पेन्सिल पकड़ कर लिख दिया कि—मुझे अमुक दवाईका इन्जैक्शन दिया जाए। इसके देनेसे उसे नींद आ गई और वह कई घण्टों तक सोई रही।

(७) कई हालतोंमें वह अपने आपको कुत्ता समझती थी और कुत्तेके ही काम करती थी। भौंकती थी और चीखती थी, इससे बाज़ारके कुत्ते भी भौंकने लगते थे। उनकी आवाजको सुन कर खुश होती थी और उनकी नक्ल करती थी। कुत्तेकी तरह पानी चाटती थी। कई बार पानीसे पीछे हट जाती थी और चीख़ती तथा दांत पीसती थी। मुंहसे झाग निकालती और काटनेका प्रयत्न करती थी। ऐसी चेष्टाएं करती थी मानो उसे हाइड्रोफ़ोबिया (Hydrophobia--जलसे डरना) की बीमारी हो।

(८) इस हालतमें वह अपने शरीरको गेन्दकी तरह गोल अर्थात् टांगोंको इकट्ठा करके और सिरको उनमें डालकर लुढ़कती थी।

(९) यह हालत उस प्रकारकी थी कि वह सो रही होती थी, पर उसका दाहिना हाथ लिखता रहता था। इस तरह वह कई मजेदार चिट्ठियां लिखती, पद्य बनाती और तसवीरें खींचती थी। 'हेस्टी पुडिंग' (Hasty Pudding by Barlone) नामक एक पुस्तक उसने कभी नहीं पढ़ी थी परन्तु इसके कई अध्याय उसने ठीक ठीक लिख

डाले। उसे लातीनी और फ्रांसीसी भाषाएँ नहीं आती थीं, लेकिन इस हालतमें उसने चौबीस पंक्तियोंकी एक कविता लिखी जो लातीनी और अंग्रेजी मिली-जुली भाषामें थीं। प्रत्येक पंक्ति लातीनीमें आरम्भ होकर अंग्रेजीमें समाप्त होती थी।

(१०) इस हालतमें सोते-जागते उसका दाहिना हाथ लिखता था। जागते हुए दाहिना हाथतो लिख रहा होता था और बाएं हाथसे वह और काम काजमें लगी होती थी। उससे पूछा जाता कि—तुम क्या लिख रही हो? तो वह कहती कि—मुझे मालूम नहीं। उसके हाथने दो बार फ्रांसीसी भाषामें कुछ लिखा।

यदि आत्मा और उसका विविध जन्मोंमें घूमना तथा उन जन्मोंके संस्कार मान लिए जांए तो ये सब हालतें स्वाभाविक प्रतीत होने लगेंगी और इनका कारण अच्छी तरह समझमें आजाएगा। अन्यथा ये एक ऐसी पहेली है जिनका हल सम्भव नहीं। यह बात ध्यान देने योग्य है कि कई हालतोंमें वह लड़की अपने आपको कुत्ता समझती थी और वैसाही आचरण भी करती थी। एक और हालतमें शरीरको गोल करके लुढ़कती थी जैसे कोई कांटोंवाला जङ्गली (Hedge-hog) या इसी प्रकारका और जानवर लुढ़कता है।

(4) आजकल मनोविज्ञानके अन्वेषणसे मालूम हुआ है कि कई लोगोंको अकारणही डर लगने लगता है। उदाहरणके लिए कई लोगोंको आगसे, कइयोंको पानीसे अथवा घण्टेकी आवाज़से और कइयोंको कुत्तेसे बेहद डर लगता है (Phobias)। इनकी अपनी बुद्धि और दिमाग़ इन लोगोंको कहते हैं कि इन चीज़ोंसे इस प्रकार डरना अनु-

चित है लेकिन येलोग विवश होते हैं और इस डरको छोड़नेका प्रयत्न करनेपर भी डरतेही रहते हैं। आजकल इस डरकी व्याख्या इस प्रकार कीजाती है कि बहुत छोटी आयुमें इन चीज़ोंसे डर पैदा हुआ था जो अब दबकर उपचेतनामें चला गया है। अर्थात् ऐसे अनुचित डरका कारण पूर्वानुभव समझा जाता है। लेकिन कई हालतोंमें खोज करनेपर भी वर्त्तमान जन्मका कोई पूर्वानुभव नहीं मिल सकता जो इस प्रकारके डरका यथार्थ कारण होसके। ऐसी हालतमें यदि पूर्वजन्मोंके अनुभवको भी दृष्टिमें रख लिया जावेतो एक अत्यन्त विस्तृत और नाना प्रकारका पूर्वानुभव होगा जिसकी सहायतासे हम इस प्रकारकी घटनाओंकी व्याख्या कर सकेंगे। आग या पानीसे डरनेका कारण यह हो सकता है कि कोई मनुष्य किसी पूर्वजन्ममें डूब या जल गया हो, और इस भयङ्कर घटनाकी स्मृति संस्कारमें परिणत होकर अब 'अकारण भय' उत्पन्न कर रहीहो। कई लोगोंको खाली जगहसे अकारण डर लगता है (Agoraphobia)। ये लोग अकेले किसी मैदान या खाली जगहमें से नहीं गुज़र सकते। यदि बाज़ारमेंसे गुज़रना पड़ेतो खुली सड़कसे नहीं गुज़रेंगे बल्कि मकानोंके साथ-साथ उन्हें छूते हुए जायंगे। यदि मकानोंकी पङ्क्तिमें कहीं व्यवधान हो तो किसी बग्घीके पीछे या किसी जाते हुए आदमीके साथ होलेंगे। यदि किसी हालतमें खाली जगह से गुज़रनाही पड़ेतो उन्हें बहुत डर मालूम होता है। ये कांपने लगते हैं, इनके घुटने झुकजाते हैं और ये कभी-कभी बेहोश भी हो जाते हैं।

अब प्रश्न यह है कि इस प्रकारके डरका कारण क्या है? वर्त्तमान जन्मका, कौनसा पूर्वानुभव इसकी व्याख्या करसकता है? शायद

मनुष्यजन्मके पूर्वानुभवमें इसका कारण मिलना कठिनहो, लेकिन पशुओंके अनुभवमें यथार्थ कारण मिल सकता है। बिल्ली, खरगोश आदिमें इस प्रकारका डर पाया जाता है। खरगोश एक झाड़ीसे निकलकर बेखुद होकर सरपट दौड़ता है और जब तक दूसरी झाड़ी आदि तक पहुंचन जाए ठहरता नहीं। बिल्ली मकानोंके साथ-साथ चलती और खुली जगहसे बचती हैं अथवा उसे भागकर पार करती है। यदि मान लिया जाए कि किसी मनुष्यमें इस प्रकारका डर बिल्ली खरगोश या किसी और ऐसेही जानवरके जन्मका संस्कार है जिसमेंसे उसकी आत्मा गुज़र चुकी है तो इस डरका एक युक्ति-युक्त कारण मिल जाता है। यदि पूछा जाएकि बिल्ली खरगोश आदिमें यह डर क्यों होता है तो आवागमनको मानकर जवाब बहुत आसान है। इन जानवरोंको पहले ऐसे जन्मोंका भी अनुभव होचुका है जिनमें इन्हें खाली जगह या मैदानमें कई बार शिकारी जानवरोंके मुंहमें जाना पड़ा था।

आवागमनपर एक आक्षेप यह किया जासकता है कि यदि एकही प्रकारकी आत्माएं मनुष्यों और पशुओंमें जन्म लेती रहती हैं, तो पशु और मनुष्य बिल्कुल एक जैसे होने चाहियें। लेकिन हम देखते हैंकि यद्यपि मनुष्यों और पशुओंके गुणोंमें सादृश्य हैं, तो भी बुद्धि और सूक्ष्म भावनाओंकी दृष्टिसे मनुष्य पशुओंसे कहीं बढ़कर है। अच्छेसे अच्छे मनुष्यकी तर्कशक्ति या न्यायका भाव अच्छेसे-अच्छे जानवरकी अपेक्षा बहुत ऊँचा होता है। इसी तरह मध्यम श्रेणीका मनुष्य मध्यम श्रेणीके पशुकी अपेक्षा इन बातोंमें बहुत ऊँचा होता है। प्रश्न उत्पन्न होता है कि यदि मनुष्य और पशुकी आत्मा एक जैसी है

तो यह अन्तर क्यों है ? आवागमनका सिद्धान्त इसका यह उत्तर देता है कि आत्मा किसी जन्ममें अपने पूर्वजन्मके कर्मोंके अनुसार जाती है। जानवरोंमें उन्हीं मनुष्योंकी आत्माएं जाती हैं जिनके कर्म अत्यन्त निकृष्ट होते हैं, जिन्होंने कुछभी प्राप्त नहीं किया होता और इस कारण जिनकी उच्च शक्तियां कुण्ठित होजाती हैं । इसके विपरीत जिनके कर्म अच्छे होते हैं और इसलिये जिनकी शक्तियांभी अकुण्ठित होती हैं, वे आत्माएं फिर मनुष्य शरीरमें जन्म लेती हैं। जानवरोंके शरीरमें आत्मा को उच्चशक्तियां प्राप्त करनेका अवसर नहीं होता । पहले प्राप्तकी हुई शक्तियोंका आविर्भाव तो हो सकता है परन्तु इन शक्तियोंमें और वृद्धि नहीं होसकती। यदि हम आवागमनके पारिभाषिक शब्द प्रयुक्त करें तो पशुशरीर भोगयोनि है और मनुष्यशरीर कर्मयोनि । अर्थात् पशु मनुष्य शरीरमें किए हुए कर्मोंकाही भोग करते हैं । वे ऐसे नये कर्म नहीं करते जिनका फिर कभी फल भोगना पड़े ।

प्रश्न होसकता है कि पशु-शरीरमें किये हुए कर्मोंका फल आत्माको, क्यों नहीं मिलता । उत्तर यह है कि मनुष्य शरीरमें किये हुए कर्मोंके दण्डका बोझ अधिक होनेसे पशु बहुत हदतक बेबस होते हैं । उदाहरणके लिये उनमें बोलनेकी शक्ति न होनेसे वे बहुत उच्च कोटिका विचार नहीं कर सकते, क्योंकि ऐसा विचार शब्दों द्वारा होता है । उच्च सामाजिक जीवन, दूसरोंके अनुभवसे लाभ उठाना अनुभवको संचित करते जाना जिससे शताब्दियोंमें ज्ञानका एक भण्डार बन जाए इत्यादि बातें पशुओंमें नहीं होसकतीं क्योंकि ये भाषापर आश्रित हैं । ऐसी हालतमें पशु परिस्थितियोंको समझकर उनके अनुकूल काम करनेमें

अशक्त हैं,। इसलिये कर्म करनेमें स्वतन्त्र नहीं हैं अतः न्यायानुसार उन्हें अपने कर्मोंका अच्छा अथवा बुरा फल नहीं मिलना चाहिए, जैसे मनुष्य छोटे बच्चेको उसकी कमज़ोरीके कारण उसके कार्योंके लिए उत्तरदायी नहीं मानता।

एक और सवाल यह किया जा सकता है कि जानवरोंको मालूमही नहीं होता कि हमें कौनसे कर्मोंका दण्ड मिल रहा है, फिर ऐसा दण्ड सुधारनेका काम तो नहीं कर सकता; हां, केवल बदला लेनेके लिए हो सकता है, लेकिन ऐसा बदला लेना तो कोई अच्छी बात नहीं। इसका जवाब यह है कि दावेके साथ तो कहा ही नहीं जा सकता कि जानवरोंको वस्तुतः मालूम नहीं कि उन्हें अपने किन पापोंका दण्ड मिल रहा है। मालूम है या नहीं, इसका कुछ निर्णय नहीं किया जा सकता। यदि मान भी लिया जाय कि नहीं मालूम, तब भी इस प्रकारका दण्ड लाभकर है। कल्पना कीजिये कि किसीको मांस खानेका बहुत शौक है, इसलिये वह किसी माँस भक्षक पशुके शरीर में जन्म लेता है जिससे उसे दिनरात मांस ही खाना पड़ता है। उसकी तबिअत जरूर भर जायगी, बल्कि उस चीज़से घृणा पैदा होने लगेगी, जैसे हम मनुष्योंमें देखते हैं कि बड़ी उमर में उन चीज़ोंका शौक़ नहीं रहता जिनका जवानी में होता है। इसका कारण किसी अंशमें सामर्थ्यका शिथिल हो जाना भी है, लेकिन यह भी है कि बारबार उन चीज़ों का मज़ा लेनेसे उनसे जी ऊब जाता है। इस प्रकार दण्ड उचित है, चाहे भोक्ताको मालूम हो या न हो कि यह क्यों मिला। कोई किसीको कष्ट पहुँचाता है जिससे वह स्वयं भी ऐसी अवस्था में आ जाता है जिसमें उसे कष्ट

मिले। कष्ट पानेसे उसे दुःख होगा जिसका अनिवार्य परिणाम यह होगा कि आत्मापर ऐसा संस्कार पड़ेगा कि आगे उसे कष्ट पहुंचाते हुए हिचकिचाहट होगी। अर्थात् उसमें सहानुभूतिका भाव उत्पन्नहो जायगा। एवं दण्ड उपयोगी और उचित है चाहे उसका कारण न भी मालूम हो।

सारांश यह है कि पशुओं और मनुष्योंमें आपसमें बहुत समानता है। इससे दोनों की आत्माओंका एक दूसरेके शरीरमें जाना सम्भव है। यदि इस प्रकारका आवागमन मान लिया जाए तो बहुतसी ऐसी बातों का एक ही युक्तियुक्त कारण मिल जाता है जो अन्यथा पहेली बनी रहती हैं। इसके विरुद्ध यह भी नहीं कहा जा सकता, कि यह सिद्धान्त परमात्माकी सर्वोत्कृष्ट-कृति मनुष्यका पशुओंके साथ सादृश्य दिखाकर उसकी शानको कमकर देता है,क्योंकि इस तरह यदि मनुष्यकी शान कम होती हो तबतो विकासवादसे जो इस आक्षेप को करनेवाले पाश्चात्य जगत् का प्रिय सिद्धान्त है, और भी कम होजायगी। वस्तुतः आवागमन माननेसे मनुष्यकी स्थिति कम नहीं होती,हां, पशुका दर्जा अवश्यमेव बढ़ जाता है,और मनुष्य और पशुमें एक सम्बन्ध स्थिर होजाता है। इससेभी अधिक,बनस्पति,पशु और मनुष्य एक श्रृङ्खलामें बँध जाते हैं। आधुनिक पाश्चात्य दार्शनिकोंके अनुसार तो किसी सिद्धान्तकी यह बहुत बड़ी ख़ूबी है कि वह समस्त सृष्टिको एक श्रृङ्खला (Continuity) में बांध दे। विकासवादमें आजकलके वैज्ञानिकोंको एक उत्कृष्ट बात यही श्रृङ्खला नज़र आती है। हिन्दू और यूनानी दार्शनिक भी इस ख़ूबीको बहुत महत्व देते हैं। जीवन पर भी आवागमन के सिद्धान्तका उपयोगी प्रभाव

पड़ता है। हम जानवरोंसे प्रेम करनेको प्रवृत्त होते हैं और पशुयोनिमें जानेका भय हमारी पापसे रक्षा करता है। इन कारणोंके आधारपर हम बल और विश्वासपूर्वक कह सकते हैं कि आवागमन एक युक्तियुक्त और मानने योग्य सिद्धान्त है।

चौदहवां अध्याय

उपसंहार

पुनर्जन्मके पक्षमें हमने अबतक जो प्रमाण दिये हैं उन्हें थोड़ेसे स्थानमें एकत्रित करना आवश्यक है जिससे कि उनका पारस्परिक सम्बन्ध स्पष्ट हो जाए।

पुनर्जन्म एक अत्यन्त पुरातन सिद्धान्त है। प्राचीन कालकी सभ्य जातियां प्रायः इसे मानती थीं। वर्त्तमान कालमें हिन्दू लोग जिनकी संख्या लगभग बीस करोड़ है और बौद्ध लोग जो मनुष्यसंख्या का एक तिहाई हिस्सा हैं तथा बहुतसी ऐसी जातियाँ जिन्हें असभ्य कहा जाता है, इस सिद्धान्तमें विश्वास रखती हैं। योरप और अमरीकाके सभ्य लोगभी पर्याप्त संख्यामें आजकल इसे मानने लगे हैं। अमरीकामें कई सोसाइटियां स्थापित हो चुकी हैं जिनके सिद्धान्तोंमें पुनर्जन्मका एक प्रमुख स्थान है। आरम्भमें ईसाइयत भी इस सिद्धान्तका अनुगमन करती थी। यद्यपि कई सदियोंके बाद चर्चने इसे मानना बन्दकर दिया तो भी कई ईसाई गुप्तरूपसे इसे मानते रहे, और कई अबभी मानते हैं। इस तरह प्रत्येक कालके लोगोंके दिलों और दिमागोंको पसन्द आना और सान्त्वना तथा शान्ति प्रदान करके उनकी आध्यात्मिक पिपासाको तृप्त कर सकना यदि किसी सिद्धान्तके पक्षमें कोई प्रमाण है तो वह

बहुत प्रबलरूपसे पुनर्जन्म के पक्षमें भी है; क्योंकि यह न केवल एक दार्शनिक सिद्धान्त रहा है, अपितु धर्मका एक अङ्ग बनकर रहा है जो करोड़ों मनुष्योंके जीवनोंको क्रियात्मकरूपसे ढालता रहा है और ढाल रहा है।

किसी सिद्धान्तको बनाने अथवा सिद्ध करनेके लिए आधुनिक विज्ञानकी यह रीति है:—कुछ घटनाएं ऐसी हैं जिनका कोई युक्तियुक्त कारण नहीं मिलता। उनकी व्याख्याके लिये कई प्रकारकी कल्पनायें की जाती हैं। इन काल्पनिक सिद्धान्तोंमेंसे वह सिद्धान्त श्रेष्ठ समझा जाता है जिस एकके माननेसे अधिकसे अधिक संख्यामें और कई प्रकारकी घटनाओंकी व्याख्या हो सके (Induction)। फिर उस काल्पनिक सिद्धान्तको मानकर यह सोचा जाता है कि यदि यह ठीक हो तो क्रियात्मक परिणाम क्या होने चाहियें, इसके अनुसार क्या घटनाएं होती दिखाई देनी चाहियें ? (Deduction) फिर निरीक्षण और परीक्षणसे देखा जाता है कि सचमुच वे क्रियात्मक परिणाम उत्पन्न होते हैं या नहीं, वे घटनाएं दिखाई दे रही हैं या नहीं। यदि वे घटनाएं होती हुई मिल जाँय तो समझा जाता है कि जिस सिद्धान्तकी कल्पना की गई थी वह प्रमाणित हो गया (Verification) और वह यथार्थ है। एक दृष्टान्तसे यह रीति बिल्कुल स्पष्ट हो जाएगी। न्यूटन अपने बाग़में बैठा हुआ था कि उसने एक सेबको वृक्षसे ज़मीनपर गिरते देखा। उसके दिलमें सवाल पैदा हुआ कि सेबके नीचे गिरनेका कारण क्या है ? उसने सोचा कि सम्भव है भार वस्तुओंका एक गुण हो और उसके कारण वस्तुएँ नीचे गिर जाती हों यह भी सम्भव है कि वस्तुएं

एक दूसरे को खींचती हों इसलिए बड़ी वस्तु ज़मीन, छोटी वस्तुओंको अपनी तरफ़ खींच लेती हो। यह द्वितीय कल्पना अधिक अच्छी समझी गई, क्योंकि यदि यह ठीक हो तो न केवल वस्तुओंके ज़मीनपर गिरनेकी व्याख्या हो सकती है बल्कि अन्य कई प्रकारकी घटनाओंकी भी, जैसे नक्षत्र आदियोंका निश्चित मार्गपर चलना। फिर उसने सोचा कि यदि यह कल्पना सत्य है तो सूर्य, पृथिवी, चन्द्र, नक्षत्र आदिकाभी परस्पर आकर्षण होनाचाहिए और उन्हें विशेष गतियोंसे घूमते हुए विशेष समयोंमें निश्चित स्थानोंपर होना चाहिये। फिर उसने देखने का प्रयत्न किया कि सचमुच ऐसा होता है या नहीं। जब निरीक्षणसे उसकी भविष्यवाणीकी पुष्टि होगई तो उसने समझा कि यह कल्पना सत्य है कि प्राकृतिक वस्तुएं एक दूसरेको विशेष नियमोंके अनुसार खींचती हैं। जितनी अधिक घटनाओंकी जितनी अधिक व्याख्या इस कल्पनासे होती गई और इसके आधारपर की हुई भविष्यवाणियां जितनी अधिक सत्य सिद्ध होती गई,उतनीही यह कल्पना एक सिद्धान्तके रूपमें स्वीकृत होती गई।

विज्ञानकी इस रीतिसे हमने पुनर्जन्म के सिद्धान्तको सिद्ध करनेका प्रयत्न किया है। कई प्रकारकी घटनायें हैं जिनके सम्बन्धमें बुद्धिका यह अनुरोध है कि उनका कोई युक्तियुक्त कारण होना चाहिये। पुनर्जन्मको मान लेनेसे उनका अत्यन्त युक्तियुक्त कारण मिल जाता है और वह एकही पर्याप्त है। परन्तु और किसी तरह उन घटनाओंका यथार्थ कारण नहीं मिलता या कम से-कम उन सबका एकही स्वतः पर्याप्त यथार्थ कारण नहीं मिलता। इसलिये पुनर्जन्मका सिद्धान्त सर्व श्रेष्ठ है। यदि

इसे सत्य मान लिया जाए तो बुद्धिका अनुरोध है कि विशेष परिणाम उत्पन्न होते दिखाई देने चाहियें और विशेष प्रकारकी घटनायें संसारमें उपलब्ध होनी चाहियें। अनुभव और निरीक्षण बताता है कि ये भविष्य-वाणियां हर हालतमें ठीक निकलती हैं। इसलिये पुनर्जन्मका सिद्धान्त सत्य माना जाना चाहिये।

संसारमें कई असाधारण योग्यताके लोग उत्पन्न होते हैं। वे बिना सीखे जन्मसे ही आश्चर्यजनक योग्यताका प्रदर्शन करते हैं। कई लोगों को इस जन्ममें पहली बार ही एक दूसरेको देखनेसे प्रेम या घृणा हो जाती है। संसारमें सुख, दुःख, 'सौभाग्य, दौर्भाग्य आदिकी विषमता दिखाई देती है। इनका इस जन्मकी घटनाओंमें कोई यथार्थ कारण नहीं मिलता। बच्चे पैदा होते ही और बहुत छोटी उमरमें अपनी अपनी प्रवृत्तियोंकी और स्वभावादि की विशेषतायें दिखाने लगते हैं जिनका कारण न इस जन्मका अनुभव हो सकता है और न मां बापके संस्कार। पुनर्जन्म इन सब बातोंके लिये एकही यथार्थ कारण हो सकता है। यदि पुनर्जन्मका सिद्धान्त ठीक है तो पूर्वजन्मों की स्मृति या किसी और प्रकारके असर इस जन्ममें भी होने चाहियें। निरीक्षणसे पता लगता है कि कई लोगोंको पूर्वजन्मों की स्मृति होती है, जैसे पाइथेगोरसको। कई लोग इस जन्ममें वस्तुओं की पहली बार देखकर उन्हें इस प्रकार पहिचान लेते हैं मानों उनसे पहले अच्छी तरह परिचित हों (The Already Seen)। कई लोग हिप्नाटिज़्म, सौम्नैम्बूलिज़्म आदि असाधारण अवस्थाओंमें उन विद्याओं और कलाओंसे परिचित होते हैं जो उन्होंने अपने इस जन्ममें कभी नहीं सीखीं। कई लोगोंको

कुछ विषयोंमें आरम्भसे ही शौक़ होता है, जिससे वे उन्हें ऐसी आसानीसे सीख जाते हैं, मानों किसी पढ़ी हुई चीज़ को दुहरा रहे हों। ऐसी कई तरहकी बातें पूर्वजन्मोंकी स्मृति और संस्कारोंके प्रमाण रूपमें इस जन्ममें विद्यमान होती हैं। इस प्रकार पुनर्जन्मका सिद्धान्त प्रामाणिक हो जाता है और विज्ञानकी अनुसन्धानरीतिके अनुसार सत्य सिद्ध होता है।

पुनर्जन्मपर जो आक्षेपकिये जाते हैं उनके भी सन्तोषजनक उत्तर दिये जा सकते हैं:—

एक आक्षेप यह किया जाताहै कि पुनर्जन्मको सिद्ध करनेके लिए आत्माका अस्तित्व प्रमाणित करना आवश्यक है। इसके उत्तरमें हमने दिखानेका प्रयत्न किया है कि जीवन,विचारप्रवाह, इच्छाशक्ति (Will) और मनुष्यकी असाधारण शक्तियाँ जैसे सैंकड़ों मीलोंकी दूरीसे देख लेना, सुनलेना या किसीके मनकी अवस्थाको जान लेना। (Clairvoyance, Clairaudience, Telepathy) आदि, एक अप्राकृतिक सत्ता अर्थात् आत्माको सिद्ध करती हैं। केवल शरीर इन चीज़ोंकी व्याख्या नहीं कर सकता। आत्माको अवयवनिर्मित नहीं माना जासकता क्योंकि यदि इसके अवयव हों तो इन अवयवोंके ज्ञानको मिलाकर इकट्ठा करने वाली कोई चीज़ नहीं रहेगी। आत्माको अमर मानना पड़ेगा क्योंकि निरवयव वस्तुका उत्पादन और नाश नहीं देखा जाता। आत्माको आदि माननेसे इसका कर्मस्वातन्त्र्य और उत्तरदायित्व नहीं माना जा सकता। इसे सान्त मानना मनुष्यकी सार्वजनिक इच्छाके विरूद्ध है और दर्शनके इस नियम के प्रतिकूल है कि भावका अभाव और अभावका भाव नहीं होता।

एक और बड़ा आक्षेप यह किया जाता है कि यदि इस जन्मसे पहले भी मनुष्यके जन्म थे तो उनकी स्मृति क्यों नहीं रहती ? इसके उत्तरमें दिखानेका प्रयत्न किया गया है कि कई हालतोंमें स्मृति होती है, और कई हालतोंमें स्मृति छिपी हुई होती है, जो सॉम्नैम्बुलिज़म आदि विशेष अवस्थाओंमें प्रगट हो जाती है, जैसे इस जन्मकी बहुतसी घटनाओं की स्मृति छिपी हुई होती हैं और हिप्नॉटिज़म आदि असाधारण अवस्थाओंमें प्रगट हो जाती है, या जिसे मानसिक विश्लेषण (Psycho-analysis) के ज्ञाता विशेष उपायोंसे प्रगट करानेका प्रयत्न करते हैं। इस जन्मकी बहुतसी घटनाओंकी स्मृति संस्कारोंमें परिणत हो चुकी होती है, इसी तरह पूर्व जन्मोंकी और भी अधिक घटनाओंकी स्मृति संस्कारोंमें परिणत हो चुकी होनी चाहिये । पूर्वजन्मके संस्कारोंके अनेक प्रमाण मिलते हैं। जैसे जन्मागत आचार स्वभाव प्रकृति इत्यादि । पूर्व जन्म की स्मृतिका संस्कारोंमें परिणत हो जाना उपयोगी है, क्योंकि स्मृतिमें घटनाएं यदि बिल्कुल वैसी की वैसी रहतीं तो स्मृतिपर एक अनुचित बोझ होता, इसके अतिरिक्त असफलताओंकी यादसे हमारा उत्साह भङ्ग होता और अपने पुराने पापोंके स्मरणसे हम शर्मके बोझके नीचे दब जाते और उन्नति करना सर्वथा असम्भव हो जाता ।

एक और आक्षेप यह किया जाता है कि जब हमें पूर्वजन्म यादही नहीं तो फिर उनके कर्मोंका फल नहीं मिलना चाहिये। इसके उत्तरमें हमने यह दिखानेका प्रयत्न किया है कि इस सिद्धान्तको हम इस जन्मके कर्मोंपर तो लगाते नहीं, फिर पूर्वजन्मके कर्मोंपर क्यों लगाएं इस जन्ममें [illegible]ने बेपरवाही से अपने स्वास्थ्यको बरबाद करलिया है क्या उसे एक

एक करके वे सब बातें याद हैं जिनसे उसने अपना स्वास्थ्य बिगाड़ा ? यदि नहीं तो भूल जानेके कारण क्या उन क्रियाओंके परिणामस्वरूप दण्ड नहीं मिलना चाहिये ? अर्थात् क्या उसे अस्वस्थ और दुर्बल नहीं होना चाहिये ? यदि होना चाहिये तो पूर्वजन्मके विस्मृत कर्मोंका दण्ड क्यों न मिलना चाहिये ? इसके अलावा दण्ड लाभकर होता है। इससे वे बुरी इच्छाएं निकल जाती हैं जिनके कारण पाप किए गए थे, जैसे राज माईडस (Maidas) को सुवर्णही सुवर्ण और सुवर्णके सिवा कुछ न मिलनेसे उसकी सुवर्णकी लालसा जाती रही थी। इसी तरह हमने पुनर्जन्मपर होने वाले और बहुतसे आक्षेपोंका समाधान करनेकी कोशिश की है ।

किसी सिद्धान्तको माननेसे यदि जीवनपर उपयोगी असर पड़ता है तो वह मानने योग्य होता है। आजकलके कई दार्शनिक इसी कसौटी से किसी सिद्धान्तके सत्यासत्यका निर्धारण करते हैं। इस कसौटीसे परखनेपर भी पुनर्जन्म एक उच्चकोटिका सिद्धान्त प्रतीत होता है। यह हमें सांत्वना और तसल्ली देता है कि हमारे प्रयत्न और परिश्रमका फल थोड़ी देर बाद शरीरके साथ ही नष्ट नहीं हो जायगा और हम एक जन्म में नहीं तो कई जन्मोंमें पूर्णता प्राप्त करलेंगे, इसलिए निराश होकर प्रयत्न छोड़नेकी आवश्यकता नहीं, हमारी बहुतसी इच्छाएं होती हैं जो एक दूसरेके प्रतिकूल होनेसे इकट्ठी इस जन्ममें पूरी नहीं हो सकतीं, लेकिन पुनर्जन्म हमें विश्वास दिलाता है कि क्रमशः कई जन्मोंमें वे सब इच्छाएं पूरी हो सकती हैं। अपनी ग़लतियों और कमज़ोरियोंके कारण हम चाहते हैं कि जीवनको नए सिरे से शुरू किया जाय। पुनर्जन्मका

सिद्धान्त हमें तसल्ली देता है कि हम कई बार नए सिरेसे अपना जीवन आरम्भ कर सकते हैं। पुण्यके बदले दुःख और पापके बदले सुख मिलता देखकर पापसे हमारी घृणा शिथिल हो जाती है। पुनर्जन्म पुण्य के प्रति प्रेम और पापसे घृणा यह कहकर बनाये रखता है कि अगले जन्मोंमें हिसाब ठीक होजायगा। पुण्य और पाप अपने-अपने उचित परिणामको प्राप्त होंगे। एक छोटेसे जीवनके कर्मोंका अनन्त फल (स्वर्ग या नरक) मिलना न्यायके विरूद्ध है। पुनर्जन्मके आधारपर हम आशा कर सकते हैं कि हमारे प्रेम और सौहार्द इस जन्मके बाद भी स्थिर रहेंगे। इस प्रकार कई रीतियोंसे जिनका हम पहले विस्तारसे वर्णन कर चुके हैं, पुनर्जन्मके सिद्धान्तमें विश्वास, जीवनके लिए अत्यधिक उपयोगी है और इसलिये यह सिद्धान्त मानने योग्य है।

पुनर्जन्मके पक्षमें एक और प्रमाण यह है कि इसे मान लेनेसे कई दार्शनिक विषयोंपर बहुत अच्छा प्रकाश पड़ता है।

(१) मनुष्य कर्म करनेमें स्वतन्त्र है या परतन्त्र, यह एक पुराना विवादास्पद विषय है जिसपर अन्तिम निर्णय अभी तक नहीं होसका। पुनर्जन्मको मान लेनेसे स्वतन्त्रता और परतन्त्रता परस्पर प्रतिकूल नहीं रहतीं। मनुष्य स्वतन्त्र भी है और परतन्त्र भी, और परतन्त्रता स्वतन्त्रता का अनिवार्य परिणाम है। इस जन्ममें परतन्त्रता या मजबूरी जन्मागत आचार और परिस्थितियोंकी है, लेकिन पुनर्जन्मके अनुसार येदोनों पूर्वजन्मके स्वतन्त्रतासे किए हुए कर्मोंका अनिवार्य परिणाम हैं। इस तरह मनुष्य स्वतन्त्र है परन्तु उसके स्वतन्त्र कर्मोंसेही एक आचार या स्वभाव बनता है जो संस्कारोंके रूपमें जन्मसेही उसे प्राप्त

होता है। इसके अतिरिक्त इस जन्मकी परिस्थितियां पूर्वजन्मके स्वतन्त्र कर्मोंका अच्छा या बुरा फल हैं। एवं स्वतन्त्रतासेही एक प्रकारकी परतन्त्रता पैदा होजाती है, लेकिन चूंकि आत्मा स्वभावतः स्वतन्त्र है, इसलिये परतन्त्रताके होते हुए भी मनुष्य की स्वतन्त्रताका एक क्षेत्र है। अतः वर्तमान जन्ममें मनुष्य स्वतन्त्रभी है और परतन्त्र भी। कुछ बातोंमें स्वतन्त्र है और कुछमें परतन्त्र। उदाहरणके लिये एक आदमी अस्वस्थ होगया है, होसकता है कि यह इस जन्मके स्वतन्त्र कर्मोंकाही परिणाम हो, लेकिन यह भी सम्भव है कि इस जन्ममें पर्याप्त सावधान रहते हुए भी यह अवस्था आगई हो। यहां तकतो वह परतन्त्र है पर अस्वस्थता दूर करनेका प्रयत्न करनेमें किसी हदतक स्वतन्त्र है

(२)आधुनिक मनोविज्ञान'उपचेतना'की सत्ताको स्वीकार करता है। इसकी बहुतसी अद्भुत शक्तियां हैं और इनके कारण विचित्र घटनाएं देखनेमें आती हैं, जैसे एकही मनुष्यमें बारी-बारीसे दो या इससे अधिक कई व्यक्तित्वोंका प्रगट होना (Multiple Personality), दूर-दूर की बातोंका विना किसी भौतिक साधनके प्रत्यक्ष करलेना इत्यादि। मनोविज्ञान उपचेतनाको मानता हुआभी इन शक्तियोंका कोई यथार्थ कारण नहीं बता सकता। लेकिन आत्मा और पुनर्जन्मको माननेसे बहुत युक्तियुक्त कारण मिल जाता है। आत्मा अप्राकृतिक सत्ता है, इसलिए दूरी उसके लिये कोई बाधा नहीं उपस्थित कर सकती। जब तक आत्मा शरीर द्वारा काम करती है तभी तक दूरी बाधक होती है लेकिन जब विशेष अवस्थाओंमें (कुछ ऐसी अवस्थाओंमें जिनमें उपचेतना प्रकट होती है) आत्मा कुछ समयके लिए शरीरसे स्वतन्त्र भी काम करती है,

तब दूरी बाधक नहीं रहती, और दूरकी चीज़ें भी वैसीही नज़र आती हैं जैसी पासकी। इसी तरह एकसे अधिक व्यक्तित्व भिन्न-भिन जन्मोंमें आत्माके घूमनेका परिणाम होसकते हैं। एक या अधिक जन्मोंकी याद स्मृतिकी गहराइयोंमें अर्थात् उपचेतनामें छिपी हुई हो सकती है, जो किसी विशेष अवसर पर प्रगट होती है। किसी पूर्वजन्मकी स्मृतिकी अवस्था एक असाधारण व्यक्तित्व है जैसे इस जन्मकी स्मृति की अवस्था प्रतिदिनका साधारण व्यक्तित्व है।

इसी प्रकारके प्रमाण इस बातके पक्षमें भी दिये जासकते हैं कि पुनर्जन्मके चक्करमें आत्मा जानवरोंके शरीरमें भी जाती है। इस सिद्धा-न्तको आवागमनका नाम दिया जासकता है। कई प्रकारकी घटनाएं हैं जिनका कोई यथार्थ कारण होना चाहिये, जैसे जानवरोंमें सहजात क्रियाएं (Instincts) होती हैं, कुछ लोगोंमें अनेक व्यक्तित्व प्रगट होते हैं जिनमेंसे कइयोंमें वे अपने आपको जानवर बताते हैं इत्यादि। यदि आवागमनके सिद्धान्तको मान लिया जाय तो इन सब प्रकारकी घटनाओंका एकही युक्तियुक्त कारण मिल जाता है। उदाहरणार्थ इसके अनुसार जानवरोंकी सहजात क्रियाएं पूर्वजन्मोंकी अच्छी तरह सीखी हुई क्रियाएं हैं, और अपने आपको जानवर बताने वाले असाधारण व्यक्तित्व उन जन्मोंकी स्मृति हैं जिनमें आत्मा जानवरोंके शरीरमें थी। यदि आवागमन सत्य है तो मनुष्यों और जानवरोंमें ऐसा मौलिक सादृश्य होना चाहिए जिससे उनकी आत्माएं एक दूसरेके शरीरमें जासकें वस्तुस्थिति इस बातका समर्थन करती है कि ऐसा सादृश्य विद्यमान है। ज्ञानेन्द्रियों, और उनकी शक्तियों और कामनाओंमें, विश्वासपात्रता

कृतज्ञता आदि सूक्ष्म भावनाओंमें, तथा बुद्धिमें (जैसा घोंड़ों आदिपर परीक्षणोंसे सिद्ध हुआ है) जानवर और मनुष्य बहुत कुछ एक जैसे हैं। इससे दोनोंकी आत्माओंका एक दूसरेके शरीरमें जाना सम्भव है। इस प्रकार विज्ञानकी विधिसे इस सिद्धान्तकी पुष्टि (Verification) की जासकती है।

आवागमनके मान लेनेसे कई और बातोंपर भी प्रकाश पड़ता है, जैसे यह कि जानवरोंपर दया क्यों करनी चाहिये। जीवनपर इस सिद्धान्त का कई तरहसे उपयोगी प्रभाव पड़ता है जैसे यह ख़याल कि पाप करनेसे मनुष्य पशु भी बन सकता है, पापसे बचनेके लिये एक प्रबल प्रेरणा है।

संसारकी कई सभ्य जातियाँ और धर्म प्रत्येक युगमें आवागमनको मानते रहे हैं, जैसे पुराने मिस्रके लोग, हिन्दू, बौद्ध और जैन धर्मके अनुयायी; और न केवल जनसाधारण बल्कि उच्चकोटिके विद्वान् लोगभी प्रत्येक युगमें इसे स्वीकार करते रहे हैं। उदाहरण के लिये प्राचीन कालमें अफ़लातून और वर्त्तमान कालमें फ़िग्यर (Figuier) और फ़्लैमेरियन जैसे वैज्ञानिक। इससे स्पष्ट है कि आवागमनका सिद्धान्त बहुतसे लोगोंके दिल और दिमाग़को पसन्द आने वाला तथा उनकी आध्यात्मिक आकाँक्षाओं के अनुकूल है।

उपर्युक्त रीतिसे हमने इस पुस्तकमें यह सिद्ध करनेका प्रयत्न किया है कि पुनर्जन्म या आवागमन दर्शनका एक मान्य और उपयोगी सिद्धान्त है। पुनर्जन्म हमें बताता है कि मनुष्य वस्तुतः आत्मा है। आत्माका वर्त्तमान जन्मके साथ आरम्भ नहीं होता और न इसके साथ

आत्माका अन्तही होता है। इस जन्मसे पहले आत्मा असङ्ख्यात जन्मों- में से गुज़र चुकी है और इसके बाद बहुतसे जन्मोंमेंसे गुज़रेगी और गुज़रती रहेगी, जब तक कि यह क्रमशः उन्नति द्वारा पूर्णता तक पहुँच कर मोक्षको न प्राप्त करले। जन्मोंके चक्करमें आत्मा न केवल मनुष्य योनि मेंजन्म लेती है परन्तु पशुयोनिमें भी जाती है। मनुष्यको प्रत्येक कर्मका फल मिलता है। कर्मफल उसी जन्ममें अथवा आगामी किसी जन्ममें मिल सकता है लेकिन मिलता अवश्य है वर्त्तमान जन्म क्या और कैसा है यह पूर्वजन्मोंके कर्मोंपर आश्रित है। इसीतरह आगामी जन्म वर्त्तमान जन्म और इससे पूर्वजन्मोंके कर्मोंका सामूहिक परिणाम होगा। किसी जन्मका सौभाग्य दौर्भाग्य, सुख दुःख जन्मागत आचार और स्वभाव मनुष्यके अपने कर्मोंका फल है। मनुष्य अपने पूर्वकर्मोंका फल- भोगता हुआ नए कर्म भी करता है जिससे आगे फलका बीज बोता है। परन्तु पशु केवल मनुष्य जन्ममें किये हुए कर्मोंका भोग करते हैं फल- योग्य नए कर्म नहीं करते। पशुजन्ममें आत्मा जब पर्याप्त रूपसे दण्डित होजाती है तो फिर अपनेअवशिष्ट कर्मोंके अनुसार मनुष्य शरीरमें प्रवेश करती है। यहां फिर वह नए कर्म कर सकती है जो उसकी आगामी उन्नति अथवा पतनका कारण बनते हैं। मनुष्य कर्म करनेमें स्वतन्त्र है परन्तु किये हुए कर्मों का फल भोगनेमें परतन्त्र है। संसारमें पूर्ण न्याय हो रहा है क्योंकि दुःख सुख आदि अपने अपने कर्मोंका फल हैं। संसारमें जो वैषम्य दिखाई देता है उसका कारण भी मनुष्योंके विविध जन्मोंमें किये हुए कर्म हैं।

INDEX